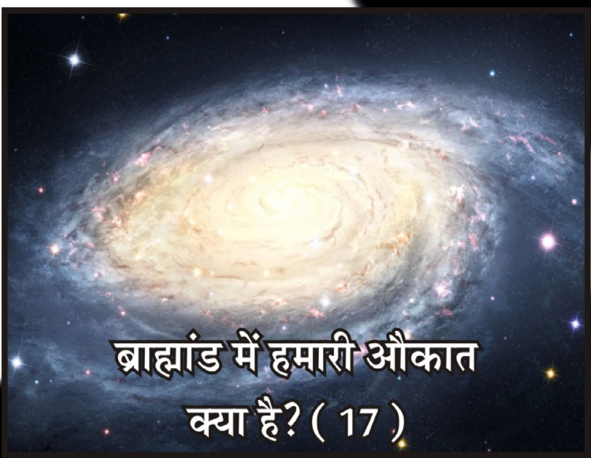
वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

जुलाई 2018


अलौकिक शक्तियां (10)


ब्राह्मांड में हमारी औकात क्या है? (17)


शराब से संबंधित भ्रामक प्रचार से बचने की जरूरत (24)


स्टीफन हॉकिंग : चला गया सितारों का खोजी (21)

ज्यादा विश्वास करने से कोई चीज असली नहीं हो जाती...जेमज रैंडी

जो सच बोलेगा, मारे जाएंगे

राजेश जोशी

जो इस पागलपन में
शामिल नहीं होंगे, मारे जाएंगे।
कठघरे में खड़े कर दिए जायेंगे
जो विरोध में बोलेगें।
जो सच सच बोलेंगे, मारे जाएंगे।

बर्दाश्त नहीं किया जाएगा कि
किसी की कमीज हो
उनकी कमीज से ज्यादा सफेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे।
मारे जाएंगे ।
धकेल दिए जाएंगे कला की दुनिया से बाहर
जो चारण नहीं होंगे।
जो गुण नहीं गाएंगे, मारे जाएंगे।

धर्म की ध्वजा उठाने जो
नहीं जाएंगे जुलूस में
गोलियां भून डालेंगी उन्हें
काफिर करार दिए जांएंगे।
सबसे बड़ा अपराध है इस समय में
निहत्थे और निरपराधी होना,
जो अपराधी नहीं होंगे, मारे जायेंगें...।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

यू-टयूब पर तर्कशील टीवी जलद आ रहा है

YouTube

http://youtu.be/8cbb3faVmwk

संकेतिका

निरीश्वरवाद और अन्य निकटवर्ती सिद्धांत-डॉ. रणजीत 4
धर्म के बाज़ारीकरण का सिलसिला-उदय प्रकाश अरोड़ा 8
अलौकिक शक्तियां-डा. हरीश मल्होत्रा ब्रमिंघम 10
खलील ज़िब्रान की लघु-कथाएं 12
स्वतंत्र चिंतन मिथ्या-विश्वास कर्नल इंगरसोल 13
इस्लाम में हराम 16
ब्रह्मांड में हमारी औकात क्या है ? शरद कोकास 17
महामना रामस्वरूप वर्मा 18
स्टीफन हॉकिंग-चला गया सितारों का खोजी.. -डॉ. अमृत 21
शराब से संबंधित भ्रामक प्रचार से बचने की जरूरत-सुमीत सिंह 24
बाबाओं के काले कारनामे 27
अंधविश्वास के चलते 28
स्वास्थ्य 30
खोज खबर 31
बच्चों का कोना 32
तर्कशील हलचल 33
केस रिपोर्ट बलवंत सिंह लैक्चरार 35
केस रिपोर्ट अजायब जलालआना 37
मानव ज्ञान का चरित्र और विकास -सनी 38
'पत्रा का कहर'-भीषमपाल सिंह यादव 41
चमत्कार से इलाज-कानूनन अपराध -संतोष शर्मा 44
राजस्थान में डायन के संदेह में 95 मामले-डॉ. दिनेश मिश्र 47
भिक्षावृत्ति : एक सामाजिक बुराई-आर.पी. गांधी 48
रागनी -रामेश्वर दास 'गुप्त' 50

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक, दिनांक **16-09-2018**, दिन रविवार को होटल सेवन-सी, यमुनानगर में प्रातः 10.30 से 2.30 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः

*लक्षमण विनायक- **70150 65108***

*सुखदेव सिंह- **98963 64428***

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

कारवां चलता रहेगा

भारत में तर्कशील आंदोलन का इतिहास बेहद पुराना है। लोकायत दर्शन में हम इसे देख सकते हैं। कालांतर में गौतम बुद्ध और महावीर ने भी इसे छुआ है। भक्ति काल के संत यद्यपि ईश्वरवाद से मुक्त नहीं थे परंतु कुरीतियों, कर्मकांडों पर प्रहार करते दिखते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यदि अवलोकन करें तो अवतारवाद के बाद एकेश्वरवाद आया और एकेश्वरवाद में भी निरंकार और साकार की बहस चलती रही। परंतु पूरे विश्व में नास्तिकता के पैरोकार सदा रहे। जिनकी संख्या आधुनिक विज्ञान युग में लगातार बढ़ रही है। प्रकृति, और ब्रह्मांड को समझने का अब एक ही मान्य नजरिया है-वैज्ञानिक दृष्टिकोण 'यानि तर्कशील नजरिया।

भारत में 'तर्कशील आंदोलन को योजनाबद्ध तरीके से चुनौतीपूर्ण प्रचार का श्रेय डा. अब्राहम थामस काव्वुर को जाता है जिन्होंने 23 शर्तो की चुनौती जारी कर अंधविश्वास फैलाने वालों को संकट में डाल दिया था। आज देश के सभी तर्कशील संगठनों का आधार यह चुनौती ही है। बाद में बी. प्रेमानंद ने इसे आगे बढ़ाया। और अब राष्ट्रीय स्तर पर डा. नरेंद्र नायक इस आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं।

देश में लगभग 80 तर्कशील संगठनों का एक सांझा मोर्चा आस्तित्व में आ चुका है। विभिन्न राज्यों में सक्रिय संगठन व बहुत सारे व्यक्ति अपने-अपने स्तर पर कार्यरत हैं। ऐसे ही एक संगठन अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति ,महाराष्ट्र के प्रभारी डॉक्टर नरेंद्र दाभोलकर अंधविश्वास फैलाने वाली शक्तियों के हाथों शहीद हो गये। फिर इसी कड़ी में तर्कशील चिंतक का.गोबिंद पानसरे, डा. कलबुर्गी व गौरी लंकेश भी निशाना बने। देश के विभिन्न भागों में कार्यरत विभिन्न तर्कशील चिंतकों को झूठे केसों में फंसाने व हमले का शिकार भी बनाया जाता रहा है।

इन ताकतों ने अब फेडरेशन अ फ इंडियन रैशनलिस्ट एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.नरेंद्र नायक को धमकियां देनी शुरू कर दी हैं जो कि चिंता का विषय है। परंतु तर्कशील आंदोलन अब जिस पड़ाव पर पहुंच चुका है, अब उसे रोका नहीं जा सकता, बल्कि आने वाले समय में यह उत्तरोतर बढता चला जा रहा है। विज्ञान के प्रचार-प्रसार से अंधविश्वास फैलाने वाली ताकतों को अन्ततः हारना ही पड़ेगा।

देश में तर्कशील आंदोलन अब बेहद मजबूत स्थिति में पहुंच चुका है। प्रचार के लिए पत्र-पत्रिकाओं, किताबों, आडियो-वीडियो का एक भरपूर खजाना इसके पास है। हिंदी, मराठी, तेलगू, तमिल, मल्यालम, बांगला, गुजराती, उड़िया आदि के साथ ही अंग्रेजी में भी विभिन्न पत्रिकाएं आज प्रकाशित हो रही हैं। पंजाबी की 'तकशील' मल्यालम की 'युक्ति रेखा' और मराठी की 'अंधश्र)ा वार्तापत्र' के साथ ही अंग्रेजी की रैशनलिस्ट वॉयस, थॉट एंड एक्शन, द मार्डन रैश्नलिस्ट आज लोकप्रिय पत्रिकाओं में शुमार हैं।

तर्कशीलता के इस 'कारवां' को अब कोई रोक नहीं सकता, चाहे कितने भी विकट तूफान इस भटकाने की कोशिश करें।

निरीश्वरवाद और अन्य निकटवर्ती सिद्धांत

-डॉ. रणजीत

निरीश्वरवाद के निकट के इन सिद्धांतों में संशयवाद, अज्ञेयतावाद, प्रकृतिवाद, भौतिकवाद, प्रत्यक्षवाद, विवेकवाद, इहलोकवाद और मानववाद मुख्य हैं।

निरीश्वरवाद और संशयवाद

संशयवाद या स्कॅपटिसिज्म उस सिद्धांत को कहा जाता है, जो आंशिक या पूर्ण रूप से मानवजाति की ज्ञान प्राप्ति की क्षमता में संदेह या संशय करता है। कुछ संशयवादियों का मत है कि तात्कालिक अनुभव से परे कोई ज्ञान संभव नहीं है, जबकि अतिशय संशयवादियों ने इसमें भी संदेह किया है कि इतना भी निश्चित रूप से जाना जा सकता है। प्राचीन युनान के अनेक दार्शनिक के अनेक दार्शनिक संशयवादी थे। सुकरात का यह कथन प्रसिद्ध है कि मैं इतना ही जानता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता। आधुनिक युग में डेविड के दर्शन में संशयवाद का चरम विकास हुआ। वे मानते थे कि धर्म, विज्ञान आदि से संबंधित हमारे सारे विश्वास बौद्धिक युक्तियों पर नहीं, हमारी नैसर्गिक मूल प्रवृत्तियों पर ही आधारित हैं। अतः इन्हें तर्कों द्वारा सत्य प्रमाणित नहीं किया जा सकता। ह्यूम के इस संशयवाद का कान्ट पर भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उन्होंने भी अनेक प्रबल तर्को द्वारा यह सिद्ध किया है कि ईश्वर के अस्तित्व संबंधी सभी परंपरागत प्रमाण अविश्सनीय हैं। संशयवाद कहता है कि हम ईश्वर के अस्तित्व और स्वरूप के संबंध में कुछ नहीं जान सकते। इसलिए उसकी सत्ता में विश्वास करने का हमारे पास तर्कपूर्ण आधार नहीं रह जाता। ऐसी स्थिति में यह कहना सर्वथा उचित है कि संशयवाद अन्ततः निरीश्वरवाद का ही मार्ग प्रशस्त करता है। निरीश्वरवाद ही उसकी आर्थिक परिणति है।

निरीश्वरवाद और अज्ञेयतावादः

अज्ञेयतावाद के समानार्थी ऑगनास्टिसिज़्म शब्द का सबसे पहला प्रयोग टी. ऑन हक्सले ने 1869 में किया था। अपने इस मत के लिए कि मनुष्य को तर्कों द्वारा निश्चित रूप से प्रमाणित विचार, मत या मान्यता को ही स्वीकार करना चाहिए, ऐसे किसी सिद्धांत का समर्थन नहीं करना चाहिए, जिसके लिए पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध न हों। पर डा. वेद प्रकाश वर्मा के अनुसार हक्सले से अलग अधिकतर दार्शनिक यह मानते हैं कि अज्ञेयतावाद यह विचार है कि हम नहीं जानते कि ईश्वर है या नहीं? मानव बुद्धि की अनिवार्य सीमाओं के कारण ईश्वर संबंधी निश्चित ज्ञान असंभव है। उदाहरण के रूप में जार्ज स्मिथ का कथन है-'ईश्वरवाद और निरीश्वरवाद ईश्वर में विश्वास की उपस्थिति या अनुपस्थिति को व्यक्त करते हैं, अज्ञेयतावाद ईश्वर अथवा अति प्राकृतिक सत्ता के विषय में ज्ञान की असंभावना को व्यक्त करता है।

पर तथ्य यह भी है कि कई वैज्ञानिकों और विचारकों ने निरीश्वरवाद या नास्तिकता से जुड़े हुए निन्दा भाव से बचने के लिए अपने-आप को सीधे नास्तिक कहने से संकोच करते हुए अज्ञेयतावादी ही माना है। चार्ल्स डार्विन और अलबर्ट आइन्स्टाइन भी उनमें शामिल हैं। प्रतिष्ठित पत्रकार और लेखक खुशवंत सिंह की तो एक पुस्तक का नाम ही है। ऑगनास्टिक खुशवंत : देअर इस नो गॉड। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इंटरनेट की 'सेलिब्रिटी ॲथीइस्ट लिस्ट' में भी अथीइस्ट्स को तीन वर्गों में बांट कर प्रस्तुत किया गया है-नास्तिक, भौतिकवादी, अज्ञेयतावादी और अस्पष्ट या एम्बीगुअस तथा इस तीसरे वर्ग के उप शीर्षक में लिखा गया है-'स्पष्ट ही ईश्वर और धर्म के प्रति संदेहशील'।

निरीश्वरवाद और प्रकृतिवाद :

एक तत्व मीमांसीय सिद्धांत के रूप में

प्रकृतिवाद वह सिद्धांत है, जिसके अनुसार इस दुनिया में ऐसी कोई सत्ता अथवा घटना नहीं हो सकती, जिसकी व्याख्या प्राकृतिक नियमों के आधार पर न की जा सके। दूसरे शब्दों में यह सिद्धांत मानता है कि सिद्धान्ततः भी किसी आलौकिक या अति-प्राकृतिक शक्ति का अस्तित्व संभव नहीं है। समस्त प्राणियों, वस्तुओं, घटनाओं और शक्तियों की व्याख्या केवल प्राकृतिक नियमों द्वारा ही की जा सकती है। स्पष्ट है कि इस सिद्धांत के समर्थक किसी अति प्राकृतिक सत्ता-ईश्वर, आत्मा या देवी-देवता-पर विश्वास नहीं करते। अतः इसे पूर्णतः निरीश्वरवादी सिद्धांत माना जा सकता है। यह भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक प्रकृतिवादी के लिए निरीश्वरवादी होना अनिवार्य है। प्राचीन भारतीय स्वभाववादी या प्रकृतिवादी दार्शनिक चार्वाक आदि तथा पाश्चात्य दार्शनिकों में डेमोक्रेटस, ल्यूक्रेशियस, ब्रेडलाफ, हॉलियोख, कार्ल मार्क्स आदि को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रकृतिवादी माना जाता है, वे सभी स्पष्ट रूप से निरीश्वरवादी हैं। इससे स्पष्ट है कि निरीश्वरवाद प्रकृतिवाद का अनिवार्य तार्किक परिणाम है।

पर जहां प्रत्येक प्रकृतवादी का निरीशवरवादी होना अनिवार्य है, प्रत्येक निरीश्वरवादी का प्रकृतिवादी होना जरूरी नहीं है। उदाहरण के लिए भारतीय दर्शन के बौद्ध, जैन, सांख्य तथा मीमांसा निरीशवरवादी हैं पर इनमें से कोई भी प्रकृतिवादी नहीं है।

निरीशवरवाद तथा प्रत्यक्षवादः

प्रत्यक्षवाद (पॉजिटिविज्म) शब्द का प्रथम प्रयोग हॅनरी कूम्ट डी सेंट साइमन ने किया था। बाद में फ्रांस के महान दार्शनिक ऑगस्ट कूम्ट ने इस शब्द का प्रयोग अपनी उस वैज्ञानिक विचारधारा को व्यक्त करने के लिए किया, जिसका विशेष प्रभाव पश्चिम के सभी देशों में उन्नीसवीं सदी से बीसवीं के पूर्वार्ध तक रहा। इस सिद्धांत में उन्हीं वस्तुओं, घटनाओं एवं तथ्यों के ज्ञान को वास्तविक माना जाता है। यह सिद्धांत मनुष्य की सांसारिक समस्याओं के समाधान में ईश्वर सहित किसी भी आलौकिक सत्ता के हस्तक्षेप अथवा उसकी प्रासंगिकता को स्वीकार नहीं करता। इसलिए यह सिद्धांत आलौकिक सत्ताओं पर अनिवार्य रूप से आधारित धर्म के, मनुष्य के सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक समस्याओं में, हस्तक्षेप का भी पूर्ण निषेध करता है। कुछ विद्वानों का मत है कि स्वयं होलियोग ने ही सेकुलरिज्म शब्द का निर्माण किया था, जिसके द्वारा वे निरीश्वरवाद को अधिक सम्मान दिलवाना चाहते थे (जैसे मार्डन स्टीन का) परन्तु इसके विपरीत कुछ अन्य विद्वानों का मत है (जैसे डेविट बरमन का) कि होलियोक ने यह शब्द आंगस्ट कूम्ट से प्राप्त किया था, किंतु उन्होंने व्यापक प्रचार द्वारा इसे विशेष रूप से लोकप्रिय बनाया। प्रो. वेद प्रकाश वर्मा होलियाक को ही इहलोकवाद के प्रवर्तक तथा प्रचारक मानते हैं। डी.एस. मार्गोलियथ के अनुसार निरीश्वरवाद शब्द का प्रयोग उस समय प्रायः उस व्यक्ति के लिए किया जाता था, जो न केवल ईश्वर को अस्वीकार करता है, अपितु नैतिकता को भी अस्वीकार करता है। इसलिए अनैतिकता के आरोप से बचने के लिए ही होलियोक ने निरीश्वरवादी की जगह अपने-आपको इहलोकवादी कहना पसंद किया।

निरीश्वरवाद और भौतिकवादः

भौतिकवाद भूत तत्व, पदार्थ अथवा पुदगल को ही विशेष मंडल की एकमात्र सत्ता मानता है और अभौतिक या अति प्राकृतिक कही जाने वाली समस्त शक्तियों या सत्ताओं का निषेध करता है। इस सिद्धांत के अनुसार अभौतिक ईश्वर, आत्मा, देवी-देवता, स्वर्ग-नरक, भूत-प्रेत और शैतान आदि केवल काल्पनिक वस्तुएं हैं, जिनकी कोई वास्तविक सत्ता नहीं है। केवल उन्हीं वस्तुओं और प्राणियों की वास्तविक सत्ता है, जिनका निर्माण पृथ्वी, जल, वायु एवं अग्नि इन चार भौतिक तत्वों के परमाणुओं के संयोगों से हुआ है और जिनका हम अनुभव तथा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। एफ.आर. टेनेन्ट के अनुसार भौतिकवाद विस्तार-युक्त, अभेद्य, शाश्वत रूप से स्वतः अस्तित्वमान तथा गतिशील पदार्थ को ही विश्वमंडल का एकमात्र मूल तत्व मानता है। मनस या चेतना इसी तत्व के रूपांतरण अथवा गुण हैं और सभी मानसिक प्रक्रियाओं को शारीरिक प्रक्रियाओं में समानीत किया जा सकता है। प्राचीन

भारतीय और यूनानी दार्शनिकों ने अपने भौतिकवाद को परमाणुवाद के रूप में प्रस्तुत किया है। यानी वे भूत तत्व को सूक्ष्म परमाणुओं से बना हुआ मानते थे। आधुनिक विज्ञान का विकास परमाणुवाद के आधार पर हुआ, पर अब परमाणुओं को अंतिम और अविभाज्य इकाई नहीं माना जाता-उन्हें इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन और प्रोटोन कणों में विभाजित माना जाता है। इसी प्रकार इन सूक्ष्म कणों को पहले की तरह ठोस नहीं, ऊर्जा के रूप में भी देखा जाता है और कण-तरंग कहा जाता है। पदार्थ के मूल स्वरूप में वैज्ञानिक शोध कितना भी परिवर्तन करें, उसे अभौतिक और अति प्राकृतिक सिद्ध नहीं किया जा सकता। यहां यह तथ्य ध्यातव्य है कि भौतिकवाद और प्रकृतिवाद लगभग समानार्थक हैं। दोनों में आधिभौतिक या अति प्राकृतिक ईश्वर आत्मा आदि का कोई स्थान नहीं है यानी दोनों निरीश्वरवादी हैं, पर जहां प्रत्येक भौतिकवादी का निरीश्वरवादी होना अनिवार्य है, सभी निरीश्वरवादी भौतिकवादी नहीं होते। भारतीय दर्शन की बौद्ध, जैन, सांख्य और मीमांसा आदि सरिणियां निरीश्वरवादी हैं, पर इनमें से कोई भी भौतिकवादी नहीं है।

निरीश्वरवाद और सर्वेश्वरवादः

'स्टनफोर्ड ॲनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलास्फी' के अनुसार सर्वेश्वरवाद (पॅनथीइज्म) उस दृष्टिकोण को कहा जाता है, जो ईश्वर को पूरे विश्वमंडल का अभिन्न और एकात्म रूप मानता है। इस सिद्धांत के अनुसार दुनिया में कुछ भी ऐसा नहीं है जो ईश्वर से बाहर हो, जो भी है, सब ईश्वर ही ईश्वर है। यानी यह सिद्धांत इस कायनात से अलग, ईश्वर को उसके व्यक्तित्ववान रचयिता, स्वामी या सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप में कल्पित नहीं करता। इस संसार, इस प्रकृति से अलग उसकी सत्ता को नहीं मानता।

यह दृष्टिकोण भारतीय अद्वैत वेदान्त, सूफी रहस्यवाद और यहूदी धर्म के एक सम्प्रदाय में मुखर है। सर्वेश्वरवाद का एक प्रमुख स्रोत साहित्य भी है। गेटे, कॉलरिज, वर्ड्सवर्थ, एमर्सन, वाल्ट व्हिट्मॅन और डी. एच लारेन्स के साहित्य में यह दिखाई देता है। स्पिनोजा कार्ल रोगने और न्यूटन सर्वेशवरवादी कहे जाते हैं। अनेक ईश्वरवादी विचारकों ने इसकी कड़ी आलोचना की है। शापनहावर की आलोचना है कि इस विश्व को ही ईश्वर कह देना, उसकी कोई व्याख्या नहीं करता। यह केवल एक अतिरिक्त पर्यायवादी शब्द से भाषा को सम्पन्न करता है। इसलिए सर्वेश्वरवाद निरीश्वरवाद का ही एक कर्ण मधुर संस्करण है।

वास्तव में पूरे भौतिक जगत् को, पूरे विश्व मंडल को ईश्वर नाम देना और किसी व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर को न मानना, जहां एक ओर इस संसार के हर रूप रंग के साथ एकात्मकता अनुभव करने की एक व्यापक संवेदनशीलता, विश्व प्रेम की एक विराट अनुभव का द्योतक है। वहीं यह परंपरागत, पिष्ठपेषित, दकियानूसी ईश्वरवाद का स्पष्ट निषेध भी है। यह मनुष्य की आदिम रहस्य भावना की, उसके भय मिश्रित आश्चर्यभाव की, उसके सम्भ्रम की तृप्ति भी है।

पिछले कुछ वर्षो में सर्वेश्वरवाद का पुनरोदय (रिवाइवल) बहुत से पर्यावरणविदों, प्रकृति-प्रेमियों, वैज्ञानिकों और अनीश्वरवादियों के विचारों में दिखाई देता है। विश्व सर्वेश्वरवादी आंदोलन के अनुसार इस आंदोलन के बुनियादी सिद्धांत हैं-

1. प्रकृति और सम्पूर्ण विश्व मंडल के प्रति सम्मान, श्रद्धायुक्त विस्मय या सम्भ्रम और उसी का होने की अनुभूति।

2. सभी मनुष्यों और जीवों के अधिकारों का सम्मान और उनके प्रति सक्रिय परवाह (चिंता)।

3. इस सुंदर संसार में अपने जीवन और शरीरों का प्रसन्नतापूर्वक उत्सवीकरण।

4. प्रकृतिवाद-किसी अति प्राकृतिक तत्व, शक्ति, क्षेत्र आदि में अविश्वास के साथ, मजबूत प्रकृतिवाद, परलोक, पुनर्जन्म आदि में अविश्वास।

5. तर्क, विवेक, साक्ष्य और वैज्ञानिक पद्धति और विश्व को समझने के लिए श्रेष्ठ साधनों के रूप में सम्मान।

6. सभी प्रकार के भेदभावो की समाप्ति के लिए धर्मिक संघर्ष, धार्मिक सहिष्णुता, धार्मिक स्वतंत्रता और धर्म से स्वतंत्रता के अधिकारों की रक्षा, राज्य

और धर्म का सम्पूर्ण विलगाव।

निरीश्वरवाद ओर विवेकवादः

अंग्रेजी के 'रेशनलिज्म' शब्द के लिए हिन्दी में बुद्धिवाद और विवेकवाद, ये दोनों शब्द प्रचलित हैं। पर मैं व्यक्तिगत रूप से विवेकवाद शब्द को पसंद करता हूं। 'वेबस्टर न्यू वर्ड डिक्शनरी' के अनुसार विवेकवाद वह सिद्धांत और उसका व्यवहार है, जो तर्क या बुद्धि को ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत मानता है और उसी के आधार पर अपनी राय, विश्वास और कार्यपथ निर्धारित करता है। इस सिद्धांत में पहले तर्क को, और केवल तर्क को ही ज्ञान का स्रोत माना गया अर्थात् संवेदना-अनुभवों की उपेक्षा की गई, पर बीसवीं सदी तक आते-आते इसमें भौतिक अनुभव को भी ज्ञान के एक स्रोत के रूप में स्वीकृति दी गई। अर्थात् आज के प्रचलित अर्थों में विवेकवाद ऐंद्रिक प्रत्यक्षीकरण (आंखों की देखी) अनुमान और तर्क, इन तीनों को ज्ञान का स्रोत मानता है और अन्तदृष्टि, अपौरूषेय प्रकटन विश्वास और ग्रंथ-प्रमाण जैसे सभी अतर्कसंगत स्रोतों को अमान्य घोषित करता है।

स्पष्ट है कि विवेकवाद केवल विवेक को ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत नहीं मानता, वह जीवनानुभवों, सूक्षम निरीक्षण और वैज्ञानिक प्रयोगों को भी ज्ञान के स्रोत मानता है पर ग्रंथ-प्रामाण्य, बाबा-वाक्य, अंधविश्वास, अमानुषय अति प्राकृतिक तत्वों, चमत्कारों तथा रहस्यवादी अनुभवों को खुले तौर पर नकारता है।

यह लगभग वही वैचारिक स्थिति है जो ढाई हजार साल पहले गौतम बुद्ध की इस प्रसिद्ध शिक्षा में व्यक्त हुई थी-किसी बात को इसलिए सच मत मान लो कि वह परंपरा से चली आ रही है। इसलिए भी नहीं कि वह वेद, शास्त्रादि में लिखी हुई है। इसलिए भी नहीं कि उसको कोई विख्यात व्यक्ति, आचार्य या गुरु कह रहा है। इसलिए भी नहीं कि मैं गौतम बुद्ध उसे कह रहा हूं। केवल जब तुम आत्मानुभव से ही जानो कि ये बातें हितकर हैं या अहितकार, ये बातें निंदनीय हैं या नहीं, इनको करने से दुःख होगा या नहीं, तभी तुम उन्हें स्वीकार या अस्वीकार करो।

भारतीय दार्शनिक बन्दिष्टे ने अपने आपको विवेकवाद घोषित करते हुए कहा कि विवेकवाद का केंद्रीय संदेश है कि हमें अपने विश्वासों और मान्यताओं को लगातार अनुभव से प्राप्त साक्ष्यों के प्रकाश में परीक्षण करते रहना चाहिए।

निरीश्वरवाद और मानववादः

यूरोप में मानववाद चौदहवीं से सोलहवीं सदी में ग्रीक और रोमन वांङमय के अध्ययन से निकले उस बौद्धिक सांस्कृतिक आंदोलन को कहा गया था, जो दिव्य शक्तियों और अति प्राकृत तत्वों के प्रति शंकाशील और धर्मनिरपेक्ष था तथा जिसने एक नवजागरण (रिनेशां) को जन्म दिया था। 'अन्साइक्लोपीडिया अॅव फिलास्फी' के अनुसार इसके अतिरिक्त मानववाद वह दर्शन है जो मनुष्य की गरिमा और मूल्यवत्ता को स्वीकृति देते हुए उसे ही सभी अन्य वस्तुओं के मूल्यांकन का मापदंड बनाता है। और मानव-प्रकृति, उसकी सीमाओं और उसके हितों को अपने अध्ययन की विषय-वस्तु बनाता है। स्पष्ट है कि जब हम मनुष्य को ही अन्य वस्तुओं का मापदंड मानते हैं तो उसी तथ्य पर पहुंचते हैं, जिस पर चंडीदास पहुंचे थे-

सबार ऊपर मानुष्य सत्य, तहार ऊपर नाहीं

यानी ईश्वर या दिव्य शक्तियों की तुलना में मनुष्य को महत्व देना

बीसवीं सदी में मानववाद शब्द अधिकाधिक धर्मनिरपेक्ष मानववाद के अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाने लगा और उसके साथ धर्मनिरपेक्ष विशेषण लगाने की जरूरत कभी-कभार ही महसूस की गई। इस विशेषण को उसमें अन्तनिहित ही मान लिया गया। इस अर्थ में वह विवेकवाद और निरीश्वरवाद से घनिष्ठ रूप से जुड़ जाता है। डा. रमेन्द्र ने बीसवीं सदी के अंतिम दर्शक के तीन शब्दकोशों में दिये गए मानववाद शब्द के अर्थ को उद्धत किया है। लिटिल आक्सफोर्ड डिक्शनरी 1995, के अनुसार 'मानववाद एक अधार्मिक दर्शन है, जो उदार मानवीय मूल्यों पर आधारित है' कॉलिन्स कनसाइज्ड डिक्शनरी 1995

..शेष पृष्ठ 49 पर

धर्म के बाज़ारीकरण का सिलसिला

-उदय प्रकाश अरोड़ा

हाल में एक और धर्मगुरु आसाराम के खिलाफ अदालत ने दुष्कर्म के आरोप को सही पाया इसके पहले संत राम रहीम को जेल की हवा खानी पड़ी थी। कुछ और ऐसे धर्मगुरु हैं, जो गंभीर आरोपों से दो-चार हें और उनके मामले अदालतों में लंबित हैं। ऐसे गुरु हिंदू समाज की गरिमा गिराने का काम करते हैं। विडंबना यह है कि संदिग्ध आचरण वाले गुरुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। यह कोई शुभ संकेत नहीं। आंबेडकर का कहना था कि भले ही हिंदू समाज अनेक कुप्रथाओं से ग्रस्त हुआ हो, किंतु अच्छी बात यह रही कि इन कुप्रथाओं से लड़ने वाले साधु-संत सामने आते रहे और संतों ने नेतृत्व प्रदान कर उनके खिलाफ अभियान छेड़ा। जोकि सेमेटिक धर्म वाले यह नहीं मानते कि उनके धर्म में बुराइयां घुस सकती हैं। इसलिए वे बुराइयों को दूर करने के लिए प्रयास भी नहीं करते। प्राचीन समय में जहां बुद्ध, महावीर आदि ने हिंदू धर्म में व्याप्त आडंबर, कर्मकांड और असमानता के विरुद्ध लड़ाई लड़ी, वही बाद में आदिशंकर, कबीर, नानक, बसवेश्वर, रैदास, चैतन्य आदि ने हिंदू समाज को गतिशीलता प्रदा की।

19वीं शताब्दी में रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद अैर दयानंद, सरीखे सन्यासियों ने हिंदू ६ र्म में नवोत्थन पैदा किया। इसी तरह आदिवासियों को जागृत करने वाले बिरसा......ने जो संघर्ष प्रारंभ किया, उससे प्रभावित आदिवासी जनता उन्हें अपने इष्ट देवता के रूप में पूजने लगे। चंपारण सत्याग्रह में शामिल किसान लोग गांधी को अपने देवता के रूप में मानने लगे। मदर टेरेसा और बाबा आम्टे के उदाहरण हैं। इन्होंने निर्धन वर्ग के बीच जो कार्य किया, उससे प्रभावित होकर लोग आदर भाव से देखने लगे और संत मानने लगे। दुर्भाग्य की बात है कि संतों की ऐसी पीढ़ी आज लुप्त होती दिखती है। सुधारवादी संतों ने स्वयं कभी ही घोषित किया कि वे संत या ईश्वर के प्रतिनिधि हैं। यह गौरव समाज ने उन्हें खुद प्रदाान किया, लेकिन आज जिन साधुओं की संख्या बढ़ रही है, जो स्वयं घोषित करते हैं कि वे ईश्वर के दूत के रूप में महान संत हैं या दिव्य अथवा चमत्कारिक शक्तियों से लैस हैं। वे टीवी और अखबार में विज्ञापन देते हैं और अपने संभावित भक्तों की तलाश करते हैं। समस्या यह हैं कि केवल अशिक्षित ही नहीं, शिक्षित लोग भी अनुयायी बन जाते हैं।

कई धनी-मानी संत ऐसे रहे जिन्होंने अपने मठ स्थापित किए। उन्हें नेताओं, पूंजीपतियों और फिल्मी कलाकारों का संरक्षण मिला। इनमें से कुछ विदेशियों के आकर्षण का केंद्र भी बने। एक समय भारत की गुरु इंडस्ट्री पश्चिम में चमकी और दुनिया की बड़ी-बड़ी हस्तियों ने उनसे नजदीकी बढ़ाई। ऐसे गुरुओं में महर्षि महेश योगी प्रमुख हैं। 1960 के दशक में बीटल्स रॉक बैंड ग्रुप के सदस्य महेश योगी के शिष्य बने। इससे योगी की ख्याति पश्चिम में खूब बढ़ी। अभिनेत्री मिया फेरो ने योगी के आश्रम में कुछ दिन बिताए। फिर आचार्य रजनीश ने भी महेश योगी की तरह अपनी प्रगति का मार्ग पश्चिम में देखा। उन्होंने अमेरिका में रजनीशपुरम की स्थापना की और अपार सम्पति अर्जित की। बाद में उन्हें अमेरिका छोड़ना पड़ा। जब उन्हें कहीं ठौर नहीं मिला, तो उन्होंने भारत लौटकर पुणे में आश्रम बनाया।

नेताओं का संरक्षण पाने वाले गुरुओं में धीरेन्द्र ब्रह्मचारी का नाम खासतौर से लिया जाता है। कहते हैं कि नेहरू के बाद इंदिरा ने भी उनसे योग सीखा। बाद में वह विवादों में घिरे और उन्हें कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटने पड़े। कुछ इसी तरह की कहानी तांत्रिक चंद्रास्वामी की है। वह प्रधानमंत्री

नरसिंह राव के करीबी माने जाते थे। उनकी निकटता ब्रूनेई के सुल्तान, बहरीन के खलीफा, हॉलीवुड अभिनेत्री लिज टेलर, हथियार व्यापारी अदनान खशोगी आदि से भी थी। बाद में लंदन के भारतीय मूल के एक व्यापारी ने उन पर ठगी के आरोप लगाए। उन पर अन्य कई आरोप भी लगे। कुल मिलाकर ऐसे गुरुओं की कमी नहीं जो प्रसिद्धि या लोकप्रियता पाने के बाद विवादों से न घिरे हों। कई ऐसे साधु-संत रहे जिनकी चर्चा उनके गलत कामों के लिए ही हुई। कुछ गुरुओं का साम्राज्य औद्योगिक घरानों की तरह फैला हुआ है। कुछ अस्पताल, स्कूल और कालेज खोलकर सामाजिक सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं, लेकिन कई बार ये संस्थाएं सेवा के बजाए आय का साधन बन जाती हैं। कई धर्मगुरु भक्तों के नाम पर अपने अनुयायियों की सेनाएं खड़ी कर लेते हैं और मनमानी करते हैं। यह भी अजीब है कि एक ओर धर्मगुरु बढ़ रहे और दूसरी ओर समाज में सामाजिकता और नैतिकता की कमी देखी जा रही है। आखिर भारत में साधु-संतों की संख्या क्यों बढ़ती चली जा रही है? ऐसी स्थिति शायद ही किसी अन्य देश में हो। संभवतः इसका कारण यह है कि सभी प्रकार के विचार हिंदू धर्म में अपनी जगह बना सकते हैं। हर तरह की उपासना विधियों और विश्वासों के प्रति हिंदू धर्म लचीला हैं संगठित धर्मो में स्वतंत्रता पर नियंत्रण होने के कारण मनमानी नहीं चल पाती। सैद्धांतिक रूप से भी धर्म पालन करने में एक भीतरी स्वतंत्रता होना आवश्यक है, किंतु अक्सर इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया जाताहै। भारतीय लोकतंत्र में साधु-संतों के अनुयायियों का इस्तेमाल वोट बैंक बढ़ाने में सहायक होता है। इन पर नियंत्रण जरूरी है अन्यथा धर्म के दुरुपयोग का सिलसिला कायम रहेगा। राजनीति और धर्म के बीच घालमल रोकने के लिए दोनों के बीच एक विभाजन रेखा खींचना आवश्यक है। यह नियंत्रण कैसे हो? इसमें सक्षम कानून सहायक हो सकते हैं, किंतु वे समस्या का पूरा हल नहीं हैं। बाजार की संस्कृति ने उपभोक्तावाद को चरम पर पहुंचा दिया है। बाजार मांग और पूर्ति के सिद्धांतों से चलता है। जब तक गुरुओं की मांग रहेगी, उनका बाजार बढ़ेगा। बाजार नैतिक और अनैतिक नहीं देखता। मुनाफा कमाना इसका उद्देश्य होता है। धर्म का जो बाजारीकरण हो रहा है उसे रोकने के लिए समाज को भी आगे आना चाहिए और वह इसमें तब सफल होगा, जब आस्था और अंधविश्वास के अंतर को समझा जाएगा।

संदिग्ध आचरण वाले किस्म-किस्म के गुरु हिंदू धर्म के सही रूप को बिगाड़ रहे हैं। विवेकानंद ने कहा था कि हिंदू धर्म परंपरा में कोई धर्मगुरु नहीं होता। उपनिषदों और गीता में जिज्ञासु को भगवान के सीधे सम्पर्क में खड़ा कर दिया गया है। भक्त और भगवान के मध्य किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं। मध्यकालीन युग में भक्तों ने अवश्य गुरु की महिमा स्वीकार की, किंतु गुरुओं को सब कुछ मानने वाले कबीर ने कहा था, 'गुरु की करनी गुरु जाने, चेले की करनी चेला' अर्थात् अंतिम घड़ी में गुरु भी आपको नहीं बचा पाएगा। उसकी करनी वह भुगतेगा और तेरी करनी तू। इसलिए अंतिम सत्य करनी है। सत्य आपके भीतर है। वास्तव में मनुष्य को किसी गुरु की आवश्यकता नहीं। गुरु प्रत्येक मनुष्य के भीतर है। भीतर की आवाज सुनें।

(लेखक जेएनयू में ग्रीक चेयर प्रोफेसर रहे हैं)

साभार-

✶

शोक समाचार

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के पूर्वप्रधान राजा राम हंडियाया के छोटे भाई राम कुमार (52 वर्ष) का बरनाला में एक सड़क दुर्घटना में 10 मई 2018 को निधन हो गया। जिनके निमित शोक सभा शांति हाल बरनाला में 24 मई, 2018 को आयोजित की गई। इस शोक की घड़ी में तर्कशील सोसायटी हरियाणा राजा राम के समूचे परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

अलौकिक शक्तियां

-डा. हरीश मल्होत्रा ब्रमिंघम
00447763013424

बी.बी.सी. के हिन्दी कार्यक्रम के अनुसार 'आजकल पौराणिक कथाओं के साथ-साथ भूत प्रेतों, चुड़ैलों एवं नाग-नागिनों वाले नाटक, कहानियां एवं फिल्में अधिक प्रसिद्ध हो रहे हैं।' पुस्तकों, फिल्मों एवं वीडियो गेमों में प्रायः भूत-प्रेतों को नौजवान अथवा बूढ़े तथा चुड़ैलों को अति सुंदर लड़कियों के रूप में दर्शाया जाता है

अखबार 'द टाईम्स' के अनुसार कुछ वर्ष पूर्व एक सर्वेक्षण करवाया गया था, जिससे ज्ञात हुआ कि 46 प्रतिशत भारतीय लोग भूत-प्रेतों पर विश्वास करते हैं। हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण के अनुसार अब इनकी संख्या 56 प्रतिशत हो गई है। समाज विज्ञान के प्रोफैसर क्लोड फिशर लिखते हैं : 'अमेरिका में बुजुर्गों से दो गुना अधिक नवयुवक बाबाओं एवं तांत्रिकों के पास जाते हैं, भूत-प्रेतों पर विश्वास रखते हैं तथा यह भी मानते हैं कि कई घरों में भूत-प्रेतों का निवास होता है।'

यह कोई हैरानी वाली बात नहीं कि लोगों में भूत-प्रेतों की कसर वाली कहानियां फिर से बहुत अधिक प्रसिद्ध हो रही हैं। एक अखबार के निष्कर्ष के अनुसार कई संस्कृतियों में भूत-प्रेतों वाली कहानियां दोबारा से इस कारण से प्रसिद्ध हो रही हैं, क्योंकि पिछले दशक से इनमें भूत-प्रेतों अथवा नागिन जैसे पात्र पाये जा रहे हैं।

एक रिपोर्ट के अनुसार, 'विश्वभर के 25 से 50 प्रतिशत लोग भूत-प्रेतों पर विश्वास करते हैं तथा बहुत सी संस्कृतियों के साहित्य में प्रमुख तौर पर भूत-प्रेतों के बारे में बताया जाता है। समाज विज्ञान के प्रोफैसर क्रिस्टोफर बेडन एवं कार्सन मेन्कन ने अमेरिका में एक सर्वे किया, जिसमें यह हैरान करने वाला सत्य सामने आया कि 70 से 80 प्रतिशत अमेरिकी किसी-न-किसी प्रकार की जादूगरी पर विश्वास करते हैं।

यदि भारतवर्ष में कोई इस प्रकार का लंबा चौड़ा सर्वेक्षण किया जाए तो भूत-प्रेतों में विश्वास करने वालों की संख्या 90-95 प्रतिशत से भी अधिक हो सकती है। अब हमने अलग-अलग सर्वेक्षणों से जान लिया है कि बहुत से लोग अलौकिक शक्तियों अथवा इस प्रकार की परलोक वाली बातों एवं कार्यों में विश्वास नहीं करते तथा वे सोचते और मानते हैं कि ये मनघड़ंत या फिल्मों के लेखकों की कल्पना है। मुहूर्त निकालने वाले, झाड़फूक करने वाले, पुच्छा देने वाले तथा भूत-प्रेत निकालने वाले सभी लोगों को मूर्ख बनाकर उनका शोषण करते हैं। लोगों को गुमराह करना एक घिनौना अपराध है।

इन्हीं बातों के साथ मिलजी-जुलती ही जादूगरी है, जोकि दर्शकों को धोखा देकर चमत्कार दिखलाने की क्रिया है। यद्यपि मनोरंजन जगत में जादूगरी को अत्यंत दिलचस्प ढंग से दिखाया जाता है, पर हमें इसके साथ जुड़े खतरों से सावधान रहना चाहिए। गैलप यूथ सर्वे 2014 के अनुसार टी.वी., फिल्मों एवं पुस्तकों में जादूगरी को अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत करने के कारण शायद नवयुवकों एवं नवयुवतियों का जादूगिरी पर भरोसा बढ़ने लगा है।

वास्तविक सच्चाई से किसी को जानबूझ कर अनभिज्ञ रखना एक धोखा एवं गुनाह है। यह गुनाह एवं धोखा भारतीय समाज के अंग-अंग में निवास करता है। अगर जादूगिरी की चीरफाड़ की जाए तो ज्ञात होता है कि इसमें बहुत कुछ शामिल हैः जैसे कि भविष्य बताना, जादू-टोना करना, बाबाओं एवं तांत्रिकों के पास जाना तथा भूत-प्रेत निकालना। दुनिया के कई हिस्सों में लोग बाबाओं एवं तांत्रिकों-मांत्रिकों की सहायता से अथवा किसी अन्य ढंग के साथ दुष्ट आत्माओं के साथ बातचीत करने की कोशिश करते हैं। बहुत से लोग विभिन्न प्रकार के कर्मकांड करते हैं, जैसे कि भविष्य को जानने के लिए पत्रा देखना, ग्रह दशा को देखना,

क्रिस्टल बाल में से भविष्य देखना तथा हस्तरेखाओं को देखना इत्यादि। पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं फिल्मों में दिखाया जाता है कि जादूगिरी करने में कोई खतरा नहीं है तथा इसके द्वारा लोगों का ध्यान जादूगिरी की ओर आकर्षित किया जाता है। कई माहिर बताते हैं कि टी.वी. कार्यक्रमों एवं फिल्मों में जादूगिरी को जिस तरह से दिखाया जाता है, उसका लोगों के विश्वासों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उन्हें ऐसा लग सकता है कि कुछ अलौकिक शक्तियों लोगों की मदद कर रही हैं, परंतु सच्चाई यह है कि अपने पैसे कमाने के लालच में ये बहुत बड़ा गुनाह कर रहे होते हैं, क्योंकि ऐसी बातों से लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। नस्ल-दर-नस्ल को खराब करके लोगों को अपने स्वार्थवश दुखों एवं अंधविश्वासों में डाला जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, 12 वर्ष की आयु में जीतो को लगता था कि उसके पास भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं अथवा खतरों के बारे में सोचने एवं बताने की शक्ति थी। वह अपने सहपाठियों के लिए टैरो कार्ड पढ़ती थी। उस द्वारा बताई गई बातों का कभी-कभी तीर-तुक्का लग जाता था तथा बाद में वह इस कार्य में और भी रूचि लेने लग गई।

जीतो इस मनोभ्रम का शिकार हो गई कि 'ईश्वर' ने उसे इस कार्य के लिए विशेष शक्ति प्रदान की है, ताकि वह लोगों की सहायता कर सके, परन्तु उसका मन उसे तंग भी कर रहा था कि वह दूसरों के लिए तो कार्ड पढ़ सकती है, परन्तु अपने लिए नहीं, यद्यपि वह स्वयं भी अपना भविष्य जानना चाहती थी। जीतो के मन में इस बारे बहुत से सवाल थे। ज्यों-ज्यों वह बड़ी हुई और उसने जब विज्ञान का गहराई से अध्ययन किया, तो उसे ज्ञात हुआ कि ये सभी बातें मनघड़ंत, कल्पना एवं धोखा हैं, तो उसने इस कार्य से तौबा कर ली।

इसी प्रकार रमेश को ऐसे उपन्यास पढ़ने का शौक था, जिनमें अलौकिक शक्तियों के बारे में बताया गया होता था। उसका कथन है कि मुझे मेरी आयु के उन कलाकारों के बारे में जानना बहुत अच्छा लगता था जोकि काल्पनिक दुनिया में जाते थे। इसी कारणवश मैं जादूगिरी और अलौकिक शक्तियों वाली पुस्तकें पढ़ने का आदी हो गया। मेरी इच्छा बढ़ती चली गई और मैं ऐसी फिल्में देखने लग गया। टी.वी. के कार्यक्रम, मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाएं भी वे ही पढ़ता, जिनमें अलौकिक शक्तियों के बारे में चर्चा की गई होती थी। फिर एक बार मैं कुछ ऐसे लोगों से मिला, जिन्होंने मुझे इन सब के बारे में मुझे तर्क के साथ समझाया कि यह सब कुछ केवल एक धोखा है तथा मैं अपना समय और दिमागी शक्ति को गलत दिशा में व्यर्थ में लगा रहा हूं, तब मैंने ऐसी पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं एवं मैगजीन पढ़ने बन्द कर दिए तथा सभी घटनाक्रमों को वैज्ञानिक नजरिए के साथ देखने लग गया। मुझे यह समझ में आ गया कि दुनिया में समस्त तरक्की एवं सुख-सुविधाएं केवल विज्ञान की देन हैं तथा अलौकिक शक्तियों के दावेदारों ने जनता को मूर्ख बनाकर मानवता के खिलाफ अपराध किया है तथा वे यह अपराध नस्ल-दर-नस्ल करते आ रहे हैं। दुनिया के बहुत से लोग चाहे वे विकसित देशों में हैं अथवा विकासशील देशों में, जादूगिरी, अलौकिक शक्तियां, भूत-प्रेतों एवं मृत व्यक्तियों से बातें करनी अथवा भविष्य फल के बारे में दिलचस्पी रखते हैं। दुनिया भर में लोग वहम-भ्रमों में विश्वास रखते हैं तथा अनेक प्रकार के नग, ताबीज पहनते हैं कि बुरी आत्माएं उनसे दूर रहेंगी। 'फोक्स' नाम के एक जर्मन मैगजीन ने एक लेख 'लैपटाप एवं इबलीस' में लिखा है : 'इंटरनैट के कारण जादूगिरी एवं अलौकिक शक्तियों में लोगों की दिलचस्पी बढ़ती चली जा ही है।' इसका एक कारण यह भी है कि इस आपाधापी एवं दौड़भाग में हम थोड़े समय में बहुत सा धन एकत्र करना चाहते हैं। एक-दूसरे से आगे निकलने का रूझान, टी.वी. पर दिये जाते विज्ञापन, सामाजिक परिवर्तन में आ रही तेज गति, रिश्तों का बिखराव बहुत से लोगों को मायूस कर रहा है। ऐसी हालत में लोग किसी चमत्कारी शक्ति की तलाश में अपने मन की शांति के लिए भटकते रहते हैं। इसी तलाश में लोग अलौकिक शक्तियों के एजेंटों के वश में पड़ जाते हैं। विश्व की बहुत सी सरकारें मानव हितैषी नहीं हैं तथा वे गलत एवं झूठ का प्रचार करके लोगों को वास्तविक मुद्दों से दूर करके ऐसी तर्कहीन बातों में

व्यस्त रखते हैं, ताकि वे राजगद्दी पर लंबे समय के लिए आसीन रह सकें। दुनिया के कई प्रचलित धर्म भी ऐसे हें, जो इन आलौकिक शक्तियों में यकीन करते हैं तथा धार्मिक अदारे अब विज्ञान की खोजों के द्वारा ऐसा धुआंधार प्रचार दिन-रात करते रहते हैं। इसी प्रकार बहुत से लोगों का दिमाग इन मिथ्या बातों में विश्वास करने लग जाता है। वे यह भी दावा करते हैं कि यदि उक्त धर्म की पुस्तक, ग्रंथ वाली हर बात पर विश्वास किया जाए तो व्यक्ति के समस्त कष्टों एवं परेशानियों का खात्मा हो सकता है। साधारण अथवा कम शिक्षित लोगों का ही नहीं, बल्कि बड़ी-बड़ी डिग्रिया प्राप्त करने वाले बहुत से लोगों का भी ऐसी आधारहीन बातों में यकीन है। इस भ्रम को वे तोड़ना नहीं चाहते क्योंकि वे स्वयं को परिवार एवं रिश्तेदारों में अकेला महसूस करने लग पड़ेंगे। अधिकतर लोग अपने रोजमर्रा के जीवन की जरूरतों को पूर्ण करने में व्यस्त रहते हैं और इन भ्रमों, विश्वासों एवं अकीदों के बारे में आलोचनात्मक विश्लेषण करने, वैज्ञानिक चिंतन वाली पुस्तकें पढ़ने अथवा तर्कपूर्ण ढंग से सोचने वाले लोगों के साथ बहुत ही कम ताल्लुक रहता है, क्योंकि बहुत से लोग इस बहाव में बहते चले जा रहे हैं और वे अपनी दिमागी शक्ति को सही दिशा की ओर लगाते ही नहीं हैं। जिस प्रकार का रूझान चलता चला जा रहा हो, उस पर उंगली उठाने से कई सामाजिक रिश्तों में दरार आ जाने का भय उन्हें इस ओर नहीं जाने देता। ऐसे लोग अन्य अंधानुयायी लोगों का अंधानुकरण करते हुए अपना आर्थिक एवं मानसिक शोषण करवाते रहते हैं हम कई बार अपनी भावनाओं से ऊपर उठकर निर्णय नहीं लेते। हमारा अपना लगाव अपने माता-पिता, दादा-दादी तथाअन्य निकटतम रिश्तों के साथ अत्यंत घनिष्ठ होता है और भावनाओं के अधीन हम इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं होते कि वे जिन रीति-रिवाजों को मानते हैं। खास करके अलौकिक शक्तियों से संबंधित हों, किस प्रकार गलत हो सकते हैं? उन्हें महसूस होता है कि ऐसा चिंतन रखने वालों के खिलाफ कुछ करने से वे अपने इन रिश्तों का अपमान कर रहे होंगे। हम क्योंकि इन नजदीकी रिश्तों की आगामी श्रृंखला एवं हिस्सा हैं और हमारा अस्तित्व एवं पहचान इसके साथ जुड़ी होने के कारण हम अपना अपमान भी महसूस करते हैं। इस सच्चाई को हम भूल जाते हैं कि ज्ञान दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और यदि हम वैज्ञानिक सोच के साथ अलौकिक शक्तियों को अनुचित कहते हैं तो यह किसी का अपमान नहीं है।

(हिन्दी अनुवाद : बलवंत सिंह)

✶

खलील ज़िब्रान की लघु-कथाएं

ऊँचाई

अगर आप बादल पर बैठ सके तो एक देश से दूसरे देश को अलग करने वाली सीमा रेखा आपको कहीं दिखाई नहीं देगी और न ही एक खेत से दूसरे खेत को अलग करने वाला पत्थर ही नजर आएगा।

आप बादल पर बैठना ही नहीं जानते।

✶

मेज़बान

कभी हमारे घर को भी पवित्र करो। करूणा से भीगे स्वर में भेड़िये ने भोली-भाली भेड़ से कहा।

'मैं जरूर आती बशर्ते तुम्हारे घर का मतलब तुम्हारा पेट न होता।', भेड़ ने नम्रतापूर्वक जवाब दिया।

✶

स्वतंत्र चिंतन

मिथ्या-विश्वास

-कर्नल इंगरसोल

पिछले अंक में आपने पढ़ा.......

......उन्होंने आविष्कार करना, पता लगाना, घटनाओं के आपसी संबंध का अध्ययन करना प्रारंभ किया। उन्होंने इस बात की खोज की कि वे कौन-सी बातें हैं, जो आदमी को सुखी बनाती हैं, वे कौन से साधन हैं जो मानव-बंधुओं का कल्याण करते हैं।

अब आगे पढ़ेंः

हिलाए-डुलाए जा सकने वाले टाइपों का आविष्कार हुआ, मूर लोगों से कागज का बनाना सीखा गया, पुस्तकें प्रकट हुईं और यह संभव हो गया कि प्रत्येक पीढ़ी अपने मानसिक धन की विरासत अपनी अगली पीढ़ी के लिए छोड़कर जा सके। इतिहास ने दंत कथाओं और गप्पों का स्थान लेना आरंभ किया। दूरवीक्षण-यंत्र का आविष्कार हुआ। तारागण के पथ की खोज की गई और आदमी विश्व का नागरिक बना। वाष्प-इंजन का निर्माण और अब यह वाष्प, यह महान दास, लाखों-करोड़ों आदमियों का काम करता है। जादूगरी और असंभव बातें जाती रहीं और उनकी जगह रसायन-शास्त्र ने, उपयोगी बातों ने ली। फलित-ज्योतिष गणित-ज्योतिष बन गया। केपलर ने तीन महान नियमों का पता लगाया। यह मानव-बुद्धि की एक महान विजय हुई। हमारे तारा-ग्रह एक कविता बन गए, एक संगीत हो गए। न्यूटन ने हमें पृथ्वी के आकर्षण-सिद्धांत को गणित की भाषा में समझाया। हारवे ने रक्त-प्रवाह का पता लगाया। ड्रेपर ने उसका कारण खोज निकाला। जहाजों ने समुद्रों को जीत लिया और जमीन पर रेलों का जाल बिछ गया। गैस से घर और बाहर प्रकाशित हो गए। माचिस के आविष्कार से आग मानव की संगिनी बन गई। फोटो लेने की कला की जानकारी हुई। सूर्य एक कलाकार बन गया। तारों और समुद्री-तारों का आविष्कार हुआ। बिजली विचारों का वाहक बन गई और जातियां एक-दूसरे की पड़ोसी बन गई। बेहोश करने के साधनों का पता लगा और आदमी की वेदना गहरी-निद्रा में खो गई। शल्य-चिकित्सा एक विज्ञान बन गई। टेलीफोन का आविष्कार हुआ, वह टेलीफोन जो शब्द-तरंगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है और आदमी के कर्ण-रन्ध्रों तक सुरक्षित पहुंचा देता है। फोनोग्राफ, जो आदमी की वाणी को चिन्हों और बिंदियों के रूप में संरक्षित रखता है और हमें फिर वापस दे देता है।

तब बिजली आई, जो रात में दिन भर देती है, और वे तमाम आश्चर्यकर मशीनें जो इस सूक्ष्म शक्ति का उपयोग करती हैं। यह वही शक्ति है, जो वर्षा ऋतु के बादलों में से कूदकर नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए नीचे उतर आती है। महान विचारकों ने शक्ति और जड़ पदार्थ का अविनाशीपन सिद्ध करके दिखा दिया। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि जिसका नाश नहीं हो सकता, वह कभी पैदा भी नहीं हुआ होता। भूगर्भ-वेत्ता ने थोडा-सा संसार के इतिहास को पढ़ा। वनस्पति जीवन और पशु-जीवन की कहानी को सुना। जीव-विज्ञान के ज्ञाताओं ने जीवन की प्राचीनता की स्थापना की और धर्म-ग्रंथों के कथनों को झूठा सिद्ध कर दिया। तब विकास का सिद्धात आया, योग्यतम के विजयी होने का, प्राकृतिक चुनाव का। हजारों रहस्यों की व्याख्या हो गई। विज्ञान ने मिथ्या-विश्वासों के हाथ का दण्ड छीन लिया। पेशियों के सिद्धांत का आविष्कार हुआ, गर्भविकास-शास्त्र का अध्ययन किया गया। अनुवीक्षण-यंत्र ने रोग के कीटाणुओं का पता लगाया और हमें प्लेग को रोकने का ढंग सिखाया। ये महान सिद्धांत और असंख्य आविष्कार मानसिक स्वतंत्रता की संतान हैं।

10

सब मिलाकर, हमारा ज्ञान कुछ नहीं के ही बराबर है। जीवन के अंधकार में प्रकाश की चन्द किरणें हैं। संभव है बरतन पोछने के कपड़े का गिरना किसी आगन्तुक की पूर्व-सूचना हो, किन्तु इसका हमारे पास कोई प्रमाण नहीं। संभव है तेरह जनों का एक साथ बैठकर खाना खतरनाक हो, किंतु हमारे पास कोई प्रमाण नहीं। संभव है कि किसी कुमारी के विवाह होने न होने का किसी सेब के बीजों अथवा किसी फूल की पत्तियों से संबंध हो, लेकिन हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। संभव है अंगूठी के कुछ नग पहनने वाले के लिए सौभाग्य का कारण हो और दूसरों का पहनना हानि और मृत्यु का कारण हो। संभव है बाएं कंधे पर चन्द्रमा का दर्शन दुर्भाग्य का ही द्योतक हो। संभव है पुरानी अस्थियों में, पवित्र चीथड़ों तथा बोलों में, मूर्तियों और लकड़ी के टुकड़ों में तथा जंग खाई हुई मेखों और सूखे खून में रोगियों को चंना कर देने की शक्ति हो, किन्तु कठिनाई यह है कि हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। संभव है धूमकेतु, चन्द्र ग्रहण तथा सूर्य ग्रहण और पुच्छल तारे, राजाओं की मृत्यु, जातियों के विनाश और प्रेम के आगमन के पूर्व-सूचक हों, किन्तु हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। संभव है देवी-देवता आदमियों पर आते ही हो, किन्तु हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। संभव है पुरानी और नई बाइबल में जितने चमत्कारों का उल्लेख है, वे सभी हुए हों। संभव है पानी की सुरा बन गई हो, रोटियां और मछलियां बढ़ गई हों, मर्दों और औरतों के सिर पर आए हुए देवी-देवता भगा दिए गए हों, मुंह में धन लिए हुए मछलियां मिली हों तथा मिट्टी और थूक से अंधे आदमियों की आंखें बन गई हों। संभव है वचन-मात्र के प्रयोग से रोगी अच्छे हो गए हों और कोढ़ियों का कोढ़ जाता रहा हो, किन्तु हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं।

इसी प्रकार कोई एक शैतान भी हो सकता है, जिसकी धूर्तता और शक्ति असीम ही हो, जिसके पास असंख्य छोटे शैतान हों, जिनका एकमात्र काम लोगों को पाप में प्रवृत्त करना, उन्हें धर पकड़ना और उनकी आत्माओं को अनन्त-काल तक आग की लपटों में जलाना ही हो। यह सभी कुछ, जहां तक हम सोच सकते हैं, संभव है। किंतु इतना हम जानते हैं कि कुछ अज्ञानी पादरी पुरोहितों के कथनों के सिवाय इनके अस्तित्व का हमारे पास कोई और प्रमाण नहीं।

यह भी संभव है कि कहीं कोई एक नरक है, जहां सारे राक्षस रहते हैं, एक ऐसा नरक जहां आग की लपटें उन सब आदमियों की प्रतीक्षा कर रही हैं, जिनमें सोचने विचारने और अपने विचारों को प्रकट करने का साहस है, जो पुरोहितों और पवित्र धर्म-ग्रंथों पर ईमान नहीं ला सकते, जो बुद्धि द्वारा प्रशस्त किए गए मार्ग पर चलना चाहते हैं, जो सज्जन और वीर हैं, किन्तु जिनमें अंधविश्वास नहीं। यह संभव है, किंतु मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि हमारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं।

इसी प्रकार कोई एक स्वर्ग भी हो सकता है, जहां परमात्मा रहता है। वहां देवता-गण गाते-बताते इधर-उधर विचरते है और जो नरक में पड़े हुए प्राणियों की दुख-दर्द भरी चीख-पुकार को आनंदपूर्वक सुनते रहते हैं, लेकिन इसका भी हमारे पास कोई प्रमाण नहीं।

यह सब पागलों के स्वप्न और कल्पनाएं हैं।

प्रकृति से परे कोई एक शक्ति ऐसी हो सकती है, जो सभी चीजों पर शासन करती है और उनका संचालन करती है, किन्तु इस प्रकार की किसी भी शक्ति का अस्तित्व प्रमाणित नहीं हुआ।

जब आदमी चारों ओर से जीवन और विचार, गति और पदार्थ, विकास और विनाश, जन्म और मृत्यु, सुख और दुख तथा भले आदमियों के कष्ट पाने और पापियों के मौज उड़ाने के रहस्यों से घिरा हुआ है, तो जो ईमानदार और बुद्धिमान आदमी है, उसे मजबूर होकर यह कहना ही पड़ेगा, मैं नहीं जानता।

लेकिन हम निश्चयपूर्वक जानते हैं कि देवता और दैत्य, ये स्वर्ग और नरक किस प्रकार बनाए गए? हम इलहामी ग्रंथों के इतिहास में धर्मों की उत्पत्ति के इतिहास से परिचित हैं। हम जानते हैं कि किस प्रकार मिथ्या-विश्वास के बीज बोए गए और किस प्रकार उसके पौधे बढ़े? हम जानते हैं कि तमाम मिथ्या-विश्वास, तमाम मत, तमाम मूर्खतापूर्ण बातें, तमाम गलतियां, तमाम अपराध और अत्याचार, तमाम पुण्य, तमाम पाप, तमाम आशाएं, तमाम भय तथा तमाम खोजें और आविष्कार प्राकृतिक ढंग से ही उत्पन्न हुए हैं। बुद्धि के प्रकाश में हम उपयोगी को हानिकारक से और सत्य को मिथ्या से पृथक करते हैं।

हम अतीत से परिचित हैं (उस रास्ते में जिस पर मानव चल चुका है) उसकी गलतियों से, उसकी विजयों से। हम कुछ घटनाओं से परिचित हैं, कुछ अंशों से और हमारी जो कल्पना शक्ति है, हमारे मन में जो बैठा हुआ कलाकार है, उसने उन्हीं घटनाओं को लेकर, इन्हीं खण्डों को लेकर अतीत की रचना कर डाली है। वही भवितव्य के पर्दे पर भावी-घटनाओं को चित्रित करता है।

हम प्राकृतिक में विश्वास करते हैं, कार्य-कारण की अखण्डित और अखण्ड परंपरा में। हम प्रकृति से बाहर किसी भी चीज के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते। हम किसी ऐसे ईश्वर में विश्वास नहीं करते, जो धूप-बत्ती जलाने, दण्डवत्-प्रणाम करने, घंटी बजाने, भजन गाने, माला जपने, प्रार्थनाएं करने और व्रत रखने से प्रसन्न किया जा सकता है, किसी ऐसे ईश्वर में जो श्रद्धा या भय के कारण की कई खुशामद का भाजन बनता है।

हम प्राकृतिक में विश्वास करते हैं। हमें शैतानों, भूत-प्रेतों अथवा नरकों का कोई भय नहीं। हमारा विश्वास है कि ये महात्मा, आकाशीय-शरीर, आत्माओं का शरीरी होना, सम्मोहन, भविष्यवाणियां, दूसरों के मन की बात जान लेना, ईसाई-विज्ञान आदि जितनी बातें हैं, सब ठग-विद्या है। इनकी सच्चाई का समर्थन बहुत करके अयोग्य ईमानदार आदमियों की साक्षी से ही होता है। हमारा विश्वास है कि यह विद्या ईमानदार के सोने को ठगती है और पाप पर पुण्य का पर्दा डालती है।

हम जानते हैं कि लाखों-करोड़ों आदमी जीवन की समस्या सुलझाने के लिए, भाग्य की परीक्षा करने के लिए और भविष्य के रहस्यों का पता लगाने के लिए असंभव के पीछे दौड़ रहे हैं-प्रकृति से परे की किसी शक्ति से सहायता पाने के प्रयत्न में सलग्न हैं। हम जानते हैं कि उनके सारे प्रयत्न बेकार हैं।

हम प्राकृतिक में विश्वास करते हैं। हम घर और चूल्हे में, स्त्री बच्चों और मित्रों में, इस संसार की वास्तविक चीजों में विश्वास करते हैं। हम वास्तविक घटनाओं में, ज्ञान में, मस्तिष्क के विकास में विश्वास करते हैं। हम मिथ्या-विश्वास को दूर फैंकते हैं और विज्ञान का स्वागत करते हैं। हम भुलावों को, गलतियों को, असत्य को दूर भगाते हैं और सत्य से चिपकते हैं। हम अज्ञात को सिंहासन पर बिठाकर अपने अज्ञान के सिर पर ताज नहीं रखते। हम ज्ञान के सूर्य की ओर पीठ करके अपनी छाया को परमात्मा समझने की गलती नहीं करते।

हम अपने को गुलाम नहीं बनाते। हमें न किसी का नेता बनना है और न किसी का अनुयाई। हमारी कामना है कि प्रत्येक मानव अपने प्रति सच्चा हो, अपने आदर्श के प्रति सच्चा हो। उसे न लालच का लोभ हो और न धमकी की परवाह। हम न पृथ्वी पर ही किसी तानाशाही को चाहते हैं और न आकाश में।

हम जानते हैं कि मिथ्या-विश्वासों ने हम में भय उत्पन्न किया है, हमें निद्रालु बनाया है, हम में अंध-श्रद्धा और कट्टरता पैदा की है, हमें भिखारी और भिखमंगा बनाया है। हमें अत्याचार और प्रार्थनाओं का प्रसाद दिया है। हमें पवित्र और दरिद्र बनाया है, हमें साधु-संत और दास दिए हैं और दिए हैं रोग तथा मृत्यु।

हम जानते हैं कि जो कुछ हमारे पास मूल्यवान

है वह सब विज्ञान की देन है। एकमात्र विज्ञान ही सभ्य बनाने वाला है। इसने गुलामों को मुक्त किया है, नंगों को कपड़े पहनाए हैं, भूखों को भोजन दिया है, जीवन को लंबा किया है, हमें चूल्हों वाले घर दिए हैं, चित्र दिए हैं, पुस्तकें दी हैं, जहाज दिए हैं, रेलें दी हैं, तार दिए हैं, समुद्री तार दिए हैं और ऐसे इंजन दिए हैं, जो बिना थके असंख्य पहियों को घुमाते रहते हैं।

विज्ञान ही वास्तविक मुक्तिदाता है। यह ईमानदारी को ढोंग से अधिक महत्त्व देगा और दिमागी सच्चाई को अंध-श्रद्धा से। यह उपयोगिता के धर्म की शिक्षा देगा। यह कट्टरपन के सभी रूपों को नष्ट कर देगा। यह विचारहीन श्रद्धा की अपेक्षा विचारपूर्ण जिज्ञासा को अधिक महत्त्व देगा। यह हमें पादरी-पुरोहितों, सिद्धांतियों और साधु-संतों के स्थान पर दार्शनिक, विचार और स्वतंत्र खोज करने वाला देगा। यह दरिद्रता और अपराधों का नाश कर देगा और इन सबसे बढ़कर महान, ऊंची और श्रेष्ठ बात यह करेगा कि समस्त संसार को स्वतंत्र कर देगा। ...(क्रमशः)

कर्नल इंगलसोल की पुस्तक 'स्वतंत्रचिंतन' में से)

★★★

इस्लाम में हराम

युरोप में जब प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार हुआ तो उसे इस्लाम में हराम करार दे दिया गया। क्योंकि उससे पहले मुस्लिम उलेमा वजू करके कुरान व हदीस की किताबों को हाथों से लिखते थे। उलेमाओं का मानना था कि ये नापाक मशीन है, जिस पर अल्लाह और रसूल का कलाम छापना हराम है लेकिन अब ये पूरी तरह हलाल हो गई है।

लाउडस्पीकर जब आया तो उसकी आवाज को गधे की आवाज से तुलना कर उसे शैतानी यंत्र करार दे दिया गया. लेकिन आज हर मस्जिद और आलिम के मजलिस के लिए जरूरी है।

रेलगाड़ी आई तो उलेमाओं ने फरमाया कि हमारे नबी ने कयामत की एक निशानी ये भी बताई थी कि लोहा लोहे पर चलेगा, लेकिन आज... माशा-अल्लाह उलेमा इसी लोहे के बर्थ पर नमाजें अदा करते नजर आते हैं।

हवाई जहाज का जब चर्चा आम हुआ, तो उलेमाओं ने कहा कि जो इस लोहे में उड़ेगा उसका निकाह खत्म हो जाएगा. लेकिन जाहिर है कि आज अल्हमदुलिल्लाह इसी लोहे पर उड़ कर मुसलमान हज व उमरा की नेकियां बटोर रहे हैं।

अंग्रेजों ने जब नई चिकित्सा पद्धति को अपनाया तो टीके पर भी फतवा लगा, ऐसी लम्बी लम्बी बहसें हुईं कि अगर उन्हें एक जगह जमा करके पढ़ा जाए तो आदमी हंसते हंसते लोट पोट हो जाए।

मुर्गियों पर भी फतवे लगे. ऐसी घरेलू मुर्गी जो बाहर से दाना चुग कर आई हो उसे हलाल नहीं किया जा सकता. पहले उसे तीस दिनों तक दड़वे में रखा जाए फिर हलाल किया जाए। पोल्ट्री फार्म की मुर्गी आई थी तो उसके अंडों पर फतवा लगा, क्योंकि उन अंडों का कोई बाप नहीं था।

फोटो खिंचाना हराम है लेकिन आज कौन सा ऐसा मुसलमान है जो इससे इन्कार करता हो. सऊदी अरब जैसा कट्टर मुस्लिम देश भी नहीं।

टीवी को हराम ही नहीं बल्कि उसे शैतानी डिब्बा कहा गया. जमाअतुतदावा के एक मासिक पत्रिका में उसके खिलाफ लगातार लेख छपते रहे. लेकिन आज उसी के बड़े रहनुमा इसी शैतानी डिब्बा में अपनी ईमान से भरी तकरीर से उम्मत को नवाजते रहते हैं. और भी बड़े बड़े उलेमा तो ज्यादा समय इसी डिब्बे में गुजारते हैं...!!

बाकी सब खैरियत है।

मेरे मित्र javed khan di wall से

(साभार आह्वान पत्रिका)

★

ब्रह्मांड में हमारी औकात क्या है ?

-शरद कोकास
मो. 8871665060

रोजमर्रा की जिंदगी में हमारे धैर्य की रोज परीक्षा होती है । जब हमें पता चलता है कि किसी ने हमारी किसी बात को लेकर विपरीत टिप्पणी की है तो हम अपना आपा खो बैठते हैं और गुस्से में कहते हैं 'आखिर उसकी औकात ही क्या है बड़ा आया हमें ज्ञान देने वाला' " लेकिन सच्चाई यह है कि इस दुनिया में हम अपनी ही औकात नहीं जानते । हम अपने अहं में इतने डूबे होते हैं कि अपने अलावा हमें कुछ नजर नहीं आता। अपनी औकात यदि हम जानते भी हैं तो उसका दायरा अपने घर या ज्यादा से ज्यादा अपने पड़ोस या अपने शहर तक होता है। ऐसे लोगों के लिए ही यह कहावत बनी होगी कि 'अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।"

इस कहावत के अर्थ में एक व्यंजना है, हम कुत्ते हों या शेर- कहलायेंगे तो पशु ही ना। बेहतर है हम मनुष्य की तरह इस बारे में सोचें कि इस ब्रह्मांड में हमारी क्या औकात हो सकती है। आप कहेंगे, यह तो हमने कभी सोचा ही नहीं। उफ.. य ह ब्रह्मांड भी क्या बला है।

मैं फिर से दोहराना चाहूँगा कि हमारी पृथ्वी, अन्य ग्रहों व सूर्य को मिलाकर एक सौरमंडल बनता है। ऐसे अनेक सौरमंडलों से बनती है आकाशगंगा और ऐसी अनेक आकाशगंगाओं से मिलकर बनता है ब्रह्मांड । यह ब्रह्माण्ड सृष्टि के प्रारंभ से ही उपस्थित है और इसका निर्माण किसी ने नहीं किया है। इस असीमित ब्रह्मांड के बारे में जानने के लिए एक जीवन बहुत छोटा है। लेकिन हमें यह एक जीवन ही मिला है और अगला जन्म होना नहीं है -इसलिए थोड़ा बहुत तो हमें इसी जीवन में इस बारे में जानना ही चाहिये। यह तय करने के लिए कि इस ब्रह्मांड में हम कहाँ हैं, चलिए एक छोटा सा गणित और हल करते हैं ।

मान लीजिये हमारी पृथ्वी की आबादी लगभग छह सौ करोड़ है, इस तरह हम हमारी पृथ्वी के 600 करोड़वें हिस्से हैं। हमारा सौर परिवार हमारी आकाशगंगा का 64 करोड़वाँ हिस्सा है तथा हमारी पृथ्वी हमारी आकाशगंगा का 25 हजार करोड़वाँ हिस्सा है। अब बताइये इस आकाशगंगा में हम कहाँ हुए? फिर ऐसी करोड़ों आकाशगंगाएं ब्रह्मांड में हैं तो हम ब्रह्मांड में कहाँ हुए ?

गणना छोड़िये, यह सोचिये कि जब हम ब्रह्मांड में इतने नगण्य हैं तो मामूली कुत्ते, बिल्ली, चीटीं और मच्छर की क्या स्थिति होगी? उनसे भी छोटे हैं कीटाणु जो आकार में मिलीमीटर के हज़ारवें भाग तक होते हैं जो केवल माईक्रोस्कोप से देखे जा सकते हैं और जिन्हें माईक्रोमीटर में नापते हैं। इनसे भी छोटे होते हैं पदार्थ के अणु ।

अणु के विभिन्न हिस्से हैं परमाणु जो पदार्थ का सूक्ष्मतम् भाग है। समस्त ब्रह्मांड इन्ही अणुओं से बना है। परमाणु को इलेक्ट्रोन, प्रोटान व न्यूट्रान में विभाजित कर सकते हैं। यह क्वार्क से बने होते हैं। ये मूलभूत कण हैं, इलेक्ट्रोन इनमें सबसे छोटा कण है। यह वैज्ञानिक जानकारी है जिसे आपने किताबों में भी पढ़ा होगा ।

फिलहाल आप इतना ही सोचिये कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक मनुष्य के रूप में हमारी स्थिति कितनी नगण्य है ' और यह भी कि हमें किस बात का घमंड है।

(लेखक की शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक 'मस्तिष्क की सत्ता' से)

✶

मंदिरों के चमकदार पत्थर हैं फिजूल के,
ज़िंदगी बदलेंगे बच्चों की, श्यामपट स्कूल के।
-ख़ाकसार

वैचारिक एवं वैज्ञानिक संघर्ष के पुरोधा क्रांति पुरुष

महामना रामस्वरूप वर्मा

निष्कलंक, निष्पक्ष, स्वयं चेता मानवतावादी!
लोभ नहीं धन, पद का चिंतक, त्यागी, समतावादी!
जिसके तर्क अकाट्य विरोधी भी सुनते हों आतुर!
किया असंभव को भी संभव चाहे जितना भी हो दुष्कर!!

उत्तर भारत में सर्वाधिक बौद्धिक वैज्ञानिक एवं वैचारिक संघर्ष के पुरोधा, क्रांति सृष्टा महामना राम स्वरूप वर्मा का जन्म 22 अगस्त सन् 1923 ई० को कानपुर जनपद की राजपुर विधान सभा के अंतर्गत ग्राम गौरीकरन में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। इनके बाबा का नाम रामगुलाम व पिता का नाम वंश गोपाल तथा माता का नाम सुखिया था। वर्मा जी चार भाई क्रमशः काशी प्रसाद, मोहन लाल, मिजाजीलाल व स्वयं वर्मा जी थे। वर्मा जी के पूर्वज कुर्मी जाति के थे, जिनकी उपजाति कटियार थी। वर्मा जी के पारदर्शी जीवन में तथागत बुद्ध की बौद्धिकता (वैज्ञानिकता), कबीर का अक्खड़पन, महात्मा फूले की सामाजिक क्रांति, शासन प्रशासन में राजर्षि शाहू जी जैसी भागीदारी की सोच, बाबा साहेब डा० अम्बेडकर जैसे शोषण के प्रति विद्रोही तेवर, लौह पुरुष सरदार पटेल जैसी कृषक हितों की भावना के अतिरिक्त उनकी वाणी से विषमतावादी संस्कृति की जगह मानवतावादी संस्कृति की स्थापना हेतु आचार-विचार, संस्कार एवं त्यौहार में आमूल चूल परिवर्तन करने की अंतहीन विचारधारा प्रवाहित होती हुई दिखायी देती है, उनका नाम और विचार सुनकर यथास्थिति वादियों का मानसिक संतुलन बिगड़ने लगता और पैरों के नीचे जमीन खिसकती प्रतीत होने लगती। मानवीय वर्मा जी छात्र जीवन से ही स्वतंत्रता आंदोलनों में रूचि लेने लगे थे। मानवीय वर्मा जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन् 1948 में हिन्दी से एमए करके आगरा विश्वविद्यालय से 1951 में विधि की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान लेकर प्राप्त की। वे कुशाग्र बुद्धि थे, जिससे हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, दर्शन शास्त्र आदि विषयों में भी गहन अध्ययन प्राप्त करके विशेषज्ञता प्राप्त की थी। वर्मा जी ने आईएएस की परीक्षा उत्तीर्ण की थी, परंतु सरकारी सेवा में जाने के बजाये सामाजिक संघर्ष का रास्ता चुना। इसलिए साक्षात्कार नहीं दिया। विदेशी आर्यो द्वारा देश के मूल निवासी उत्पादकों का पीढ़ी दर पीढ़ी गुलाम व लाचार रखकर स्वयं को श्रम कार्यो से पूर्णतया मुक्त कर श्रेष्ठ एवं शासक बनाए रखने के लिए बनाई गई वर्ण एवं जाति व्यवस्था को मिटाने के लिए दिन रात मेहनत करने वाले किसानों, मजदूरों का धर्म एवं जाति के नाम पर हो रहे शोषण उत्पीड़न से उद्वेलित होकर वर्मा जी समाजवादी आंदोलन से जुड़े और डा० राममनोहर लोहिया के सम्पर्क में आकर अपनी चिंतन क्षमता से शीघ्र ही उनके राजनीतिक सलाहकार हो गए। डा० लोहिया की सोच थी कि समाजवादियों को आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में संभव समता (समाज के विभिन्न वर्गो की भावनाओं अर्थात् सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में उनके द्वारा समता के व्यवहार की संभावना) का व्यवहार करना चाहिए। वर्मा जी का मानना था कि सदियों से अपमानित व निरादरित लोगों के साथ समता का व्यवहार करने की आवश्यकता है। संभव समता के आधार पर सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में विषमता का लाभ उठा रहे लोग स्वेच्छा से कोई त्याग करने वाले नहीं हैं। इस नाते संभव समता के स्थान पर सचेत समता स्थापित करने का काम वर्मा जी ने किया। जहां लोहिया जी राजसत्ता प्राप्ति को सामाजिक उत्थान का आधार मानते थे, वहीं वर्मा जी समानता का मूल राजसत्ता को

मानने से इन्कार करते थे। डा० लोहिया पुरुषों तक सीमित रखकर समाजवादी आंदोलन के पक्षधर थे। वहीं वर्मा जी स्त्री-पुरुष, बच्चे, बूढ़े अर्थात सामाजिक संरचना की समस्त इकाइयों को बराबरी का हक दिए जाने के पक्षधर थे। उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। इन मुद्दों पर डा० लोहिया से उनका तर्क-वितर्क लगातार तीन दिनों तक चला और अंततः लोहिया जी ने वर्मा जी की सोच से सहमत होकर इसकी जिम्मेदारी भी वर्मा जी को सौंप दी। सोशलिस्ट पार्टी वर्गविहीन और वर्ण विहीन समाज स्थापित करना चाहती थी, किंतु उसके अधिकांश राजनैतिक मठाधीश जो अभिजात्य वर्ग से थे। इसका व्यवहारिक स्वरूप नहीं देना चाहते थे। गया बिहार में आयोजित सोशलिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सम्मेलन में वर्मा जी ने अपनी (अर्जक संघ की) वैज्ञानिक एवं मानववादी विचारधारा को अपनाने का प्रस्ताव रखा, जिसमें स्वर्ण समाजवादियों ने एकजुट होकर इस प्रस्ताव का विरोध किया। सोशलिस्ट पार्टी की कथनी करनी का अंतर देखकर वर्मा जी ने कहा कि पार्टी केवल सत्ता पाना चाहती है। वास्तव में सामाजिक परिवर्तन नहीं चाहती है, तब वर्मा जी ने दुखी होकर सोशलिस्ट पार्टी छोड़ दी और अर्जक संघ की विचारधारा को आधार बनाकर समाज दल नामक राजनैतिक पार्टी का गठन किया तथा उसी समय बिहार के लेनिन महान क्रांतिकारी बाबू जगदेव प्रसाद ने भी सोशलिस्ट पार्टी के कथनी करनी के अंतर से दुखी होकर सोशलिस्ट पार्टी छोड़कर शोषित दल का गठन किया। वर्मा जी एवं बाबू जगदेव प्रसाद की वैचारिक समता ने आगे चलकर दोनों दलों का विलय कर शोषित समाज दल का नाम दिया। वर्मा जी ने कानपुर जिले के राजपुर विधान सभा का प्रतिनिधित्व वर्ष 1957, 1967, 1969, 1980, 1986 व 1991 में किया। मानवीय वर्मा जी 1967 मे उत्तर प्रदेश की चौधरी चरण सिंह की संविद सरकार के वित्त मंत्री बने वर्मा जी ने वित्त मंत्री के रूप मे जनता पर लागू तीन करों को समाप्त करके कर्मचारियों के महंगाई भत्ते बढ़ाकर बिना कोई नवीन कर लगाए ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित करते हुए बीस करोड़ के लाभ का बजट हिन्दी में प्रस्तुत करके आर्थिक जगत में हलचल पैदा कर दी। सारे विभागों से अंग्रेजी टाइपराइटरों को हटाकर हिन्दी टाइपराइटरों को रखवाकर राष्ट्र भाषा के प्रति अपने लगाव को स्पष्ट किया। हिन्दी के देशव्यापी आंदोलन में वर्मा जी ने सरकार में रहते हुए कई बार जेल यात्रा की। वर्तमान में जहां कुर्सी के लिए महामना फूले, शाहू, अम्बेडकर आदि के विचारों एवं शोषितों, पिछड़ों के हितों की बलि देने में राजनैतिक दल व राजनेता नहीं हिचकते, वहीं सिद्धांतों व आदर्शों की व्यवहारिक राजनीति करने वाले महामना वर्मा जी ने इंदिरा जी व वी.पी. सिंह द्वारा दिए गए मुख्यमंत्री पद के लाभ को नकार कर अपने वैचारिक व्यवहार पर धब्बा नहीं लगने दिया। वर्मा जी का चरित्र निष्कलंक व पूरी तरह से निष्पक्ष रहा है। प्रतिपक्ष के विधायक के रूप में उनके द्वारा प्रस्तुत रेलवे टिकट (कूपन) संदर्भित विधेयक का विधान सभा में पास होना उनकी महान योग्यता का एक अध्याय है। वे महान समाज शास्त्री विधिवेत्ता, महान दार्शनिक, असाधारण क्षमता के राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्री थे। उनका मत था कि भारतीय सामाजिक विषमता में उच्च वर्गीय एवं उच्च वर्णीय नेतृत्व के कारण राजनीति में अधिकांश पिछड़े, दलित, अल्प संख्यक परंपरागत मानसिकता के नेतृत्व के अनुगामी होकर मात्र उनका झोला उठाने वाले पिछलग्गू बने रहते थे। पिछड़ों, दलितों व अल्पसंख्यकों का वही हित कर सकता है, जो स्वयं चेता और आत्मविश्वासी हो। वर्मा जी ने शोषित समाज दल का लिखित सिद्धांत, वक्तव्य, विधान और कार्यक्रम देकर मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित राजनीति का रास्ता दिया। अपने समय के वे एक मात्र ऐसे विधायक थे, जिन्होंने विधान सभा द्वारा बढ़ाया गया विधायकों का भत्ता जनता पर बोझ कहकर लेने से इन्कार कर दिया। इसके बावजूद भत्ते की बढ़ी हुई धनराशि को वर्मा जी के नाम से उनको भेजा गया, किंतु उन्होंने उसे न लेकर अपनी दृढ़ता का परिचय दिया। उन्हें कभी भी धन व पद का मोह नहीं रहा। उत्तर प्रदेश की संविद सरकार के मंत्री के रूप में उन्होंने बाबा साहब डा० अम्बेडकर का साहित्य प्रदेश के सभी सरकारी पुस्तकालयों में रखवा दिया, किंतु मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह को यह स्वीकार नहीं हुआ, जिससे चौधरी चरण सिंह ने अपने स्तर से सारा साहित्य वापस करवा लिया। डा० आम्बेडकर की पुस्तक 'जाति भेद का उच्छेद और सम्मान के लिए धर्मान्तरण करें' को असामाजिक कहकर जब्त कर लिया गया। वर्मा जी ने अर्जक संघ के क्रांतिकारी नेता पैरियार

ललई सिंह यादव के माध्यम से साहित्य जब्ती को मानवीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय में चुनौती दी, जिसमें तीन न्यायाधीशों की पूर्ण पीठ ने प्रतिबंध समाप्त कर दिया। विपक्षी विधायक की हैसियत से वर्मा जी ने पुनः साहित्य कोसरकारी पुस्तकालयों में रखवाने का प्रस्ताव विधान सभा में रखा, जो बहस के बाद विषमता वादियों की बहुलता के कारण अपने वैचारिक व्यवहार पर धब्बा नहीं लगने दिया। वर्मा जी का चरित्र निष्कलंक व पूरी तरह से निष्पक्ष रहा है। प्रतिपक्ष के विधायक के रूप में उनके द्वारा प्रस्तुत रेलवे टिकट (कूपन) संदर्भित विधेयक का विधान सभा में पास होना उनकी महान योग्यता का एक अध्याय है। वे महान समाज शास्त्री विधि वेत्ता, महान दार्शनिक, असाधारण क्षमता के राजनैतिज्ञ और अर्थशास्त्री थे। उनका मत था कि भारतीय सामाजिक विषमता में उच्च वर्गीय एवं उच्च वर्णीय नेतृत्व के कारण राजनीति में अधिकांश पिछड़े, दलित, अल्प संख्यक परंपरागत मानसिकता के नेतृत्व के अनुगामी होकर मात्र उनका झोला उठाने वाले पिछलग्गू बने रहते हैं। पिछड़ों, दलितों व अल्प संख्यकों का वही हित कर सकता है, जो स्वयं चेता और आत्मविश्वासी हो। वर्मा जी ने शोषित समाज दल का लिखित सिद्धांत, वक्तव्य, विधान और कार्यक्रम देकर मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित राजनीति का रास्ता दिया। अपने समय के वे एक मात्र ऐसे विधायक थे, जिन्होंने विधान सभा द्वारा बढ़ाया गया विधायकों का भत्ता जनता पर बोझ कहकर लेने से इन्कार कर दिया। इसके बावजूद भत्ते की बढ़ी हुई धनराशि को वर्मा जी के नाम से उनको भेजा गया, किंतु उन्होंने उसे न लेकर अपनी दृढ़ता का परिचय दिया। उन्हें कभी भी ध ान व पद का मोह नहीं रहा। उत्तर प्रदेश की संविद सरकार के मंत्री के रूप में उन्होंने बाबा साहब डा. अम्बेडकर का साहित्य प्रदेश के सभी सरकारी पुस्तकालयों में रखवा दिया, किंतु मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह को यह स्वीकार नहीं हुआ, जिससे चौधरी चरण सिंह ने अपने स्तर से सारा साहित्य वापिस करवा लिया। डा. अम्बेडकर की पुस्तक जाति भेद का उच्छेद और सम्मान के लिए धर्मान्तरण करें को असामाजिक कहकर जब्त कर लिया गया। वर्मा जी ने अर्जक संघ के क्रांतिकारी नेता पैरियार ललई सिंह यादव के माध्यम से साहित्य जब्ती को माननीय इलाहाबाद उच्च न्यायालय में चुनौती दी, जिसमें तीन न्यायाधीशों की पूर्ण पीठ ने प्रतिबंध समाप्त कर दिया। विपक्षी विधायक की हैसियत से वर्मा जी ने पुनः साहित्य को सरकारी पुस्तकालयों में रखवाने का प्रस्ताव विधानसभा में रखा, जो बहस के बाद विषमता वादियों की बहुलता के कारण उन्हीं की प्रेरणा है। वर्मा जी सिद्धांतों के प्रति कठोर किंतु व्यवहारिक रूप से अत्यंत करूणावान थे। वर्मा जी ने राजपुर क्षेत्र के किसानों की खेती की सिंचाई समस्याओं के समाध ाान हेतु वर्ष 1974 में यमुना नदी से लिफ्ट करके नहर बनाए जाने के लिए अमराहट पम्प कैनाल योजना नामक जेलभरो आंदोलन चलाया और क्षेत्र के किसानों के लिए नहर मंजूर करवायी, परंतु अभी तक स्वीकृति के अनुरूप सरकार द्वारा नहर का कार्य पूरा नहीं कराया है, जिससे किसानों को नहर का पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा है।

वर्मा जी का विवाह मात्र 11 वर्ष की आयु में हुआ था, किंतु पत्नी का विदाई से पहले ही देहांत हो गया। माननीय वर्मा जी ने अपना पूरा जीवन विधुर के रूप में बिताया और अपने निष्कलंक चरित्र पर तनिक भी आंच नहीं आने दी। सामाजिक समता एवं मानवीय सम्मान की लड़ाई लड़ते हुए वर्मा जी ने कभी अपने खाने-पीने को महत्व नहीं दिया, जिससे वे कई बीमारियों के शिकार हो गए। अल्सर व पार्किसन्स जैसी बीमारियां भोजन के अभाव में हुयी। अपनी बीमारियों व स्वास्थ्य की चिंता किए बगैर वह अपना संघर्ष निरंतर चलाते रहे। मानवीय वर्मा जी ने समाज के मार्गदर्शन के लिए दर्जनों पुस्तकें लिखीं जो पठनीय हैं। अंततः 19 अगस्त 1998 को दिन में ढाई बजे त्याग पुरुष, प्रखर वक्ता, कुशल लेखक व पत्रकार, महान चिंतक एवं उत्तर भारत के कार्लमार्क्स कहे जाने वाले महामानव राम स्वरूप वर्मा यशाकायी हो गए। वर्मा जी का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ विद्युत शवदाह ग्रह भैंसाकुण्ड लखनऊ में हुआ, उनका संघर्ष सदैव अमर एवं हम सबके लिए मार्गदर्शक रहेगा।

-एडवोकेट रवीन्द्र कुमार कटियार

प्रांतीय उपाध्यक्ष (अर्जक संघ उत्तर प्रदेश)।

✶

स्टीफन हॉकिंग-चला गया सितारों का खोजी..

-डॉ. अमृत

कम्पयूटर एवं विभिन्न प्रकार के बेहद विकसित उपकरणों के साथ सुसज्जित कुर्सी पर बैठा एक व्यक्ति जोकि अपने शरीर का एक भी अंग नहीं हिला सकता था, यहां तक कि कण्ठ भी नहीं, परन्तु फिर भी बातचीत करता था। यह तस्वीर विश्व में बेहद जानी-पहचानी है, क्योंकि इस तस्वीर वाला व्यक्ति कोई आम नहीं, बल्कि विश्व का महान भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग है। बीते दिनों 14 मार्च के दिन सितारों का यह खोजी स्वयं भी एक सितारा बन गया एवं अलविदा कह गया। यह भी एक संयोग ही है कि स्टीफन हॉकिंग उस दिन गया, जिस दिन एक अन्य महान विज्ञानी एवं दार्शनिक कार्ल मार्क्स की भी बरसी पड़ती है और अल्बर्ट आईसटीन का जन्म दिन होता है।

8 जनवरी 1942 (गैलीलियो की मृत्यु से पूरे 300 वर्ष पश्चात्) को आक्सफोर्ड, इंग्लैंड में जन्मा स्टीफन हॉकिंग स्कूली स्तर की पढ़ाई के दौरान ही 'आईसटीन' कहलाने लग गया था, यद्यपि इस आईसटीन को प्रायः परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए काफी जोर-आजमाइश करनी पड़ती थी। डाक्टर एवं एक अनुसंधानकर्ता के घर में पैदा हुए हॉकिंग को उसके पिताजी डाक्टर बनाना चाहते थे, परन्तु उसकी रूचि गणित में थी। पिता को चिंता थी कि गणित की ग्रेजुएशन के पश्चात् स्टीफन हॉकिंग को नौकरी नहीं मिलेगी, इसलिए उन्होंने अपने बेटे को यूनिवर्सिटी कालेज, आक्सफोर्ड (जिसमें वे स्वयं पढ़े थे) में दाखिला लेने की सलाह दी, परन्तु हॉकिंग को गणित से दूर करना संभव नहीं था। इस कालेज में उस समय गणित की पढ़ाई भी नहीं होती थी। परिणाम स्वरूप हॉकिंग ने भौतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान के विषय रखे। कहते हैं कि इन तीन वर्षो में स्टीफन हॉकिंग ने बहुत कम पढ़ाई की, क्योंकि उनके अनुसार कालेज की पढ़ाई बेहद आसान एवं रूचिहीन थी। जब फाईनल परीक्षाओं का समय आया तो उसने तथ्यों को रट्टा लगाने वाले पेपर देने के स्थान पर थ्योरिटीकल भौतिक विज्ञान को अपना विषय चुना। आक्सफोर्ड के कालेज से ग्रेजुऐशन पूर्ण करके हाकिंग कैंब्रिज में आ गए।

वर्ष 1962 में उन्होंने कैंब्रिज में पीएचडी शुरू की। 1965 में उन्होंने 'फैल रहे ब्रह्माण्ड के लक्षण' के शीर्षक अधीन अपना डाक्टरेट थीसिस प्रस्तुत किया। ब्रह्माण्ड विज्ञान, स्पेस टाईम, गुरुत्व भौतिकी उनके अध्ययन के क्षेत्र बन गए, परंतु उनकी जीवन यात्रा इतनी आसान नहीं रहने वाली थी। आक्सफोर्ड के अंतिम वर्ष के दौरान उनके हाथ कुछ ढीले पड़ने लगे थे, वे कई बार सीढ़ियों से गिर पड़े थे। यह सिलसिला आगे बढ़ा तो डाक्टरों की मदद लेनी पड़ी। सन् 1963 में 21 वर्ष की यौवनावस्था में डाक्टरों ने उन्हें बताया कि वे 'मोअर न्यूरॉन डिसीज' नामक एक असाध्य रोग से पीड़ित हैं। डाक्टरों ने उनकी आयु अधिक से अधिक दो वर्ष बताई, परन्तु हॉकिंग ने कहा कि वह इतनी जल्दी और इस प्रकार से नहीं मर सकता। शायद उनकी जीवन के प्रति यह तीव्र इच्छा शक्ति ही थी कि जिस व्यक्ति के 23-24 वर्ष की आयु तक मर जाने की संभावना थी, वह 76 वर्ष तक जीवित रहा। 1963 में अपनी बीमारी का पता लगने से कुछ महीने पूर्व ही हॉकिंग अपने कालेज की ही जेन वाईल्ड से प्रेम में पड़ चुका था। भयानक बीमारी भी

एक ईसाई परिवार में जन्म लेने एवं एक भयानक रोग के दुख झेलने के बावजूद हाकिंग ने ईश्वर और धर्म का त्याग कर दिया। उन्होंने विज्ञान के नतीजों को पहल दी।

उनके प्यार को तोड़ न सकी, 1965 में उन दोनों ने विवाह करवा लिया। 1960 के दशक के अंत तक हॉकिंग पूरी तरह से व्हील-चेयर के साथ जुड़ गया तथा उसकी आवाज भी केवल उसके पारिवारिक सदस्यों को ही समझ में आती थी। 1970 के दशक के अंत तक यह भी संभव न रहा, परंतु उनके दिमाग को कोई भी विपत्ति सोचने से न रोक सकी। 1974 में वे कैम्ब्रिज में प्रोफैसर बन चुके थे, भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में उनका नाम एक जाना-पहचाना नाम बन चुका था। जब उनकी आवाज पूरी तरह से चली गई तो वे कंप्यूटर के सहारे से बोलने लगे। 1986 में एक कंप्यूटर पक्के तौर पर उनकी व्हील-चेयर के साथ जोड़ दिया गया।

हॉकिंग ने कितने ही खोज पत्र लिखे। सबसे अहम् खोज-पत्रों में से एक आईसटीन के 'गुरुत्व के आम सिद्धांत' को और आगे बढ़ाने वाला खोज-पत्र था, जिसमें हॉकिंग ने ब्रह्माण्ड के बिग-बैंग के साथ शुरू होने एवं 'ब्लैक-होल' में अंत के बारे में कहा। धीरे-धीरे उनका अध्ययन आगे बढ़ा तथा उन्होंने ब्लैक होल में से रिसने वाली 'हॉकिंग किरणों' का पता लगाया। उन्होंने बताया कि स्पेस-टाईम का कोई किनारा नहीं होता। उन्होंने आईन्सटीन के गुरुत्व के आम सिद्धांत को क्वांटम-भौतिकी के साथ जोड़ने एवं विकसित करने में अहम् भूमिका निभाई। अन्य कितनी ही खोजों को उनका नाम मिला, कितने ही पुरस्कार पद उनको प्रदान किए गए। 1979 में उनको कैंब्रिज में 'लुकास्यन प्रोफैसर आफ मैथेमेटिक्स' के पद पर नियुक्त किया गया। 1663 में स्थापित किया गया यह पद विश्व की सबसे अधिक ऊंची अकादमिक पदवियों में से एक है, जिसको प्राप्त करने का गर्व आइजैक न्यूटन, पाल डिशक जैसे चुनिंदा महान वैज्ञानिकों को ही हासिल हुआ है। हॉकिंग 1979-2009 के 30 वर्षो के लिए इस पद पर सुशोभित रहे।

परन्तु वैज्ञानिक दायरों से बाहर साधारण लोगों में उनकी प्रसिध्दि 'समय का संक्षेप इतिहास' नामक पुस्तक के साथ फैली। हॉकिंग उन चुनिंदा वैज्ञानिकों में से एक थे, जिन्होंने विज्ञान को सुधारा लोगों की भाषा में लिखकर इसे सभी मनुष्यों तक ले जाने के यत्न किए, 'समय का इतिहास' इन ही प्रयत्नों में से एक था। हाकिंग स्वयं भी एक स्थान पर कहते हैं कि एक समय आएगा, जब विज्ञान कुछ विशेष माहिरों तक सिंकुड़ा हुआ नहीं रहेगा, बल्कि वैज्ञानिक सरगर्मियों में समस्त मानवता शामिल हुआ करेगी तथा सभी लोग विज्ञान के भिन्न-भिन्न मसलों, अनुसंधानों में लग जाएंगे। यह पुस्तक लगातार 234 सप्ताह तक विश्व में सर्वाधिक बिक्री वाली पुस्तक बनी रही, अनेकों भाषाओं में अनुवाद हुई। अनेक विद्वानों के मतानुसार तो हॉकिंग की यह पुस्तक शेक्सपीयर के नाटकों के पश्चात् शायद गंभीर लेखन की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक है। 2010 में प्रकाशित 'द ग्रैंड डिजाईन' उनकी एक अन्य महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध पुस्तक है, जो कि उन्होंने साधारण लोगों के लिए लिखी। इसके अलावा भी उन्होंने कई पुस्तकें आम लोगों के लिए लिखीं। अपनी आयु के अंतिम दशक में उन्होंने बच्चों के लिए भी लिखना शुरू किया। उन्होंने अपनी पुत्री लूसी हाकिंग के साथ मिलकर पांच पुस्तकें बच्चों के लिए लिखीं। लूसी हाकिंग ने एक मुलाकात के दौरान अपने पिता के बच्चों के प्रति प्रेम के बारे में बताया है। लूसी के अनुसार जब वह एवं उसके दो भाई राबर्ट एवं टीमोथी अभी अल्पायु में थे, उनके घर में अक्सर, रोजाना ही अलग-अलग विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग को मिलने के लिए आते, लगातार बातों का सिलसिला चलता रहता था। इस दौरान बच्चें को उन वैज्ञानिकों के बीच में भाग दौड़ करने एवं झुरमुट डालने की पूर्ण स्वतंत्रता रहती थी। बच्चों के लिए उन वैज्ञानिकों से 'कुछ भी पूछने' का राऊंड चलता तथा बच्चे विज्ञानियों से ब्लैक होल एवं और जो कुछ उनकी समझ में आता, के बारे में पूछते तथा हाकिंग तरह-तरह के हंसी से भरपूर एवं सरल जवाब को गढ़ने में सबसे आगे होते। शायद यही प्रेम उनको बच्चों के लिए लिखने की ओर खींच लाया।

वैज्ञानिक के तौर पर एवं एक लेखन के तौर पर अपनी व्यस्तताओं के बावजूद हाकिंग न सिर्फ सामाजिक मामलों में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करते, बल्कि अपने वर्ग के पक्षधारी भी बने रहे। शायद यही गुण किसी शानदार विज्ञानी को महान वैज्ञानिकों की सूची में शामिल करवाता है। 1970 के

दशक में जब हाकिंग पूर्ण तौर पर व्हील चेयर पर निर्भर हो चुके थे तो उन्होंने अपनी पत्नी केसाथ मिलकर कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में उन जैसे लोगों एवं अन्य अंगहीन लोगों के लिए उनका कहीं पर आना-जाना आसान करने के लिए विशेष सुविधाओं का निर्माण करवाने के लिए यूनिवर्सिटी प्रशासन के खिलाफ मोर्चा लगाया, जिसके परिणामस्वरूप उनके लिए यूनिवर्सिटी ने रैंप का निर्माण करवाया, ताकि वे बिना किसी की सहायता के अपने कमरे एवं क्लास रूम में आ जा सकें। उन्होंने वियतनाम में अमेरिकी युद्ध की भर्त्सना की तथा युद्ध विरोधियों के मोर्चे में शामिल रहे। इसी प्रकार उन्होंने इराक पर थोपे गए युद्ध का भी विरोध किया। इस्राईल द्वारा फलस्तीन पर किए जा रहे हमलों के खिलाफ जब विश्व स्तर पर इस्राईल के बायकाट का अभियान चला तो हाकिंग बिना देरी किए उसमें शामिल हो गए। 2013 में इस्राईल में जब एक बड़े सम्मेलन में उन्हें आमंत्रित किया गया, तो उन्होंने उसमें जाने से मना कर दिया।

एक ईसाई परिवार में जन्म लेने एवं एक भयानक रोग के दुख झेलने के बावजूद हाकिंग ने ईश्वर और धर्म का त्याग कर दिया। उन्होंने विज्ञान के नतीजों को पहल दी, यहां तक कि 1980 के दशक में आकर उनके ये विचार उनकी पत्नी से दूरी उत्पन्न होने का भी एक कारण बने। परन्तु इसके बावजूद उन्होंने विज्ञान को ही आगे रखा। यह उन लोगों पर एक करारी चोट है, जोकि 'रिश्तों' की दुहाई देकर विज्ञान के साथ धोखा करते हैं, जीभी एक फफोला निकल आने पर ही मन्नतें मानना शुरू कर देते हैं। अपनी पुस्तक 'द ग्रैंड डिजाईन' में उन्होंने स्पष्ट ऐलान कर दिया कि कोई ईश्वर नहीं है तथा न ही किसी अलौकिक शक्ति का ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने में कोई हाथ है। ब्रह्माण्ड के पैदा होने के वैज्ञानिक नियम हैं तथा मनुष्य उन नियमों को समझ सकता हैं। यद्यपि उनके लेखन में, मार्क्स के कथानुसार 'अंग्रेजों वाला कच्चापन' मौजूद रहा, परन्तु उन्होंने स्पष्ट पक्ष लिया। इसी प्रकार उन्होंने वर्तमान पूंजीवादी सामाजिक आर्थिक ढांचे तथा इसके द्वारा पैदा की गई असमानता को डट कर लताड़ा। 2015 में एक मुलाकात के दौरान जब उनसे पूछा गया कि क्या भविष्य में रोबोट हमारे कार्यों के स्थान पर मानवों का स्थान ले लेंगे तो उन्होंने कहा कि हमें रोबोटों की चिंता करने के स्थान पर पूंजीवाद से अधिक डरना चाहिए। यदि सभी कुछ मशीनें पैदा करने लगीं और मशीनों द्वारा पैदा की गई दौलत का सुख सभी को मिले, इसके लिए आवश्यक यह होगा कि दौलत का एक समान बंटवारा हो, अन्यथा सभी धन-दौलत कुछ मुट्ठीभर लोगों के हाथों में एकत्र होता जाएगा तथा असमानता में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक वृद्धि होती चली जाएगी।

स्टीफन हाकिंग यद्यपि अब हमारे मध्य में नहीं रहे, परन्तु उनकी जुझारू जिंदगी, मृत्यु को चुनौती देने वाला उनका जिगरा तथा 'खुदी को कर बुलंद इतना' वाला उनका अंदाज उनके आविष्कार, बच्चों के लिए उनका प्रेम तथा साधारण लोगों के लिए उनकी चिंता, स्पष्ट पक्ष लेने वाला उनका साहस। सभी कुछ हमारे लिए तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक बना रहेगा।

साभार-'तबदीली पसंद नौजवानों की ललकार'

हिन्दी अनुवाद-बलवंत सिंह लेक्चरार

✶

पाठकों के ध्यानार्थ :

तर्कशील-पथ के लिए चंदा भेजना हुआ आसान

तर्कशील पथ मैगजीन में पेज 2 पर Paytm Code अंकित है जिसे स्कैन करके मैगजीन का सालाना सहयोग या पत्रिका का बकाया चंदा आसानी से भेजा जा सकता है। अगर किसी साथी के पास पेटीएम नहीं है या चलाना नहीं आता, तो किसी भी अन्य जानकार के माध्यम से भिजवाया जा सकता है। एडरैस वट्सअप कर सकते हैं, ताकि अमूल्य विचारों की पत्रिका आप तक पहुंचती रहे।

-गुरमीत सिंह

शराब से संबंधित भ्रामक प्रचार से बचने की जरूरत

-सुमीत सिंह
09779230173

शराब अन्य घातक नशों की भांति ही स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक नशा है। अत्यंत दुखदायी बात है कि हमारे समाज में शराब को इस अनुचित धारणा के तहत सामाजिक मान्यता देने का यत्न किया जाता है कि यह तो लोगों के लिए मनोरंजन करने के अलावा थकावट एवं गम दूर करने का एक बढ़िया साधन है। ऐसा भ्रामक प्रचार सुन कर और भी हैरानी होती है कि स्मैक, अफीम, हेरोइन, गांजा, चरस, कोकीन इत्यादि तो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक हैं, परन्तु शराब एक शाही नशा होने के कारण सेहत के लिए ज्यादा हानिकारक नहीं है। शराब शरीर के विभिन्न अंगों को किस प्रकार से नुक्सान पहुंचाती है, यह एक अलग विषय है, जो विस्तार की मांग करता है।

पंजाब की पिछली अकाली-भाजपा सरकार के स्वास्थ्य मंत्री सुरजीत ज्याणी ने तो एक हास्यास्पद एवं तथ्यों से रहित बयान देकर हद ही कर दी थी कि शराब कोई नशा नहीं है। उनकी भी साधारण लोगों की भांति यही समझ थी कि जो नशा खुद सरकार के द्वारा अधिकारित तौर पर बेचा जाता हो वह स्वास्थ्य एवं समाज के लिए हानिप्रद नहीं हो सकता। ऐसी सरकारी एवं सामाजिक स्वीकार्यता के कारण ही अधिकतर शादी समारोहों, निजी समागमों एवं पार्टियों में शराब को एक स्टेट्स सिम्बल के तौर पर परोसा जाता है। अब तो समाज के शिक्षित एवं मध्यम वर्ग द्वारा भी लैंगिक समानता दिखाने की आड़ में लड़की की शादी के अवसर पर भी शराब पीने पिलाने से किसी प्रकार का संकोच नहीं किया जाता।

हमें यह तथ्य समझने की जरूरत है कि शराब न केवल मानव की सेहत के लिए बेहद हानिकारक है, बल्कि नशेड़ी व्यक्ति के आर्थिक नुक्सान, गंभीर रोगों, घरेलु झगड़े, हादसों, अपमान एवं तनाव को बुलावा देने के लिए भी काफी हद तक जिम्मेदार है। सबसे अधिक खेदजनक पहलु यह है कि कई डाक्टरों द्वारा इस अप्रमाणित दावे का मिथ्या एवं भ्रामक प्रचार भी किया जाता है कि शराब के रोजाना दो पेग (60-90 मि.ली.) पीने से मानव के स्वास्थ्य को कोई हानि नहीं होती, बल्कि हृदय स्वस्थ रहता है। ऐसे दावों को निराधार प्रमाणित करने के लिए कुछ समय पूर्व घटित हुई एक घटना का जिक्र करना आवश्यक होगा।

दिल के रोगों से संबंधित एक प्रसिद्ध निजी अस्पताल की ओर से स्वास्थ्य जागरूकता अभियान की आड़ में अपने अस्पताल का प्रचार करने के लिए एक शहर में अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित लोगों के लिए एक सेमिनार करवाया गया। अस्पताल के हृदय रोगों के विशेषज्ञ डाक्टर द्वारा छोटे कैप्शनों की सहायता के द्वारा पर्दे पर हृदय के रोगों के कारणों के संबंध में अंग्रेजी में पूर्ण जानकारी दी जा रही थी परन्तु किसी को भी अधिक समझ नहीं आ रही थी। अपनी मातृभाषा का मुद्दई होने के नाते एवं सही जानकारी लेने के लिए मैंने डाक्टर को इसकी मातृ भाषा में व्याख्या करने का अनुरोध किया।

जब डाक्टर द्वारा यह बताया जा रहा था कि किसी व्यक्ति द्वारा शराब के दो पैग पीने से स्वास्थ्य पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता तो मैंने डाक्टर को तुरंत सवाल करते हुए कहा कि डाक्टर साहिब, कुछ समय पूर्व एक मेडिकल संस्था के द्वारा अलग-अलग मरीजों की चिकित्सीय जांच रिपोर्टों के आधार पर किए गए सर्वे से यह तथ्य सिद्ध हो चुका है कि हृदय, गुर्दे, जिगर, फेफड़े, ब्लड प्रैशर एवं मधुमेह की बीमारियों के ज्यादातर केस रोजाना शराब पीने वालों के साथ संबंधित होते हैं। क्या अब तक किसी

राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल कौंसिल ने आप के इस दावे को क्लीनिकली सही सिद्ध किया है कि शराब के रोजाना दो पैग पीने से स्वास्थ्य पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता?

मेरे द्वारा ऐसे गंभीर एवं स्पष्टट सवाल से असमंजस में फंसे डाक्टर ने इसका जवाब नहीं में देते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थाएं इस दावे को क्लीनिकली स्तर पर स्वीकार करने में एकमत नहीं हैं तथा कई माहिर डाक्टर इसके बिल्कुल विपरीत विचार भी रखते हैं। मैंने फिर से सवाल करते हुए डाक्टर से पूछा कि 'न तो आपका अस्पताल राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मेडिकल अनुसंधान संस्थाओं की मान्यता के बगैर शराब से संबंधित ऐसा मानव के स्वास्थ्य विरोधी झूठा दावा करके आम लोगों को गुमराह क्यों कर रहे हो? जाहिर है कि ऐसा गैर प्रमाणित दावा करके आप शराब के कारोबार से संबंधित कारखानों एवं कम्पनियों के साथ-साथ निजी अस्पतालों के व्यापारिक हितों की रक्षा करने के साथ-साथ लोगों के स्वास्थ्य के साथ सरेआम खिलवाड़ भी कर रहे हो। डाक्टर के पास मेरे इन सवालों का कोई स्पष एवं सही जवाब नहीं था।

दरअसल शराब का कारोबार जहां पर कार्पोरेट जगत का एक प्रमुख धंधा बन चुका है, वहीं पर बिना किसी निवेश के शासक वर्गो की आय का एक आसान एवं प्रमुख साधन भी है। इसके अतिरिक्त कई राजनीतिक नेता एवं उच्च पुलिस अधिकारी गुण्डा तत्वों की सहायता से नशों का नाजायज कारोबार करके करोड़ों रुपए कमाते हैं। इस लिए साम्राज्यवाद समर्थक शासक वर्ग एवं भ्रष्ट राजनेता कभी भी नहीं चाहेंगे कि लोगों में शराब एवं अन्य नशों के खिलाफ किसी प्रकार की कोई जागरूकता फैलाई जाए। इसए इनके वृहत व्यापारिक हित इसी गुप्त साजिश में समाए हैं कि अधिक से अधिक लोग अधिक से अधिक शराब समेत अन्य और नशों का सेवन करें एवं गंभीर रोगों का शिकार होकर अपने इलाज के लिए महंगे निजी अस्पतालों में अपना शोषण करवाते रहें। जाहिर है कि यदि अधिक संख्या में लोग अधिक मात्रा में नशों का प्रयोग करेंगे तो नशों के साथ-साथ निजी अस्पतालों, दवा कारखानों, जांच प्रयोगशालाओं एवं डाक्टरों का धंधा और भी अधिक फले फूलेगा।

इसलिए जन विरोधी शासक वर्ग, भ्रष्ट राजनेताओं एवं उच्च पुलिस अधिकारियों की साजिश के तहत मिलीभगत के कारण ही देश के अधिकतर राज्यों में हर वर्ष शराब के ठेकों की संख्या लगातार बढ़ती चली जा रही है। हर वर्ष कई चेतन एवं पंचायतों द्वारा गांव में ठेके खोलने के विरुद्धय प्रस्ताव पास करके सरकार एवं आबकारी विभाग को भेजे जाते हैं, परन्तु सरकार द्वारा राजस्व घटने के नुक्सान के तौर पर इन प्रस्तावों को कोई न कोई अनुचित आपत्ति लगा कर रद्द कर दिया जाता है। एक तरफ सरकारों द्वारा हर वर्ष शराब के नये कारखाने लगाने के परमिट जारी करने, शराब के ठेकों की संख्या में वृद्धि करना तथा सत्तासीन राजनेताओं द्वारा ड्रग माफिया का संरक्षण करना, परन्तु दूसरी ओर नशामुक्ति केंद्रों के उद्‌घाटन करना वर्तमान जनविरोधी सरकारों की दोगली एवं भ्रष्ट राजनीति बन चुकी है। स्पष्ट है कि हमारी सरकारें ही चाहती हैं कि लोगों का ध्यान उनकी बुनियादी समस्याओं एवं भ्रष्ट राजनीति से दूर हटाने के लिए उनको नशों के समुद्र में डुबोकर रखा जाए, ताकि वे नशों के आदी बनकर सरकार की जनविरोधी नीतियों एवं शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने के काबिल ही न रह सकें।

इसलिए कुछ प्रसिद्ध डाक्टरों द्वारा समय-समय पर मीडिया में शराब के दो पैग रोजाना पीने को स्वास्थ्य के लिए नुक्सान रहित कहना वास्तव में व्यक्ति को रोजाना शराब पीने की लत लाने और फिर सामर्थ्य बढ़ाने के लिए उकसाने की गुप्त जनविरोधी नीति है, जिसके विरुद्ध चेतन होने की आवश्यकता है। यही कारण है कि ज्यादातर लोग शराब को मनोरंजन का साधन समझ कर पीते हैं तथा बहुत से ऐसे भी हैं, जो जीवन में उदासी, निराशा, अकेलापन, घरेलू झगड़े, बेरोजगारी एवं अन्य कई प्रकार के तनाव से पीछा छुड़ाने के लिए रोजाना इसके आदी हो चुक हैं।

वास्तविकता यह है कि शराब पीने से क्षणिक खुशी अथवा राहत हासिल होने का भ्रम तो पाला जा सकता है परन्तु यह किसी भी समस्या को समाप्त करने का कोई हल नहीं है। नशा उतरने के

पश्चात् समस्या अथवा तनाव जैसी की तैसी ही सामने खड़ी रहती है। इसके विपरीत इससे पहले से ही दुखी व्यक्ति की समस्याओं में और भी वृद्धि होती है तथा वह इनका मुकाबला करने के बजाए आत्मविश्वास की कमी के कारण समस्याओं से भागने वाली मानसिकता अपनाने लग जाता है। ऐसे व्यकित नशों के बुरे प्रभाव के कारण कई बार हिंसक होकर अपराधी बन जाते हैं तथा कई तो रोग को अंतिम स्टेज पर पहुंचा देते है। या फिर निराश होकर आत्महतया कर लेते हैं। अफसोस है कि इसके पश्चात् पीड़ित परिवार केवल पछतावे की अग्नि में जलता रहता है।

इसलिए हमें शासक वर्गो की जनविरोधी राजनीति के साथ-साथ यह तथ्य भी समझने एवं औरों को समझाने की जरूरत है कि शराब भी अन्य नशों की भांति ऐसा घातक नशा है, जिसके रोजाना कम या अधिक मात्रा में सेवन करने से शरीर के प्रमुख अंग-गुर्दे, जिगर, दिमाग, आंखें, तंतु एवं खाद्य प्रणाली आदि खोखले होकर धीरे-धीरे कार्य करना बंद कर देते हैं। यदि समय पर इस पर नियंत्रण पाकर उचित डाक्टरी इलाज न किया जाए तो फिर नशेड़ी की मृत्यु को रोकना अत्यंत कठिन हो जाता है।

इसलिए भारतीय मेडिकल कौंसिल का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि वह कम मात्रा में रोजाना शराब का सेवन करने के हो रहे भ्रामक प्रचार के संबंध में मीडिया के द्वरा अपना डाक्टरी खोज मत स्पष्ट रूप में पेश करे ताकि आम जनता को शराब के स्वास्थ्य पर पड़ रहे बुरे प्रभाव के प्रति वैज्ञानिक स्तर पर सचेत किया जा सके। यदि सरकार अपने नागरिकों के स्वास्थ्य, खुशहाली एवं विकास के प्रति वास्तव में सहृदय है तो उसे देश में शराब समेत प्रत्येक नशे पर कठोर कानूनी पाबंदी लगानी चाहिए। यदि ऐसा संभव नहीं तो कम से कम शराब के कारखानों एवं ठेकों की संख्या में 50 प्रतिशत की कटौती अवश्य कर दी जाए तथा सार्वजनिक तौर पर शराब पिलाने वाले अहातों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए।

हमें भी यह तथ्य याद रखने की आवश्यकता है कि शराब हमारी जनपक्षीय संस्कृति का कभी भी हिस्सा नहीं रही और न ही होनी चाहिए। वैसे भी शराब की प्रत्येक बोतल पर 'शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' स्पष्ट तौर पर लिखा होता है। यदि ऐसी जानकारी के बावजूद हम इसका रोजाना कम या अधिक मात्रा में सेवन करते हैं तो फिर यह कोई अक्लमंदी की निशानी नहीं है। इसलिए हमें किसी भी खुशी अथवा गमी के समारोह अथवा किसी अन्य अवसर पर शराब अथवा किसी अन्य नशे का सेवन करने से बचना चाहिए।

इसलिए रोजाना शराब पीने वाले व्यक्तियों को इस आदत से छुटकारा दिलाने के लिए नशों की रोकथाम से संबंधित साहित्य का गहनता से अध्ययन करना चाहिए तथ किसी माहिर मनोचिकित्सक के साथ मशवरा करके उनके द्वारा दिए गए सुझावों एवं निर्देशों पर पूर्ण दृढ़ता से अमल करना चाहिए।

-हिन्दी अनुवाद-बलवंत सिंह

✶

पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने बिना बाइबिल के शपथ ली

स्पेन के प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज ने बिना बाइबिल लिए पद की शपथ ली। पेद्रो ने बिना बाइबिल के शपथ इसलिए ली है क्योंकि वो नास्तिक हैं।

अब तक के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि जब किसी प्रधानमंत्री ने बिना बाइबिल के शपथ ली हो।

मारियानो रखॉय की कुर्सी के जाने के बाद पेद्रो सांचेज स्पेन के प्रधानमंत्री बने हैं।

रखॉय की पार्टी के भ्रष्टाचार स्कैंडल में फंसने के बाद प्रधानमंत्री के पद से हटाने के लिए सांचेज को छह दूसरी पार्टियों का समर्थन मिला।

-BBC NEWS

------ बाबाओं के काले कारनामें ------

कैथोलिक चर्च के धर्मगुरु पर चला यौन शोषण मुकद्दमा!!!

आस्ट्रेलिया (सिटी मीडिया) : विश्व के कैथोलिक पादरियों के हजारों यौन उत्पीड़न के मामले सामने आ चुके हैं। 2001-10 के कालखंड में 3 हजार पादरियों पर यौन उत्पीड़न और कुकर्म के आरोप लग चुके हैं, जिनमें अधिकतर मामले 50 साल या इससे अधिक पुराने हैं। लेकिन कैथोलिक चर्च उस समय दागदार हो गया जब आस्ट्रेलिया में इन अपराधों के ऐतिहासिक आरोपों से घिरे देश सबसे वरिष्ठ कैथोलिक धर्मगुरु व वेटिकन के प्रमुख कार्डिकल पेल कैथोलिक चर्च के पहले ऐसे शीर्ष अधिकारी बन गए हैं, जिन पर आज मुकद्दमा चलाया गया। मेलबर्न में सुनवाई के दौरान पेल (76) भाव शून्य खड़े रहे। सुनवाई के दौरान उन्हें कई आरोपों का सामना करने का आदेश सुनाया गया। इनमें से आधे आरोप बेहद गंभीर हैं। मेलबर्न की मैजिस्ट्रेट ने कहा कि वह इस बात से संतुष्ट है कि कई आरोपों पर मुकद्दमा चलाने के लिए पर्याप्त सबूत हैं। उन्होंने मुकद्दमें की तारीख पर चर्चा के लिए कल सुनवाई करने का निर्देश दिया। बड़ी संख्या में पुलिस कर्मियों की मौजूदगी में अदालत में प्रवेश करने वाले पेल को इस शर्त पर जमानत पर रिहा किया गया कि वह आस्ट्रेलिया छोड़कर नहीं जाएंगे। उन्होंने पहले ही अपना पासपोर्ट जमा करा दिया है। बता दें कि जार्ज पेल पर आस्ट्रेलिया में कई बाल यौन अपराधों के आरोप तय किए जा चुके हैं। पेल से गत वर्ष अक्तूबर में आस्ट्रेलियाई पुलिस ने रोम में पूछताछ की थी। हालांकि उन्होंने इन आरोपों का खंडन किया था। पेल का कहना था कि वह इन सभी मामलों में निर्दोष हैं। उनके लिए यौन शोषण का विचार ही घृणित है। जब विक्टोरिया स्टेट पुलिस के अनुसार वकीलों से सलाह मशविरे के बाद कार्डिकल पर आरोप लगाए थे।

साधु ने किया महिला से दुष्कर्म आरोपित गिरफ्तार

पत्रिका नेटवर्क, राजस्थान पत्रिका डाटकाम

बाटोदाः संतान होने के नाम पर बैरखंडी गांव में महिलाओं को दवा देने का झांसा देकर दुष्कर्म करने के मामले में बाटोदा पुलिस ने गुरुवार को कथित एक साधु को गिरफ्तार किया है। आरोपित शिवलाल मीन निवासी प्यारा का नंगला खेचपुरी जिला दौसा है।

यह था मामला : थानाधिकारी विनोद कुमार ने बताया कि बामनवास निवासी महिला जिसका पीहर बैरखंडी में है, ने रिपोर्ट में बताया कि उसी शादी के बाद से अब तक संतान नहीं हुई। ऐसे में उसके पिता के बताए अनुसार बैरखंडी गांव स्थित एक मंदिर पर आश्रम बनाकर रह रहे साधु के पास पति के साथ दवा लेने गई थी जहां 13 मई को साधु ने उसके पति को बाहर धूणे के पास बिठा दिया, वहीं साधु उस महिला को कमरे में ले गया। जहां उससे दुष्कर्म किया एवं 6 पुड़िया दवा की देकर दूसरे दिन आने को कहा। यह बात पति को नहीं बताने के लिए धमकाया। साथ ही कहा कि यदि यह बात पति को बता दी तो वह एवं उसका होने वाला बच्चा मर जायेगा। शिवलाल ने महिला से तीन बार दुष्कर्म किया। बार बार दुष्कर्म की बात महिला ने अपने पति को बता दी। इस पर पति धर्म सिंह मीना ने पुलिस को अवगत कराया।

चिली में बच्चों के यौन शोषण में 14 पादरी बर्खास्त

सेंटियागो : चिली में बच्चों के यौन शोषण से जुड़े अपराध में लिप्त 14 पादरियों को बर्खास्त कर दिया गया है। यह मामला सामने आने पर पोप का फ्रांसिस ने चिली के बिशप को समन जारी किया था । इसके बाद शुक्रवार को देश के 34 पादरियों ने इस्तीफा दे दिया था। इन पादरियों पर 1080-90 के बीच फरनांडो कारडिमा द्वारा किए गए यौन अपराध को छुपाने व नज़रअंदाज करने का आरोप है।

(एएफपी) दैनिक जागरण, चण्डीगढ़ 24 मई 2018

✶

अंधविश्वास के चलते

तांत्रिक ने किसान से 27 लाख रुपए ठगे

संवाद सूत्र, टोहाना (फतेहाबाद)-तांत्रिक विद्या द्वारा महिला का इलाज करने के नाम पर उत्तर प्रदेश के एक तांत्रिक ने गांव डांगरा के एक किसान से सवा 27 लाख रुपए ठग लिए। पीड़ित किसान की शिकायत पर पुलिस ने उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर निवासी तांत्रिक राजा के खिलाफ ध ोखाधड़ी सहित अन्य धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया है। सिटी थाना पुलिस को दी शिकायत में गांव डांगरा के प्रेम सिंह ने बताया कि उसकी पत्नी शारदा बीमार रहती थी। दवाओं से ठीक न होने पर गांव में ही रह रहे उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के गांव खेड़ी निवासी मांगेराम जोगी ने उन्हें बताया कि मुजफ्फरनगर मं तांत्रिक राजा बड़ी से बड़ी बीमारी को ठीक कर देता है। मांगेराम जोगी के बुलावे पर तांत्रिक राजा अक्तूबर 2017 में गांव डांगरा में आया। उसने महिला से पूछताछ करने के बाद परिजनों को बताया कि इसे ओपरी-पराई की शिकायत है। इसके अलावा उनके घर में भूत प्रेत का साया है और सोने का खजाना भी दबा है। घर में हवन यज्ञ व पूजा करवने के साथ खुदाई भी जरूरी है। इस तरह तांत्रिक ने उनसे तीन बार में 27 लाख रुपए ठग लिए।✶ *-दैनिक जागरण 7-5-18*

चाची ने चार साल की बच्ची का गला रेता, बलि की आशंका

जागरण संवाददाता, यमुनानगर : मांडखेड़ी गांव में चाची ने चार साल की बच्ची की गला रेत कर हत्या कर दी। मामले में बलि की आशंका जताई जा रही है। मांडखेड़ी निवासी विजय कुमार ने बताया कि उनकी पांच बेटियां और बेटा है। वह और उसका छोटा भाई जयकुमार बिजली निगम में नौकरी करते हैं।

कुछ दिन पहले जयकुमार को उसके ससुरालिए राजपुरा (पंजाब) में तांत्रिक के पास ले गए। व उसके भाई व भाभी पूजा को ओपरी (भूत का साया) की बीमारी बता रहे थे। रविवार देर शाम साढ़े सात बजे परिवार के सभी लोग घर पर थे। रजनी पूजा की बच्ची के लिए दूध गर्म करने किचन में गई, तो पूजा उसके कमरे में चाकू के साथ पहुंची। इससे पहले कोई कुछ समझ पाता, पूजा ने चाकू से विजय की चार वर्षीय बेटी नंदनी की गर्दन काट दी। बाद में पैर रखकर गर्दन को तोड़ दिया। पुलिस ने भाई व भाभी को हिरासत में ले लिया है। चाकू भी बरामद कर लिया है।✶

-दैनिक जागरण

7-5-18

रांची में डायन बता दम्पति की हत्या, जमीन में दफनाया

रांची : रांची में नामकुम में डायन बिसाही का आरोप लगा एक दम्पति की हत्या भरी पंचायत में कर शव को जमीन में दफन कर दिया गया। मामला हुआगहातू पंचायत के उलास्तू सुकरूडीह गांव का है। घटना दो मई की है। मारे गए दम्पति में 55 वर्षीय लोहर सिंह मुंडा व उनकी पत्नी तेतरी देवी 50 वर्ष शामिल हैं। इस मामले में दम्पति के बड़े बेटे एतवा मुंडा के बयान पर गांव के 12 लोगों के खिलाफ नामजद प्राथमिकी दर्ज की गई है। गांव के लोग विगत कुछ वर्षो से दम्पति को डायन बताकर प्रताड़ित किया करते थे। उन्हें कई बार धमकी भी दी गई थी।✶ *दैनिक जागरण 11-5-18*

होंठ पर लाली, कान में बाली और साड़ी पहनता है यह मर्द

अमित तिवारी-जमशेदपुर : यह मर्द आधी रात को चौंका देता है। पत्नी का श्रृंगार बॉक्स लेकर खुद ही बैठ जाता है और मेकअप करने लगता है। होंठ पर लाली, कान में बाली और साड़ी पहनकर बिल्कुल महिलाओं की तरह दिखना चाहता है। इतना ही नहीं, वह अपनी पत्नी का कपड़ा भी चुरा लेता है। यह चौंकाने वाला मामला महात्मा गांधी मैमोरियल मैडिकल कालेज (एम.जी.एम.) अस्पताल के मनोरोग विभाग में सामने आया है। पति की हरकत से पत्नी परेशान रहती है। वह शर्म से दूसरे को भी नहीं बताती है। कारण कि उसका पति हंसी का पात्र न बन जाए। जब वह मनोचिकित्सक डाक्टर दीपक गिरि के पास पहुंची तो पता चला कि यह पैराफीलिया रोग है, जो किसी को भी हो सकता है। जमशेदपुर शहर में यह पहला मामला माना जा रहा है। हालांकि, सही ढंग से जांच होगी तो ऐसे मरीजों की संख्या बढ़ सकती है।

डा. दीपक गिरि ने बताया कि 95 प्रतिशत लोगों को इस बीमारी के बारे में बिल्कुल पता ही नहीं होता। वहीं कई लोग शर्म की वजह से इस बीमारी को बाहर लाना नहीं चाहते हैं, जबकि इसका इलाज पूरी तरह से संभव है। काउंसलिंग में मिली जानकारी के अनुसार कदमा की रहने वाली पीड़िता की शादी तीन साल पूर्व हुई है। प्रति एक निजी कंपनी में मैनेजर के पद पर कार्यरत है।

पत्नी शादी के बाद जब ससुराल पहुची तो पति की हरकत देखकर वह असहज महसूस करने लगी। एक दिन रात के दो बजे अचानक से नींद टूट गई। बैड पर पति नहीं था। इस दौरान पत्नी ने उठकर देखा तो उसका मेकअप बॉक्स लेकर पति श्रृंगार कर रहा था। साड़ी भी पहन रखी थी। इसे देखकर पत्नी के होश उड़ गए। उसने देखा कि पति ने लिपिस्टिक लगा रखी थी। पत्नी ने ऐसा करने की वजह पूछी तो पति ने दखल देने से मना कर दिया।✶

दैनिक जागरण-5-5-18

रमजान में अल्लाह को खुश करने के लिए कर दी बेटी की हत्या

जोधपुर : राजस्थान के जोधपुर जिले में एक शख्स ने अपनी चार साल की बच्ची की हत्या कर दी। पुलिस पूछताछ में शनिवार को उसने कहा कि रमजान के पवित्र माह में अल्लाह को खुश करने के लिए बच्ची को कुर्बान किया। घटना 7 जून को पीपाड़ शहर में हुई थी। पुलिस के अनुसार 7 जून की रात नवाब अली खुरैशी, उसकी पत्नी शबाना और दो बेटियां घर की छत पर सोई थी। करीब 3 बजे शबाना की आंख खुली, तो बड़ी बेटी रिजवाना नहीं दिखी। उसने उठकर देखा तो वह छत पर खून से लथपथ मिली। अस्पताल ले जाने पर डाक्टरों ने बच्ची को मृत घोषित कर दिया। शबाना ने अज्ञात के खिलाफ हत्या का केस दर्ज करवाया था। पुलिस ने शक के आधार पर बच्ची के पिता नवाब अली के साथ कड़ाई से पूछताछ की, तो उसने बेटी की हत्या की बात स्वीकार कर ली। उसने बताया कि अल्लाह को खुश करने के लिए ननिहाल गई हुई बेटी रिजवाना को गुरुवार को वापिस बुलाया। उसे शहर में घुमाया और मिठाई सहित पसंद की कई चीजें खिलाई। रात में रिजवाना को नींद से उठाकर कलमा पढ़ाया और फिर उसे कुर्बान कर दिया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।✶

-दैनिक भास्कर 11.6.18

एक साल के मासूम को बाबा ने गर्म सलाखों से दागा, हालत नाजुक

जयपुर। राजस्थान में आज भी लोग भोपाओं (बाबाओं) के चक्करों में फंस रहे हैं और जान जोखिम में डाल रहे हैं। भीलवाड़ा में एक साल क बीमार मासूम को बाबा ने ठीक करने के नाम पर गर्म सलाखों से दागा। जब बच्चे की जान पर बन आई तो उसे जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया। मासूम की हालत नाजुक बनी हुई है। पुलिस के अनुसार भीलवाड़ा के करेड़ा थाने क्षेत्र में स्थित उनहाली का बाड़िया गांव निवासी नारायण लोहार मासूम को एक धर्मस्थल पर ले गए। यहां बाबा मोहन सिंह ने इलाज के नाम पर बच्चे के पेट पर गर्म सलाखें दाग दीं।

-ब्यूरो, अमर उजाला 9.5.18

✶

स्वास्थ्य

रंग-बिरंगी फल-सब्जियां भगाती हैं बीमारियां

हृदय रोग के साथ-साथ बुढ़ापा रोकने में भी मिलती है मदद

नई दिल्ली : खाने की प्लेट में विभिन्न रंगों की फल और सब्जियां न केवल खाने की प्लेट को आकर्षक बनाती हैं, बल्कि इनसे शरीर को ऐसे पोषक तत्व मिलते हैं, जो कैंसर, हृदय रोग के साथ-साथ बुढ़ापा रोकने में मददगार मिलती हैं। फल और सब्जियां अपने रंगों के कारण आकर्षक का केंद्र होने के साथ उनमें कई तरह की खूबियां होती हैं, जो मनुष्य को स्वस्थ रखने में मददगार होती हैं। पादप लवक के कारण फल और सब्जी रंगीन होते हैं, जो शीर में एंटीआक्सीडेंट के रूप मं काम करते हैं। एंटीआक्सीडेंट शरीर से विषैले पदार्थो को निकालता है, जिससे अधिक संख्या में शरीर में कोशिकाओं का निर्माण होता है। इसके कारण चिकित्सक लोगों को रंगीन फल और सब्जी खाने की सलाह देते हैं। कैंसर के मरीजों को चिकित्सक लाल रंग के फल और सब्जियों को खाने की सलाह देते हैं। गहरे लाल या गुलाबी रंग के फलों एवं सब्जियों में लाइकोपीन, एलीगिक अम्ल और हैस्परीडीन नामक नामक तत्व पाया जाता है, जो विभिन्न प्रकार के कैंसर के खतरों को कम करने में मदद करता है तथा कोशिकाओं को नष्ट होने से बचाता है।

-सवेरा 22-3-18

✶

उपवास से बेहतर होगी स्टेम सेल की क्षमता

सेहत की बेहतरी में उपवास की अहम भूमिका मानी जाती है। एक नए अध्ययन का दावा है कि 24 घंटे के उपवास से स्टेम सेल की कार्यक्षमता को दुरुस्त किया जा सकता है। उम्र बढ़ने के साथ इसकी क्षमता में कमी आने लगती है। अमेरिका के मैसाच्युसेट्स इंस्टीच्यूट आफ टैक्नोलोजी (एमआइटी) के शोध ाकर्ताओं के अनुसार, चूहों पर किए गए अध्ययन में उपवास से स्टेम सेल्स की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार पाया गया। इस बदलाव से स्टेम सेल्स की पुनरुत्पति की क्षमता में भी वृद्धि पाई गई। इस रणनीति से बुजुर्ग लोगों को आंत संबंधी संक्रमणों और कीमोथेरेपी से गुजर रहे कैंसर रोगियों को उबरने में मदद मिल सकती है। एमआईटी के प्रोफेसर डेविड सेबेतिनि ने कहा कि इस अध्ययन से यह साक्ष्य मिलता है कि उपवास से आंत की स्टेम सेल्स प्रेरित हो सकती है।✶ -प्रेट्र

एस्प्रिन का सेवन त्वचा कैंसर का दोगुना खतरा

रोजाना एस्प्रिन का सेवन करने वाले लोग सावध ाान हो जाएं। एक अध्ययन में आगाह किया गया है कि इससे पुरुषों में त्वचा कैंसर के सबसे घातक प्रकार मेलेनोमा का खतरा दोगुना हो सकता है। यह निष्कर्ष करीब दो लाख रोगियों पर किए गए अध्ययन के आध ाार पर निकाला गया है। अमेरिका की नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के फीनबर्ग स्कूल आफ मेडिसिन के शोध ाकर्ताओं के अनुसार, महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में इस रोग के खतरों की प्रमुख वजहों में सुपरऑक्साइड डिसम्यूटेज और केटालेज जैसे रक्षात्मक एंजाइम की निम्न मात्रा हो सकती है। पुरुषों में इइन रक्षात्मक एंजाइम के निम्न स्तरों का नतीजा ऑक्सीडेंटिव सेल्युलर की क्षति के उच्च स्तर के तौर पर सामने आता है। इसके चलते मेलेनोमा का खतरा रहता है।✶

खोज खबर

ब्रह्मांड में प्रकाश फैलने की गुत्थी सुलझी

वाशिंगटन। वैज्ञानिकों ने हमारे ब्रह्मांड के अंधकार युग से प्रकाश युग में जाने की गुत्थी सुलझाने का दावा किया है। अमेरिका कीयूनिवर्सिटी ऑफ आयोवा के शोधकर्ताओं के अनुसार ब्रह्मांड में मौजूद आकाशगंगाओं के ब्लैक होल से अल्ट्रावायलेट किरणें निकलती हैं जो उसके बादलों जैसे घनीभूत वातावरण को चीरकर बाहर निकल जाती हैं।

बिग बैंग के तुरंत बाद ब्रह्मांड अंधेरे से आच्छादित हो गया था। इस महाविस्फोट से इतनी गर्म और घनी गैसें पैदा हुई थीं कि रोशनी उसमें जब्त हो गई थी। बिग बैंग के लगभग 100 करोड़ साल बाद ब्रह्मांड फैलना शुरू हुआ। अंधेरा भी छंटने लगा और धीरे-धीरे आकाशगंगाएं, तारे और ग्रह अस्तित्व में आए जो रोशनी देते हैं। अध्ययन के मुताबिक आकाश गंगा के केंद्र में मौजूद ब्लैक होल अपने अंदर के पदार्थ को इतनी तेजी से बाहर फेंकता है कि उनसे निकलने वाली अल्ट्रावायलेट किरणें उसके वातावरण को चीर देती हैं और रोशनी निकलने का रास्ता बनाती हैं। शोधकर्ता 60 करोड़ प्रकाश वर्ष दूर टीओअई 1247-232 नामक आकाशगंगा के निरीक्षण से इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि ब्लैक होल में बहुत अधिक चमकीले एक्स-रे किरणों के स्रोत मौजूद हैं। टेलीस्कोप का नाम भारतीय मूल के नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक सुब्रमण्यम चंद्रशेखर के नाम पर रखा गया है।✶

-एजेंसी

मकड़ी के जाले के रेशे से बनने वाला टीका कैंसर से बचाव में मददगार!

जिनेवा (भाष)। वैज्ञानिकों ने मकड़ी के जाले के रेशे से बने ऐसे माइक्रो कैप्सूल विकसित किए हैं, जो प्रतिरक्षा कोशिकाओं तक सीधे कैंसर वैक्सिन को पहुंचा सकते हैं।

कैंसर से लड़ाई के लिए शोधकर्त्ता इस तरह की वैक्सिन का इस्तेमाल करते हैं, जो रोग प्रतिरोधक प्रणाली को सक्रिय कर सके और ट्यूमर कोशिकाओं की पहचान कर उन्हें नष्ट कर सके। बहरहाल, प्रतिरक्षा तंत्र से जैसे प्रतिक्रिया की उम्मीद होती है, वैसी हमेशा नहीं मिल पाती। प्रतिरक्षा प्रणाली, और खासकर कैंसर कोशिकाओं की पहचान करने वाली टी लिम्फोसाइट कोशिकाओं पर वैक्सिन के प्रभाव को बढ़ान के लिए शोधकर्ताओं ने मकड़ी के जाले के रेशे से निम्रित माइक्रो कैप्सूल बनाए हैं जो प्रतिरक्षा कोशिकाओं के केंद्र तक सीधे वैक्सिन को पहुंचाने में सक्षम हैं।

इस किस्म के माइक्रो कैप्सूल यूनिवर्सिटी आफ फ्रीबर्ग और लुडविक मैक्जिलिमिलयान यूनिवर्सिटी, म्यूनिख के शोधकर्ताओं ने विकसित हैं। हमारी रोग-प्रतिरोधक प्रणाली में मोटे तौर पर दो तरह की कोशिकाएं होती हैं। एक बी लिम्फोसाइट जो विभिन्न संक्रमणों से लड़ाई के लिए एटीबॉडी का उत्पादन करती हैं। दूसरी कोशिकाएं हैं टी लिम्फोसाइट। कैंसर के अलावा टीबी जैसे कुछ संक्रामक रोगों के मामलों में टी लिम्फोसाइट को सक्रिय करने की जरूरत होती है।✶

बच्चों का कोना

छोड़ी गई सांस में ऑक्सीजन..



सांस द्वारा खींची गई हवा में से कुछ ऑक्सीजन हमारे खून में घुल जाती है। विभिन्न शारीरिक क्रियाएं चलाने, कोशिकाएं ऑक्सीजन का उपयोग करती हैं और कार्बन डाइऑक्साईड छोड़ती है, जो छोड़ी गई सांस में बाहर आ जाती है। इस प्रयोग में देखेंगे कि छोड़ी गई सांस में ऑक्सीजन की मात्रा कम रहती है।

जरूरी सामान : कांच का जार, टब, लचीली ट्यूब, दो प्लेट, छोटी मोमबत्ती, घड़ी (संभव हो तो स्टॉप वॉच) और एक साथी।

इस तरह से करें : ◆एक प्लेट में मोमबत्ती खड़ी करके जला लें और उसे जार से ढंक दें। कुछ समय में मोमबत्ती बुझ जाएगी। आपका साथी नोट करेगा कि ढंकने के बाद मोमबत्ती कितने समय तक जलती रही।

- अब पिछले प्रयोग की विधि से, छोड़ी गई सांस से जार को पूरा भर लें। पानी में रहते हुए ही जार का मुंह कार्ड से बंद कर दें। अब, जार में छोड़ी हुई सांस इक्ट्ठा है।
- अगली क्रियाएं काफी फुर्ती से कें। बंद जार को (कार्ड सहित) मुंह नीचे रखते हुए, जलती हुई मोमबत्ती के ऊपर लाकर, फुर्ती से कार्ड हटाकर जार से मोमबत्ती को ढंक दें। आपका साथी नोट करेगा कि कितने समय में मोमबत्ती बुझती है। संभवतः इस दफा मोमबत्ती काफी जल्दी बुझ जाएगी।

कुछ चर्चा : यह आम धारणा है कि छोड़ी गई सांस में ऑक्सीजन नहीं रहती। दरअसल, सांस द्वारा खींची हवा में से कुछ ऑक्सीजन हमारे खून में घुल जाती है और बाकी, छोड़ी गई सांस के साथ बाहर आ जाती है।✶

छोड़ी गई सांस गर्म व नम रहती है

सांस से जुड़ी छोटी-छोटी दो गतिविधियां करके देखिए।

गतिविधि-1

- इस गतिविधि के लिए आपको चाहिए एक थर्मोमीटर, एक छोटी बोतल, रबर ट्यूब और थोड़ा कपास।
- रबर ट्यूब का एक सिरा और थर्मोमीटर की घुंडी को बोतल के भीतर रखकर बोतल का मुंह कपास से बंद कर दें। इसे थोड़ी देर ऐसे ही रहने दें। अब थर्मोमीटर बोतल के भीतर की हवा का तापमान दर्शाएगा।
- अब ट्यूब का दूसरा सिरा मुंह में लेकर, धीरे-धीरे सांस बोतल में छोड़ें। ऐसा कम-से-कम दस बार करें। इस बार थर्मोमीटर आपकी सांस का तापमान दर्शाएगा।

गतिविधि-2

- मुंह के सामने शीशा पकड़कर, मुंह पूरा खोलकर शीशे पर सांस छोड़ें। आप देखेंगे कि शीशे पर जल वाष्प संघनित हो जाती है। (शीशा थोड़ा ठंडा हो तो बेहतर अवलोकन मिलेंगे)
- छोड़ी गई सांस में जल वाष्प भी रहती है।✶

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की चीका में द्विवार्षिक मीटिंग अंधविश्वास पर विभिन्न बुद्धिजीवियों ने रखे विचार

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विवार्षिक मीटिंग एवं जागरूकता सैमिनार का आयोजन चीका जिला कैथल में हुआ। इस जागरूकता सैमीनार में राज्यभर के तर्कशील प्रतिनिधियों एवं स्थानीय लोगों ने भाग लिया। सभा में सर्वप्रथम मास्टर राकेश शास्त्री ने पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति पर चिंता व्यक्त की एवं स्वयं द्वारा हजारों पेड़ों के पौधारोपण करने की बात की। जादूगर हरबिलास ने विभिन्न जादू के ट्रिक्स दिखाकर लोगों को अंधविश्वास से मुक्त का संदेश दिया। साथी रामेश्वर ने अंधविश्वास में फंसे अपने जीवन की दुर्घटनाओं का जिक्र करते हुए तर्कशील बनने की अपनी यात्रा को रेखांकित किया। सोसायटी के राज्य कार्यकारिणी सदस्य कृष्ण लाल ने मानसिक रोगों से ग्रस्त लोगों को जागरूक कैसे करें, इस विषय पर अपनी बातचीत रखी। उन्होंने भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त मनोरोगियों को वैज्ञानिक ढंग से कैसे समझाएं पर अपनी बात रखी। प्रचार सचिव सुभाष तीतरम ने लोगों का आह्वान किया कि वे वैज्ञानिक चिंतन को अपनाएं। उन्होंने अपने जीवन की व्यथा को रेखांकित किया कि कैंसर से ग्रस्त होने पर तर्कशील विचारों ने उन्हें तर्कशील बना दिया और वे डटकर संघर्ष करते, इन्हें मौजूदा मैडीकल इलाजों के साथ एवं तर्कशील विचारों से वे कामयाब रहे। तर्कशील कार्यकर्त्ता लक्ष्मी आनंद, बलवान ने भी सभा में अपने विचार रखे।

सभा के अंत में पत्रिका सम्पादक प्रो. बलवंत सिंह ने संबोधित किया और कहा कि वैज्ञानिक चिंतन के प्रचार-प्रसार में आज के समय में बेहद आवश्यकता है। देश में बढ़ती जातीयता, धर्मान्धता को केवल तर्कशील यानि वैज्ञानिक चेतना से दूर किया जा सकता है और समाज मानवतावाद की तरफ अग्रसर होगा। सभा की अध्यक्षता प्रधान गुरमीत सिंह ने की। उन्होंने अपने संबोधन में विश्व भर में चलते तर्कशील आंदोलन की जानकारी दी और लोगों को प्रेम भाव से रहने की अपील की। मंच संचालन सोसयटी सचिव डा. राजेश पेगा ने किया। सभा के आयोजन में चीका इकाई का विशेष योगदान रहा। चीका इकाई के प्रधान गुरविन्द्र सिंह गूहला ने कार्यक्रम में आए सभी साथियों का धन्यवाद किया। ✶

तर्कशील सोसायटी, पंजाब की गुरदासपुर ईकाई ने अंधविश्वासी परिवार को भयमुक्त करवाया

जम्मू कश्मीर के गांव पंजगराई के एक परिवार ने अपना नया घर बनाना शुरू किया था,

अभी नींव ही भरी थी..तभी थोड़े दिनों बाद वहां बीचों-बीच एक मिट्टी की ढेरी का उभार उठना शुरू हो गया!! परिवार अंध ाविश्वासी होने व लोगों द्वारा डर, आशंकाएं जताने से वे बाबाओं, चेलों, तांत्रिकों के चक्रों में पड़ गये,,

क्योंकि उन्होंने इस जगह को नाग सांप का वास कहना प्रचारित कर दिया था, जिसका उपाय करना अति आवश्यक बताया जाने लगा! उपायों के एवज में वे 40-50 हजार रुपए बाबाओं को लुटा बैठ, और 10 वर्ष तक वहां अपना नया मकान न बना सके!

परन्तु बाबा, तांत्रिक लोग इसे जानबूझकर एक डर, शंका स्थापित करके उनसे आर्थिक लाभ ले रहे थे। ये बाबा लोग परिवार से उस जगह की पूजा-पाठ करवाते रहे और उस मिट्टी की ढेरी को हटवाने नहीं दिया गया!!2

आखिर तर्कशील सोसाइटी पंजाब की इकाई गुरदासपुर के सदस्यों ने वहां जाकर उस लगे मिट्टी के ढेर के रहस्य का पर्दाफाश किया! दरअसल इस मिट्टी के ढेर को वहां लगी दीमक ही बढ़ा रही थी, जिससे दीमक गुमटी बन गई। तर्कशीलों ने दीमक की अच्छे से जानकारी दे कर और आगे से दीमक पूरी तरह खत्म हो जाये, इसका प्रबन्ध करने और उनका मनोबल बढ़ाया गया, डर तथा भरम दूर किया गया.. जिससे परिवारिक सदस्य मोटीवेट हुए.. और स्वंय ही कस्सी, बट्ठल उठा कर लगे मिट्टी को साफ करने...इस प्रकार वह परिवार पिछले 10 वर्ष से नये मकान बनाने में आ रही बाधा से मुक्त हो गया...!!! ✶

हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ द्वारा तर्कशील सोसाइटी कालांवाली के सहयोग से सेमिनार का आयोजन

हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ की ओर से व तर्कशील सोसाइटी कालांवाली के सहयोग से एक सेमिनार का आयोजन किया गया, ताकि लोगों जिसमें बाल मनोविज्ञान व मानसिक समस्याओं पर मुख्य वक्ता के रूप में बठिंडा से पहुंचे डॉ. राजकुमार बांसल (मनोवैज्ञानिक) ने विस्तार से अपनी बात रखी, जिसमें उन्होंने आज के समय में मनुष्य के जीवन में मनोविज्ञान को बहुत ही महत्वपूर्ण बताया और कहा कि मानसिक रूप से तन्दरुस्त मनुष्य अपनी दिनचर्या को बड़ी आसानी से व्यतीत करता है।परंतु मानसिक समस्या से ग्रस्त इंसान अपनी जिंदगी को ढोता रहता है, और आत्महत्या तक के फैसले ले लेता है। इस लिए इन विषयों पर जागरूकता जरूरी है। विभिन्न मानसिक समस्याओं को चिन्हित करते हुए उन्होंने बताया कि फोबिया डर का रोग वह समस्या है, जो बचपन से डरावने दृश्य देखने या बड़ों द्वारा जाने-अनजाने में डर, भय का वातावरण पैदा करने से उतपन्न होता है। ओसीडी वहम या शक की वह समस्या है जिससे इंसान बार-बार अपने हाथ पांव धोता है और जिस किसी वस्तु को वो हाथ लगाता है, उसे लगता है कि इसमें गन्दगी लगी होगी।परीक्षा फोबिया, शिक्षा का तनाव, आदि से बच्चे अक्सर ग्रस्त हो जाते हैं। बच्चों की इस स्थिति को मनोविज्ञान को समझने वाले बड़ी आसानी से समझ लेते हैं, और वो ऐसी स्थिति में गाइड व काउंसलिंग का सहारा लेते हैं। मनोविज्ञानी सिगमंड फ्रायड ने हिस्टीरिया को दबी हुई इच्छायों की पूर्ति बताया था। जिससे उन्हें हिस्टीरिकल दौरे पड़ने लगते हैं ये दौरे मिर्गी से अलग प्रकार के होते हैं। अवचेतन मन, अर्ध चेतन मन और चेतन मन की अवस्थाओं को बड़े सरल ढंग से समझाया गया। रोग भ्रम के बारे में उन्होंने बताया कि ऐसा इंसान ये समझने लग जाता है कि उसे फलां बीमारी हो गई है।

चार घण्टे चले इस प्रोग्राम में श्रोताओं ने काफी सवाल-जवाब किए और डा ने उनके उतर दिए। शुरू में अध्यापिका नवजोत कौर ने डाक्टर व आये हुए महमानों का स्वागत किया तथा मनोविज्ञान के विषय की हर नागरिक को इसकी जरूरत बताया। मंच संचालन मा. अजायब जलालआना ने किया तथा डा राजकुमार के व्यक्तित्व उनके कार्यो के बारे में जानकारी दी।

अंत में हरियाणा वि. अ. संघ के राज्य उप प्रधान चिरन्जी लाल ने उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया व भविष्य में अध्यापक संघ अपने सहयोगी व प्रोग्रेसिव संगठनों के साथ मिलकर ऐसे ही आयोजन लगातार करवाने की प्रतिबद्धता दोहराई। इस प्रोग्राम में वीडियो क्लिपों को प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाया गया कि ऐसी मानसिक समस्याओं से ग्रस्त लोग कैसा व्यवहार करते हैं और उनका समाधान कैसे किया जाता है। अध्यापक संघ द्वारा उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया व उन्होंने अपने द्वारा लिखी पुस्तक नशियां दी मार भेंट की गई। प्रोग्राम को सुनने देखने वालों का पूरा हाल भरा हुआ था जिन्होंने गर्मी के बावजूद लगातार चार घण्टों तक देखा।✶

तर्कशील सोसायटी द्वारा टोहाना के बचपन स्कूल में कार्यक्रम

तर्कशील सोसायटी के द्वारा टोहाना के बचपन स्कूल में सोमवार 28-5-2018 को सुबह 9 बजे से 11 बजे तक जादू के माध्याम से बच्चों को व स्कूल स्टाफ को अंधविश्वास से दूर रहने का संदेश दिया गया। जादूटोना, ज्योतिष, भूत-पिशाच और आज टैलीविजन पर चमत्कारी इलाज के गोरखधंधे के बारे अवगत कराया। तर्क द्वारा इन पाखंडियों से कैसे बचें और कैसे पर्दाफाशा करें। प्रोग्राम में फरियादसिंह, राम प्रसाद, हरजीत सिंह व शेरा एनआर आई ने भाग लिया। अंत में तर्कशील पथ पत्रिका व चुनौती पत्र भी बांटे गए।✶

केस रिपोर्ट

और उसे 'वशीकरण' से छुटकारा मिल गया

बलवंत सिंह, लैक्चरार

एक दिन मनोरोग परामर्श केंद्र में दिल्ली की एक महिला अपने साथ अपने 20-22 वर्ष के लड़के विकास को ले आई। उसने अपने बेटे विकास की परेशानियों का ब्यौरा जो मेरे सम्मुख रखा, वह इस प्रकार से था :

विकास के पिता की दिल्ली में एक करियाने की दुकान थी। अकेला लड़का होने के कारण विकास की परवरिश अत्यंत लाड़-प्यार के साथ हुई थी। ज्यादा लाडला होने के कारण विकास बचपन से ही कुछ उद्दण्ड होता चला गया थ। पढ़ाई-लिखाई में ध्यान न देने के कारण विकास ने दसवीं कक्षा भी उत्तीर्ण नहीं की थी। जब विकास ने पढ़ने-लिखने से किनारा कर लिया तो उसके माता-पिता ने उसे दुकान पर अपने साथ लगा लिया। कुछ समय तक तो वह दुकान पर ठीक तरह से कार्य करता रहा, परन्तु उसके पश्चात् वह कोई न कोई बहाना बनाकर दुकान से गैर हाजिर रहने लग गया। धीरे-धीरे उसने दुकान पर जाना ही बंद कर दिया। अगर मां-बाप उसे इस बात के लिए डांटते तो वह गुस्से में आकर अपने घर से ही गायब हो जाता और कई-कई दिनों तक घर वापिस नहीं आता था। उसकी मां इधर-उधर से उसका पता लगाकर उसकी मिन्नतें करके उसे वापिस घर लेकर आती। धीरे-धीरे उसकी आदतें और भी अधिक बिगड़ती चली गई। जब भी उसका दांव चलता तो वह घर से अथवा दुकान से पैसे चुराकर ले जाता।

उसकी मां ने उसका पीछा करते हुए यह पता लगा लिया कि विकास ज्यादा से ज्यादा तक एक तलाकशुदा महिला के साथ उसके ही कमरे में रहता है। वह महिला मूल रूप से रायगढ़ की रहने वाली थी और दिल्ली में एक प्राईवेट फर्म में एक साधारण सी नौकरी पर लगी हुई थी। पति-पत्नी का आपसी अनबन के चलते शादी के कुछ समय के पश्चात् ही तलाक हो गया था। तब से वह एक प्राईवेट फर्म में नौकरी करने लगी थी और पास ही के एक मौहल्ले में किराये पर एक कमरा लेकर रह रही थी। किसी परिस्थिति में विकास की उस महिला से जान-पहचान हो गई। धीरे-धीरे उनका मेलजोल बढ़ता चला गया और उनके संबंध और भी प्रगाढ़ होते चले गए। उस फर्म में उसकी ड्यूटी शिफ्टों में लगती थी। जब उसकी ड्यूटी रात्रि की शिफ्ट में होती और दिन में में वह अपने घर में होती थी तब विकास सारा-सारा दिन उसके कमरे में ही उसके साथ रहता था।

विकास की मां ने उसे उस महिला से दूर रहने के लिए बहुत समझाया, परन्तु विकास बिल्कुल भी नहीं माना। ज्यों-ज्यों उसके मां-बाप उसे उस महिला से मिलना-जुलना बंद करने की बात करते तो विकास उतना अधिक अपने मां-बाप का विरोधी होता चला गया। ऐसे में अंधविश्वासी होने के कारण विकास की मां के मन में शंका बैठती चली गई कि उस महिला ने विकास पर कोई जादू-टोना करवा दिया है, जिसके कारण वह अपने मां-बाप की बात नहीं मानता। आस-पड़ौस में रहने वाली अंधविश्वाी महिलाओं ने उसकी शंका को और पुख्ता कर दिया। हमारे समाज में आमतौर पर अभी भी यदि पति-पत्नी में तलाक हो जाए तो उसमें महिला का कोई दोष न भी हो तब भी ज्यादातर दोष महिला पर थोपा जाता है और तलाकशुदा औरत प्रायः आसपास के पुरुषों के लिए एक कटी पतंग की भांति ही होती है। वहीं पर तलाकशुदा महिला अंधविश्वासी महिलाओं के लिए ईर्ष्या का केंद्र एवं जादू-टोना करने करवाने वाली अथवा डायन का कार्य करने वाली के रूप में प्रसिद्ध हो जाती है। अब क्योंकि वह महिला दिल्ली से दूर रायगढ़ की रहने वाली थी और पति-पत्नी के दिल्ली में आने पर आपसी क्लेश की वजह से उनका तलाक हो गया तो आस-पड़ोस की अंधविश्वासी महिलाओं ने उसे जादू-टोना करने वाली महिला के तौर पर प्रसिद्ध कर दिया। जब विकास की मां को उन दोनों के संबंध के बारे में पता चला तो वह अत्यधिक भयभीत हो गई। अपने मन में बैठे डर के कारण वह कई तांत्रिकों, ओझाओं, ज्योतिषियों एवं बाबाओं

की शरण में गई। सभी बाबाओं ने विकास पर बहुत बड़े जादू-टोने के प्रभाव का असर बता दिया। फिर वह विकास को किसी न किसी बहाने से अपने साथ लेकर कई अन्य बाबाओं की चौकियों पर भी गई। सभी ने विकास पर तंत्र-मंत्र द्वारा किए गए वशीकरण की बात तो कह दी, परन्तु उसे उस महिला के पास जाने से कोई भी नहीं रोक सका।

अंत में उनके एक रिश्तेदार ने उनकी व्यथा सुनकर उन्हें मेरे पास भेज दिया। मैंने विकास की मां से उनकी सारी व्यथा सुनने के पश्चात् विकास के साथ एकांत में बातचीत करनी शुरू कर दी। पहले तो वह कोई सहयोग नहीं दे रहा था, परंतु जब मैंने उसके सामने जादू के एक-दो ट्रिक किए तो उससे वह प्रभावित हो गया और पूरा सहयोग देने लग गया। बातचीत में विकास ने स्वीकार किया कि पढ़ाई छोड़ने के पश्चात् जब वह अपने पिता के साथ दुकान पर जाने लग गया तो छोटी-छोटी बात पर उसका पिता उसे डांट दिया करता था। जब वह घर आता तो घर में उसकी मां भी उसे बात-बात पर खरी-खोटी सुनाती रहती थी। वह निराश होकर इधर-उधर घूमता रहता था। इसी दौरान एक दिन मैट्रो में उसकी मुलाकात उस तलाकशुदा महिला से हो गई। मैट्रो स्टेशन के समीप ही उस महिला का घर था। शिष्टाचारवश उस महिला ने विकास को अपने घर में चाय-कॉफी पीने के लिए आमंत्रित कर दिया। विकास को उसका व्यवहार अच्छा लगा और वह एकदम उसके घर जने के लिए तैयार हो गया। उसके कमरे में जाकर वे दोनों चाय पीते हुए काफी समय तक आपस में बातचीत करते रहें विकास ने उससे उसके ड्यूटी टाईम की सारी जानकारी प्राप्त कर ली। उसके पश्चात् विकास मैट्रो स्टेशन पर कभी-कभी उससे मिलने के लिए चला जाता और वह भी विकास को अपने साथ घर चलने के लिए कह देती। इस प्रकार से उनकी मुलाकातों का सिलसिला बढ़ता चला गया और दोनों में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण बढ़ता चला गया। एक दिन दोनों ने भावावेश में आकर मर्यादा की सभी सीमाएं लांघ दी। एक बार अवैध संबंध बनाने के बाद दोनों में शारीरिक आकर्षण बढ़ता चला गया और वे हर रोज मिलने लग गए। अब विकास का अपने घर से और मां-बाप से केवल आर्थिक जरूरतों को पूरा करने तक का नाता रह गया। अब वह मौका मिलते ही उस महिला के कमरे में चला जाता और उसके अपनी ड्यूटी पर जाने के समय तक उसी के साथ बातें करता रहता।

जब विकास की मां को उसके उस महिला के साथ संबंधों के बारे में पता चला, तो उसने विकास को बहुत समझाने की कोशिश की, परंतु वह नहीं माना और लगातार उसके कमरे में जाता रहा। जब आस-पड़ोस की महिलाओं से उसे पता चला कि वह औरत जादू-टोना करने में माहिर है, तो वह बहुत अधिक घबरा गई। वह कभी अकेली तो कभी किसी न किसी बहाने के साथ विकास को बाबाओं की चौकियों पर ले जाने लग गई। सभी बाबाओं ने पुच्छा में बता दिया कि विकास पर किसी औरत ने वशीकरण करवाया हुआ है। वशीकरण से छुटकारा दिलाने के नाम पर बाबाओं ने उनसे हजारों रुपए ऐंठ लिए, परन्तु विकास ने उस महिला के पास जाना नहीं छोड़ा। वशीकरण से छुटकारा दिलाने के नाम पर बाबाओं की चौकियों पर जाने का उनका सिलसिला अढ़ाई-तीन वर्ष तक चलता रहा, परन्तु कथित वशीकरण से विकास का छुटकारा नहीं हो सका।

अंत में मेरे द्वारा मनोवैज्ञानिक ढंग से उसकी काऊंसलिंग करने पर उसके मन पर सार्थक प्रभाव पड़ना शुरू हो गये। उसे मनोवैज्ञानिक प्रभाव में ले आने के पश्चात मैंने उससे सवाल किया कि 'क्या तुम उस महिला से शादी करना चाहोगे?; तो उसने घबरा कर एक दम से जवाब दिया कि ऐसा तो संभव नहीं है, क्योकि उसके घर वाले इस बात के लिए बिल्कुल भी सहमत नहीं होंगे। फिर मैंने उसे समझाया कि जो बात संभव ही नहीं है, उसके लिए अपना जीवन बर्बाद करने का औचित्य ही क्या है? ऐसे सवाल जवाब करते हुए में उसे समझाने में पूरी तरह से कामयाब हो गया कि अब तक वह गलत दिशा में जा रहा था और अब आगे से वह सही रास्ते पर चलेगा।

अगले सप्ताह जब वे मां-बेटा मेरे पास परामर्श केंद्र में आए तो वे दोनों अत्यंत प्रसन्न थे। उसकी मां तो बहुत ही खुश थी और बार-बार मेरा शुक्रिया अदा करते हुए कह रही थी कि उस दिन के बाद विकास समय पर उठता है और फिर दुकान पर जाकर दुकान का सारा काम संभालता है। वह उस महिला के पास जाना तो दूर रहा, वह तो अब उसका नाम लेने से भी चिढ़ जाता है। इस प्रकार विकास को कथित वशीकरण से छुटकारा मिल गया और अब वह पूरी जिम्मेदारी के साथ अपने घर बार का सारा कार्य संभाल रहा है। ✶

केस रिपोर्ट

घर का अमन-चैन वापिस आया

-अजायब जलालआना

सिरसा शहर में वह परिवार बड़ी खुशी और शांति से रह रहा था। अचानक कुछ ऐसी घटनाएं घटने लगीं जिससे उनकी खुशियां और शांति गायब होने लगी!

परिवार में शादी शुदा दो भाई, मां और छोटे बच्चे थे। बड़े लड़के की शादी पहले हो चुकी थी। बड़ी बहू के मायके आर्थिक रूप से कमज़ोर होने के कारण उन्होंने शादी में कोई दाज-दहेज यहां तक बैड भी नहीं दिया था।

बड़ी बहू मन लगाकर घर का पूरा काम-धंधा करती, घर के मुखिया की मौत होने के बाद दोनों भाइयों की मां उदास रहने लगी। अब उसने सोचा छोटे की शादी कर दूं। उसकी मां ने अपनी रिश्तेदारी में से ही अपने लड़के की शादी कर दी।

छोटी बहू के मायके काफी अमीर थे। उन्होंने शादी में काफी सामान दिया था। अब भी वो महंगे कपड़े, गिफ्ट बगैरा देते रहते...छोटी बहू किसी कॉलेज में अध्यापिका भी लगी हुई थी।

छोटी बहू की नजदीकी सास से ज्यादा रहने लगी। बड़े वाली ज्यादा काम करती और अपने मायके वालों का भी फिक्र करती। आखिर परिवार में भेद-भाव बढ़ने लगा।

अब घर में ऊल-जलूल हरकतें शुरू होने लगी। जिसमें बन्द अलमारियों में पैसे गायब होना, ताला लगी अलमारियों में कपड़े कट जाना या गायब होना, बाहर बैड पर बिछी चादरें आग से जल जाना, नये सिले कपड़ों पर कट लग जाना आदि...

ऐसी समस्या होने पर सर्वप्रथम घर वाले ओपरी-पराई समझकर बाबाओं, चेलों, ओझाओं, तांत्रिकों आदि की शरण में जाते है। इसी प्रकार इस परिवार ने भी किया!

समस्या का समाधान करने वाले ने कई दिनों तक घर में झाड़फूंक किया और पैसे ऐंठे...फिर बड़ी बहू को दोषी समझकर उसने एक महीने के लिए मायके भिजवा दिया था! परन्तु घटनाएं फिर भी नहीं हटीं..!

आखिर उन्हें किसी ने तर्कशीलों से केस हल करवाने की राय दी,जिसमें कालांवाली इकाई की चार सदस्यों की हमारी टीम ने इस केस को हाथ में लिया

उस टीम ने उक्त घर में जाकर सभी घटनाओं का विवरण इकट्ठा किया गया। उन्हें तरतीब में जोड़ते हुए और मौके पर उपस्थित सदस्यों को चिन्हित करते हुए. .. परिवारिक सदस्यों के साथ बारी-बारी से बात-चीत की और फिर एक निष्कर्ष निकाला गया..

दोनों लड़के सुबह से शाम तक बाहर रहते, एक सरकारी नौकरी करता दूसरा सब्जी, फल फ्रूट की दूकान चलाता।

आखिर में हमने दोनों बहुओं को एक साथ बैठाकर उन्हें बताया कि मेज पर ये पेन पड़ा है, क्या आप बिना हाथ लगाये, इसे थोड़ा इधर या उधर कर सकते हो? वो दोनों इसका कोई जवाब नहीं दे सकीं! आखिर हमने उन्हें समझाया कि जैसे यह पेन बिना किसी बाहरी फोर्स के इधर-उधर नहीं हो सकता, उसी तरह आपके घर में ताला लगी बन्द अलमारियों में से न तो कोई वस्तु कट सकती है, न ही कोई बिना इंसानी हाथ लगाये गायब हो सकती है!!

यह कोई भूत-प्रेत या किसी दैवीय शक्ति का प्रकोप नहीं है। आप अपने घर में खुश रहना चाहते हो तो परिवारिक व्यवस्था को दरुस्त कीजिये एक दूसरे को मान-सम्मान देना शुरू करें अगर आपसी कोई मतभेद या समस्या है, तो आप मिल बैठकर सुलझाएं।

सभी परिवारिक सदस्यों को इकट्ठा करके उन्हें उपरोक्त सुझाव दिए और कहा हमें सब पता चल गया है, कि इन घटनाओं को कौन अंजाम दे रहा है, परन्तु अब हम नहीं बताएंगे। अगर आइंदा आपके घर कोई घटना घटी तो सभी घटनाओं का वर्णन आपके सामने रख देंगे!! अब आप बाबाओं, चेलों को अपना समय, धन-राशि न लुटाएं। समस्या आपकी हल हो चुकी है।

इस प्रकार अन्य बहुत सारे सुझाव परिवार को देकर और उनका अमन, चौन तथा खुशियां पुनः लौटकर हम वापिस चल दिए। उसके बाद कभी भी उनके घर कोई ऐसी घटना नहीं घटी।✶

मानव ज्ञान का चरित्र और विकास

-सनी

इंसान ने अपने जीवन की संघर्षपूर्ण यात्रा की शुरुआत आज से लगभग 2,50,000 साल पहले की थी। उसने इस दौरान धरती पर हो रही अद्‌भुत गतिमान परिघटनाओं को समझा, उनमें से कुछ को अपने काबू में करना सीखा है। समुद्री यात्राओं से लेकर अन्तरिक्ष तक में कदम रखे। विश्व के अपने संवेदनों द्वारा वर्णित चित्रों को नये रूप तथा नयी परिभाषाएँ दीं। वैज्ञानिक विश्लेषण तथा कलात्मक नजरिये से उसने दुनिया को अपने रहने लायक बनाया। प्रकृति तथा सम्पूर्ण जगत के रूपों तथा उसकी खबसूरती को नियमबध्द कर, चित्रित कर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में व्याख्यायित किया है। भौतिक विश्व लगातार प्रक्रियामान है, बदल रहा है, इसके साथ ही हर क्षेत्र में हमने प्रकृति को तार्किक सूत्रों में व्याख्यायित करने की कोशिश की है। पर क्या मानव ज्ञान भी परिवर्तनशील है या यह सिर्फ हमारे तार्किक विचारों का समुच्चय है, दिव्य-प्रदत्त है जो कि अपरिवर्तनशील है? इस सवाल की चीर-फाड़ करने पर हम यहाँ दो काम कर सकेंगे, पहला हम ज्ञान-सिद्धान्त (एपिस्टेमोलजी) की अलग व्याख्याओं को रख सकते हैं, दूसरा हम ज्ञान-सिद्धान्त की तार्किक व्याख्या कर सकेंगे। ज्ञान सिद्धांत पर पहुँचने से पहले हम प्रमुख धाराओं का विश्लेषण व तुलना (comparison) करेंगे। अपनी बात को सहज, सरस और सम्प्रेषणीय बनाने के लिए हम कुछ सवालों से शुरुआत करेंगे।

मुर्गी पहले आयी या अण्डा?

''मुर्गी पहले आयी या अण्डा" यह सवाल तो आपने सुना ही होगा। फ्रांस में पुनर्जागरणकालीन महान भौतिकवादी दार्शनिक दिदेरो समकालीन भाववादी दालम्बेयर से इस पर कहते हैं कि यह सवाल पूछना खुद में बेवकूफी भरा है। वे समझाते हैं कि हम यह सवाल पूछकर इस विचार से प्रस्थान करते हैं कि भौतिक जगत अपरिवर्तनशील है। मुर्गियाँ, अण्डे, इंसान आदि सदा से मौजूद हैं। इस समय तक इस वार्तालाप के समय तक (डार्विन का विकास का सिद्धांत' आया नहीं था जिसने आगे चलकर इस सवाल के आधार को खत्म कर दिया। आगे दिदेरो कहते है कि ''अण्डा क्या है? एक संवेदनहीन पिण्ड पर यह पिण्ड विविध संघटन, संवेदन तथा जिन्दगी तक कैसे पहुँचता है?'' इस सवाल के दो जवाब हो सकते हैं। पहला, संवेदन शक्ति बाहर से उसमें (संवेदनहीन पिण्ड में) प्रवेश करे और दूसरा ''संवेदनशक्ति पदार्थ का एक सामान्य गुण है, यह उसके संघटन का परिणाम है।'' ये आधुनिक दर्शन की दो मुख्य शाखाओं के अन्तरविरोधी जवाब हैं। एक शिविर है जो मानता है कि मानव संवेदन पदार्थ के विशिष्ट संघटन का गुण है। यह भौतिकवादी शिविर है। दूसरा शिविर विचारों को पदार्थ जगत से अलग मानता है, ईश्वरपरक, भाववादी, (Metaphysical) आदि इस शिविर में आते हैं। दिदेरो भौतिकवादी शिविर के विशिष्ट दार्शनिक थे। वे भौतिक जगत को परिवर्तनशील तथा चेतना को पदार्थ का विशेष गुण मानते थे। आज यही धारा विज्ञान की धारा है। भौतिकवाद ही चेतना तथा पदार्थ के रिश्ते को, ज्ञान सिद्धान्त को समझा सकता है। अगला सवाल यह है कि चेतना तथा पदार्थ, चिन्तन और अस्तित्व, ज्ञान तथा मस्तिष्क के बीच क्या सम्बन्ध है?

क्या हम मस्तिष्क से सोचते हैं?

यह कैसा विचित्र प्रश्न है!? न्यूरोसाइंस का कोई वैज्ञानिक हमें हंसकर इसका सीधा जवाब देगा, हाँ! न्यूरोसाइंस तथा न्यूरोसाइकोलजी जैसे विषयों में प्रगति के बाद यह सवाल बड़ा बेतुका लगता है। दरअसल मानव की चेतना तथा बाह्य संसार के बीच का पुल हमारी संवेदनाएँ (इन्द्रियों द्वारा होने वाली अनुभूति) हैं और एक क्रान्तिकारी व्यवहार करने वाला दार्शनिक इसमें यह जोड़ेगा कि इन संवेदों से पैदा चेतना से प्रेरित व्यवहार के जरिये मनुष्यों की बाह्य विश्व के साथ अन्तक्रिया वह दूसरा पुल है जिससे मनुष्य का आत्मगत जगत वस्तुगत जगत से जुड़ता है। इस सच्चाई के प्रथम हिस्से को एक दूसरे छोर पर पहुँचाकर और सिर के बल खड़ा कर दार्शनिकों की एक टोली यह कहती है कि सिर्फ संवेदनाएँ ही सम्पूर्ण दुनिया में मौजूद हैं। कोई भौतिक

विश्व और चिन्तनशील मस्तिष्क मिथ्या हैं। सम्पूर्ण ज्ञान, तथा खुद सम्पूर्ण विश्व हमारी संवेदनाओं का सम्मिलन है, हमारे आस-पास मौजूद वस्तुएँ और कुछ नहीं बल्कि विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं का सम्मिलन हैं। परन्तु इन दार्शनिकों से यह सवाल पूछा जा सकता है कि ये संवेदनाएँ किस मनुष्य की हैं? क्या यह किसी एक मनुष्य की हैं? अगर यह करोड़ों मनुष्यों की हैं तब आप अपनी पाँच संवेदनाओं के सम्मिलन से इतर मौजूद करोड़ों संवेदनशील मनुष्यों की मौजूदगी मानते हैं। आप संवेदना के इतर अस्तित्व को मानते हैं। यह दर्शन का मस्तिष्कहीन सिद्धान्त है। यह दुनिया हमारी संवेदनाओं के बाहर भी मौजूद है। आँखें बन्द करने पर दुनिया खत्म नहीं होती। और अगर सम्पूर्ण विश्व सिर्फ संवेदनाओं का सम्मिलन है तो मानव के अस्तित्व में आने से पहले, मानवसंवेदन के अस्तित्व में आने से पहले क्या दुनिया मौजूद नहीं थी? भू-विज्ञान, उद्विकास के सिद्धान्त इस लक्ष्य तथा विचार के बिल्कुल उल्टे खड़े हैं। विज्ञान तथा भौतिकवाद के अनुसार पृथ्वी के विकासक्रम में विशेष परिस्थितियों में उत्पन्न हुए जैविक पदार्थ ने उद्विकास की प्रक्रिया में मानव तथा उसके मस्तिष्क को बनाया। मस्तिष्क में ही चेतना मौजूद होती है। हमारी इन्द्रियाँ बाह्य जगत के संवेदन से हमारी चेतना का विकास करती हैं। मानव मस्तिष्क भौतिक विश्व का ही हिस्सा है, जहाँ भौतिक जगत का प्रतिबिम्बन होता है। इस भौतिक विश्व में मनुष्यों का सामाजिक व्यवहार ही उनके ज्ञान का स्रोत होता है। उपरोक्त विचारधारा को सलिप्सिज्म कहा गया है। धारा मानती है कि विश्व और कुछ नहीं बल्कि संवेदनों का एक समुच्चय है। यह भौतिक तौर पर है या नहीं इसकी पुष्टि नहीं हो सकती है। जो कुछ है संवेदन है। न तो उसके आगे कुछ है और न ही उसके पहले कुछ है। लेकिन आधुनिक विज्ञान के विकास ने दिखलाया है कि मनुष्यों के आविर्भाव से पहले भी पृथ्वी थी और विकासमान थी। भौतिक जगत मनुष्य के प्रेक्षण की पैदावार नहीं है, बल्कि यह उससे स्वतन्त्र एक वस्तुगत यथार्थ है। वह अपने मस्तिष्क से जो सोचता है वह और कुछ नहीं बल्कि इसी भौतिक जगत के अंग के तौर पर अस्तित्वमान एक मनुष्य के मस्तिष्क में इन्द्रिय-संवेदों के जरिये इस भौतिक जगत के कुछ सीमित यथार्थो का प्रतिबिम्ब है।✶

अबूझ, अज्ञेय ज्ञान या व्यावहारिक ज्ञान?

ज्ञान सिद्धान्त को समझने के लिए यह तीसरा महत्त्वपूर्ण सवाल है। अठारहवीं सदी के प्रबुद्ध दार्शनिक काण्ट ने सवाल उठाया था कि हमारा सम्पूर्ण ज्ञान हमारी संवेदनाओं पर टिका हुआ है, परन्तु हमारी संवेदनाएँ उस वस्तु को पूर्णतः चित्रित नहीं करतीं, इसलिए अपूर्ण चित्रण के कारण हम विश्व के नियमों को जान ही नहीं सकते। हम अपने सामने रखी किताब के हर गुण को नहीं जान सकते इसलिए हम कुछ नहीं जान सकते। यह सम्पूर्ण विश्व अबूझ व अज्ञेय है। हम हर वस्तु को अपने सिर पर प्रश्नचिन्ह लगाकर देख सकते हैं, जवाब मिलने की गारण्टी नहीं है। पर अगर ऐसा है तो हमारा सारा इतिहास, विज्ञान, हमारी कला बांझ बन जाती है। इस अबूझ पहेली का सीधा हल है - व्यवहार। किसी भी वस्तु के बारे में हमारा ज्ञान व्यवहार में अपूर्णता से पूर्णता की तरफ बढ़ता है। काण्ट यह मानते थे कि वस्तुगत जगत है। वह किसी भाववादी के समान वस्तुगत जगत को मस्तिष्क की पैदावार नहीं मानते थे और यह समझते थे कि वस्तुगत जगत मस्तिष्क के होने न होने से स्वतन्त्र है। अब सवाल था इस वस्तुगत जगत को मस्तिष्क के जरिये समझने और उसकी अवधारणा विकसित करने का, उसके विज्ञान को समझने का। काण्ट का दर्शन यहीं आकर रुक जाता है। काण्ट के अनुसार हर प्रेक्षण अपूर्ण और त्रुटिपूर्ण है। ऐसे में, प्रेक्षण आपको वस्तुगत यथार्थ की सही-सही जानकारी और समझ कैसे दे सकता है? इसलिए आप वास्तविक विश्व को कभी जान या समझ नहीं सकते। इसी को काण्टीय अज्ञेयवाद कहा जाता है। लेकिन इस सवाल का जवाब भौतिकवाद ने व्यवहार के सिद्धान्त के जरिये दिया।

आपकी इन्द्रियाँ प्रेक्षण के जरिये आपको बता रही हैं कि सामने सेब रखा है। पर आप इस बात की पुष्टि कैसे कर सकते हैं? आप अपनी इन्द्रियों के प्रेक्षण पर तो निर्भर नहीं रह सकते! भौतिकवादी द्वन्द्ववाद इसका सीधा-सा उत्तर देता है : मान्यवर! सेब उठाइये और खा लीजिये। अज्ञात सेब ज्ञात हो जायेगा! पूरा मानवीय ज्ञान व्यवहार पर टिका है। जंगल युग में

जंगलों में लगी आग को लम्बे व्यवहार से अर्जित अनुभव और उन अनुभवों के समुच्चय के सामान्यीकरण के जरिये निकलने वाले ज्ञान के आधार पर ही काबू किया जा सका। यान्त्रिकी गति का पूर्ण इस्तेमाल करने के लिए व्यवहार में ही सीखते हुए पहिये की खोज हुई। जानवरों की ताकत का खेती में इस्तेमाल किया, यातायात के लिए भी जानवरों की शक्ति का प्रयोग किया। बैलगाड़ी की अवधारणा को ही आगे बढ़ाकर जब वाष्प ईंजन की खोज हुई तो मोटर गाड़ी भी अस्तित्व में आयी। संख्यायिकी से गणित, लॉजीकल गेट्स से लेकर कृत्रिम कोशिका मानवीय व्यवहार की ही देन हैं। व्यवहार से अर्जित अनुभवों के समुच्चय का मनुष्य अपने विवेक और तर्कशक्ति के आधार पर सामान्यीकरण करता है। यह सामान्यीकरण ही मनुष्य को इन्द्रियानुगत ज्ञान से अवधारणा तक ले जाता है। मनुष्य का ज्ञान यदि अनुभवों के समुच्चय पर ही रुक जाता है तो भी वह पूरा नहीं हो सकता। अगर वह अनुभवों की अवहेलना कर सिर्फ विवेक और तर्कशक्ति पर भरोसा करता है, तो वह किताबी, अव्यावहारिक और शेखचिल्लीनुमा होगा। अगर वह सिर्फ अनुभव पर भरोसा करता है तर्कशक्ति और अवधारणात्मक ज्ञान पर नहीं, तो वह अनुभववादी के समान एक ही चक्रीय व्यवहार के गोले में घूमता रहेगा और गतिमान विश्व के लिए जल्दी ही अप्रासंगिक बन जायेगा। इसलिए अनुभवसंगत ज्ञान से बुद्धिसंगत ज्ञान तक की यात्रा अनिवार्य है। लेकिन यहीं पर यह यात्रा खत्म नहीं होती। यदि बुद्धिसंगत ज्ञान पलटकर वापस व्यवहार में नहीं उतरता तो इस बात की कभी पुष्टि नहीं हो सकती है कि अनुभवों के समुच्चयों का जो सामान्यीकरण तर्कशक्ति और विवेक के आधार पर किया गया वह मुख्य रूप से सही है या नहीं, क्योंकि बचकाने किस्म के सामान्यीकरण भी हो सकते हैं! इसलिए ज्ञान की पूरी यात्रा व्यवहार से सिद्धान्त और फिर व्यवहार, और फिर सिद्धान्त के अन्तहीन सिलसिले के जरिये आगे बढ़ती रहती है। यही ज्ञान का द्वन्द्ववादी भौतिकवादी सिद्धान्त है।

विविध व्याख्याएँ:

चलिये ऊपर दिये गये तीनों सवालों को समेट लेते हैं। दरअसल सम्पूर्ण मानव-इतिहास के दर्शन का प्रश्न चिन्तन तथा अस्तित्व के सम्बन्ध का प्रश्न है। मूल जंगल युग के समय से मौजूद इस सवाल का जवाब चिन्तनशील आत्मा को अस्तित्वमान शरीर से पृथक कर और उसका मानवीकरण करके दिया गया। तब के अलग हुए आत्मा और शरीर आज तक व्यापक तौर पर मौजूद तमाम धार्मिक शिक्षाओं में अलग ही हैं! प्राकृतिक विज्ञान के स्पष्टीकरण के बावजूद जनता को कूपमण्डूकता में बनाये रखने के चलते यह पृथक्कीकरण नहीं मिटा है। इसके कारण की तलाश करना अलग से एक लेख की माँग करता है। इस सवाल को हम आगे जरूर उठायेंगे। प्राकृतिक शक्तियों के मानवीकरण द्वारा विभिन्न देवता पैदा किये गये, सामाजिक ढाँचे और धर्म के विकासक्रम में ये देवता अधिक लौकिक रूप ग्रहण करते गये। अमूर्तीकरण द्वारा ही ये एकत्व तक पहुँचते हैं। अल्लाह, ब्रह्मा, गॉड का आविष्कार होता है। चेतना तथा पदार्थ के बीच की रेखा को भी इसी दौरान धूमिल किया गया है। मुख्यतः तीन प्रमुख नुक्तों को समझ लेना यहाँ जरूरी है। पहला, आज दो मुख्य दार्शनिक शाखाएँ मौजूद हैं। एक पदार्थ को प्रमुख मानती है तो दूसरी चेतना को। दूसरा सवाल विश्व के नियमों को हमारी संवेदनाओं और विवेक पर रखकर परखने का है। तीसरा यह कि क्या किसी भी वस्तु को हम जान सकते हैं या नहीं? इन तीनों सवालों की हमने सिलसिलेवार व्याख्या की तथा यह दिखाया कि मानवीय चेतना पदार्थ का ही विशिष्ट गुण है तथा व्यवहार ही सम्पूर्ण ज्ञान सिद्धान्त को सत्यापित करता है। भारत में भी दर्शन के दोनों शिविरों के बीच संघर्ष शुरू से जारी रहा है। ऋग्वेद में याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी को समझाते हुए कहते हैं, 'जिस प्रकार नमक का ढेला पानी में फेंकने पर पानी में घुल जाता है और तुम उस ढेले को नहीं पकड़ सकती हो, किन्तु पानी जहाँ कहीं से भी लो वह निश्चय ही नमकीन होता है, ठीक उसी प्रकार यह महान, यह अनन्त, यह असीम, विज्ञानधन आत्मा केवल इन भूतों से ऊपर उठकर उनमें ही लीन हो जाती है। वह जब उसमें लीन हो जाती है तो संज्ञा का अस्तित्व नहीं रहता"। याज्ञवल्क्य एक महान भाववादी दार्शनिक थे। उस समय तक याज्ञवल्क्य को यह ज्ञान नहीं था कि उस नमकीन पानी को उबाल देने से हमें नमक वापस मिल जाता है, वरना वे इन भूतों से आत्मा को वापस उबालकर प्राप्त कर लेते! खैर, अब हम ज्ञान के वैज्ञानिक सिद्धान्त को पेश करेंगे।★

-क्रमश

(सत्य घटना पर आधारित)

'पत्रा का कहर'

-भीषमपाल सिंह यादव, संस्थापक-'सजग समाज'

भोजपुर के सतीशचन्द्र के यहां बड़ी चहल-पहल है। घर में उल्लास व उमंग का वातावरण है। परिवार के हर सदस्य के चेहरे पर खुशी छलक रही है। छलके भी क्यों न? आज सतीशचन्द्र के बड़े बेटे मनोज का रिश्ता जो तय हो रहा है। रिश्ते तो गत दो-तीन वर्षो से एक से बढ़ कर एक आ रहे थे किन्तु उन्हें अपनी सोच के सर्वानुकूल रिश्ता नजर नहीं आया था, इसी लिए वह टालते आ रहे थे। जगतपुर के जतिनप्रसाद जी भी अपनी बेटी का रिश्ता लेकर आए थे। उनकी बात भी पिछले काफी दिनों से चल रही थी। खूब सोचने समझने के बाद जब सतीशचन्द्र को लगा कि जतिनप्रसाद जी का रिश्ता सभी तरह हमारी अपेक्षानुकूल है तो उन्होंने हाँ कर ली थी। रिश्ता लेकर आने वालों की खूब खातिरदारी की गयी तथा सौहार्दपूर्ण वातावरण में रिश्ते से सम्बन्धित सारी रस्में पूरी करके उन्हें विदा किया गया।

सतीशचन्द्र का एक आदर्श परिवार है भारतीयता से परिपूर्ण, सीमित, सम्पन्न, शिक्षित। वह स्वयं सरकारी सेवा में रहते हुए भी सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रिय रहते हैं। घर में कुल पांच सदस्य हैं। बूढ़ी विधवा माँ जो जीवन के दसवें दशक में हैं। पत्नी साधारण घरेलू महिला हैं जिन्होंने बड़े जतन से अपनी गृहस्थी को संभाला है। दो बेटे हैं, बड़ा मनोज जो शिक्षा पूर्ण होने के बाद एक कम्पनी में अच्छे पद व पगार पर कार्यरत है। छोटा बेटा प्रमोद बीएससी प्रथम वर्ष का छात्र है। मनोज से छोटी इकलौती बेटी मालती है जिसे स्नातक कराने के बाद उसका गत वर्ष पास के ही गांव के एक प्रतिष्ठित परिवार में विवाह कर चुके हैं। नौकरी के चलते सतीशचन्द्र तथा मनोज को तो बाहर ही रहना पड़ता है। घर पर अपनी माँ के साथ रहते हुए प्रमोद पढ़ाई के साथ-साथ खेती-बाड़ी की भी देखभाल करता है। बड़े चैन से दिन कट रहे हैं किसी तरह की कोई चिन्ता नहीं है।

रिश्ता तय होने के कुछ दिनों बाद सतीशचन्द्र को सूचना मिली कि जतिनप्रसाद को पौत्ररत्न की प्राप्ति हुई है, तो उन्होंने एक सोने की जंजीर तथा वस्त्र देकर छोटे बेटे प्रमोद को जगतपुर भेजा। प्रमोद दो दिन वहाँ रहा। इस बीच उसका अपनी होने वाली भौजाई से परिचय हुआ। दोनों के दिलों में आत्मीयता की भावना उत्पन्न हुई, दोनों ने एक-दूसरे के मोबाइल फोन नम्बर लिए। नवजात शिशु के लिए सतीशचन्द्र द्वारा भेजे उपहार के बदले में जतिनप्रसाद ने भेंट स्वरूप एक अन्नी भैंस दी, जिसे उनका बेटा प्रमोद के साथ लेकर भोजपुर आया और एक दिन रुककर अपने गांव वापस चला गया। इस आदान-प्रदान के साथ ही दोनों परिवारों में एक-दूसरे के प्रति और निकटता बढ़ गई।

दीपावली के बाद के सहालगों में प्रमोद का विवाह करने के निश्चय से सतीशचन्द्र ने अपने कुल पुरोहित दीनानाथ को बुलवाया। पंडितजी के आते ही पहले तो उन्हें चाय बिस्किट के साथ नाश्ता कराया। नाश्ता समाप्त होते ही पंडितजी ने बीड़ी सुलगाई जो अभी पूरी समाप्त भी नहीं हुई थी कि भोजन का बुलावा आ गया। देशी घी में तली पूड़ियाँ, दो सब्जी, अचार, रायता, दही-बूरा और थोड़ा मिष्ठान इतना सब समाप्त करने के बाद पंडितजी ने एक लम्बी डकार ली और पूर्ण तृप्ति के साथ अपने स्थूलकाय पेट पर हाथ फिराते हुए जिजमान को आर्शीवाद दिया। खानी तम्बांकू का पाउच फाड़कर मुँह में डालकर जब पंडितजी इत्मीनान से बैठे तो सतीशचन्द्र ने एक सौ ग्यारह रूपये पंडितजी के हाथ पर रखते हुए कहा कि मनोज के विवाह की शुभ साइत निकालें महाराज। पंडितजी ने रूपयों को तीन बार पत्रा व ललाट से लगाने के बाद

पत्रा खोली, वर-कन्या के नाम पूछे, हाथ की उँगलियों पर अँगूठे के द्वारा गणना की, मीन-मेष का मंत्र बुदबुदाया और अंत में कोहनी के सहारे खड़े हाथ की मुट्ठी पर मस्तक को टिका लिया। पंडित जी की गंभीर भाव मुद्रा तथा तनी भृकुटि से उत्पन्न माँथे की रेखाओं को देखकर सतीशचन्द्र की पेशानी पर भी चिन्ता की लकीरें उभर आयीं। इतने में उत्सुकतावश सतीशचन्द्र की पत्नी भी पास आकर खड़ी हो गयीं। दोनों की प्रश्नसूचक दृष्टि से अपनी दृष्टि मिलाते हुए पंडितजी ने अफसोस भरे भाव का अभिनय करते हुए कहा कि यह विवाह हरगिज नहीं हो सकता और ऊपर को मुँह करके शून्य में ताकने लगे जैसे उन्हें जतिनप्रसाद की बेटी से मनोज का विवाह किये जाने पर होने वाला अनिष्ट स्पष्ट दिखायी दे रहा हो। स्पष्ट बताइये आखिर बात क्या है? -सतीश के ऐसा कहने पर पंडितजी ने खुलासा किया कि लड़की बिल्ली के वाहन है तथा लड़का चूहे के वाहन है। दोनों का एक साथ रहना असम्भव है। मैं इस विवाह की सहमति कभी नहीं दे सकता।

सतीश और उनकी पत्नी दोनों को सदमे में छोड़ कर पत्रा समेंटते हुए पंडितजी तो अपने घर चले गए किन्तु उसी दिन से सतीश के घर में सुख शांति की जगह दुख तथा अशांति ने ले ली। सतीश को काटो तो खून नहीं क्योंकि गर्म दूध न उगलते बन रहा न निगलते। बात इतनी आगे बढ़ चुकी है कि मना करने पर फजीहत का डर और करते हैं तो अनिष्ट की आशंका। कई दिन असमंजस की स्थिति में ही गुजर गए। इसी बीच प्रमोद ने इस रंग में भंग की सूचना मोबाइल के जरिए अपनी होने वाली भाभी को दी तो उसने कहा कि मैने तो पूरी तरह अपने को आपके परिवार का सदस्य मान लिया है, क्या आप लोग पढ़े लिखे होकर भी इन बे सिर-पैर की बातों पर यकीन करते हो, जिनका कोई प्रमाणिक आधार नहीं? भावातिरेक में प्रमोद ने भी कह दिया कि आप चिन्ता मत करो मेरे जीते जी रिश्ता नहीं लौटेगा, मैं पिताजी से बात करूंगा।

एक दिन शाम को उचित अवसर देखकर प्रमोद ने पिताजी से बात करते हुए कहा कि आप किसी प्रकार के संशय में न पड़ें। आज के वैज्ञानिक युग में जबकि आदमी के कदम चांद के बाद मंगल तक पहुँचने को हैं तब आप शिक्षित होकर भी इन पोंगा पन्थ की बातों पर विश्वास करते हैं। भैया की शादी के लिए इतना अच्छा परिवार तथा लड़की आपको अन्यत्र नहीं मिलने वाली। मैं दो दिन रुककर सब कुछ स्वंय देख कर आया हूं। मुझे वहाँ बहुत सम्मान मिला, भैंस लेकर आया, इतना सब कुछ होने के बाद रिश्ता लौटता है तो हम लोग समाज में मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। इसलिए आप मेरी बात मान लीजिए, इस रिश्ते को वापस मत कीजिए। प्रमोद की बातों ने सतीशचन्द्र को विचलित कर दिया। पिता-पुत्र दोनों को ही रातभर नींद नहीं आयी। सुबह दोनों की आँखें भारी थीं। सतीश को प्रमोद की बातों में तो दम दिखाई पड़ा किन्तु वो सन्देह के घेरे में मनोज का विवाह नहीं करना चाहते थे। अतः प्रमोद द्वारा पुनः जोर देने पर उन्होंने कहा कि बेटा! तुम तो परिवार में सबसे जूनियर हो, तुम्हारी कौन सी प्रतिष्ठा दाँव पर है? इन परिस्थितियों में अब हमारे लिए विवाह करना संभव नहीं है। चिन्ता मत करो भैया की शादी हम इससे भी अच्छे परिवार से पूरी धूम-धाम से करेंगे। इतना कहकर सतीशचन्द्र तो खेतों की तरफ चले गए, पत्नी नीचे अपने काम में मग्न थीं किन्तु प्रमोद के दिलो-दिमाग में उठा तूफान थमने का नाम नहीं ले रहा था। उसे लगा कि अब यह रिस्ता नहीं हो सकता और मैंने वचन दिया है कि अपने जीते जी ऐसा नहीं होने दूंगा। अतः अब जीना बेकार है।

भावनाओं के अतिरेक में ऐसा सोचते हुए प्रमोद ने ऊपर कमरे में जाकर गोली मार कर आत्म हत्या कर ली। फायर की आवाज सुन कर माँ ऊपर कमरे में पहुँची तो वहाँ प्रमोद को मृत देख कर चीख मारते हुए पछाड़ खा कर गिर पड़ीं। पहले फायर की आवाज फिर उनकी चीख सुनकर आस-पास के लोग दौड़े, सारे गांव में कोहराम मच गया। जिसने भी सुना भागा-भागा आया। सतीशचन्द्र भी कोलाहल सुनकर भागते हांफते घर आए, वहाँ का दृश्य देख कर कटे पेड़ की तरह गिर पड़े। खबर लगते ही रिश्तेदार एवं हितैषियों का तांता लग गया और हाहाकार के बीच प्रमोद की अंत्येष्टि की गयी। कई दिनों तक संवेदना व्यक्त करने वाले सम्बन्धियों का तांता लगा रहा।

परिवार की स्थिति तो आँधी में उखड़े पेड़

-शेष पृष्ठ 43 पर

असम में प्रस्तावित डायन प्रताड़ना निरोधक अधिनियम लागू करवाने के लिए राष्ट्रपति को पत्र लिखा

अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने देश के राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी को पत्र लिखकर असम में प्रस्तावित डायन प्रताडना निरोधक अधिनियम 2015 को अतिशीघ्र लागू करने के लिए निर्देश देने की मांग की है। ज्ञात हो डायन जैसे सामाजिक अंधविश्वास को मद्देनजर रखते हुए असम विधानसभा ने 13 अगस्त सन् 2015 को डायन प्रताडना निरोधक अधिनियम पारित किया था जो अब तक असम में लागू नहीं हो पाया है जबकि डायन के संदेह में महिला प्रताडना की घटनाएं अभी भी बदस्तूर जारी है।

डॉ. दिनेश मिश्र ने राष्ट्रपति महोदय को भेजे गये पत्र में लिखा है कि देश के अनेक राज्यों में जिसमें असम भी शामिल है, में अंधविश्वास के कारण डायन के संदेह में प्रताडना की घटनाएं घटित होती रहती हैं जिनमें अनेक महिलाओं को ना केवल शारीरिक एवं मानसिकता का शिकार होना पड़ता है बल्कि अनेक मामलों में उनकी हत्या तक हो जाती है। कुछ प्रदेशों में डायन प्रताडना के विरोध में राज्य शासन द्वारा कानून भी बनाये गये हैं एवं लागू हो चुके हैं।

अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के संबंध में जनजागरण एवं अभियान चलाने के लिए मेरा देश भर में प्रवास होता है। इस संदर्भ में मेरा असम प्रवास भी हुआ था तथा वहाँ के सामाजिक कार्यकर्ताओं महिला आयोग के पदाधिकारियों पुलिस अधिकारियों से चर्चा भी हुई थी और अभी भी होती रही है। तथा हम सभी का यह मानना है इस कानून के लागू हो जाने के बाद इस सामाजिक कुरीति को नियंत्रित करने में मदद मिल सकेगी बल्कि उन महिलाओं को न्याय मिल सकेगा जो इस प्रताडना एवं हिंसा की शिकार हो रही हैं। मैंने असम से जिलेवार डायन के संदेह में प्रताडना के आंकड़ों की जानकारी भी पुलिस विभाग से प्राप्त की है जिनमें लगभग सभी जिलों में अंधविश्वास के कारण महिलाओं के साथ अत्याचार के मामले सामने आए हैं जो चिंतनीय है। डायन जैसे सामाजिक अंधविश्वास को मद्देनजर रखते हुए असम विधानसभा ने 13 अगस्त सन् 2015 को डायन प्रताडना निरोधक अधिनियम पारित किया था जो अब तक असम में लागू नहीं हो पाया है जबकि डायन के संदेह में महिला प्रताडना की घटनाएं अभी भी लगातार हो रही हैं जो चिंता का विषय है।

ड . मिश्र ने अपने पत्र में लिखा है कि डायन के संदेह में प्रताडना के मामलों में प्रताड़ित महिलाएं निम्न मध्यम वर्ग आय, श्रमिक वर्ग, पिछड़ी जातियों तथा अनुसूचित जाति की होती हैं जिनकी सुरक्षा, बचाव और उपचार की भी कोई थोड़ी व्यवस्था नहीं हो पाती। यदि असम में यह कानून लागू हो जाता है तो ऐसी महिलाओं को न केवल न्याय, सुरक्षा एवं उपचार कराने और पुनर्वास में भी मदद मिलेगी। उन्होंने राष्ट्रपति जी से निवेदन किया है कि असम में डायन प्रताडना निरोधक अधिनियम 2015 के लागू होने के लिए आवश्यक निर्देश जारी करें।✶

-डॉ.दिनेश मिश्र, मो. 98274-00859

पृ. 42 का शेष :(पत्रा का कहर)

जैसी हो गयी है।। मनोज अपने विवाह की बात को इस हादसे का कारण मानते हुए दिन-रात दुखी है। प्रमोद की दादी की आँख से आँसू का ढरकना कभी बंद नहीं होता। माँ जिसने प्रमोद को दस मांह कोख में रखा था, जीवित लाश बन कर रह गयी है। बहन मालती भाई की याद करके सुध-बुध खो बैठती है। इस दुख से स्वयं सतीशचन्द्र का चेहरा भोर के तारे की तरह फीका पड़ गया है तथा हर समय आत्मगिलानी के बोझ से दबे हुए उस क्षण को कोसते रहते हैं, जब उनके मन में शुभ साइत निकलवाने का विचार आया। जिसके कारण उनका हँसता-खेलता परिवार उजड़ गया...।✶

चमत्कार से इलाज-कानूनन अपराध

-संतोष शर्मा, 09330451977

भारत आज शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान आदि क्षेत्रों में क्रमशः तरक्की कर रहा है। विज्ञान व स्वास्थ्य क्षेत्र में आये दिन नए-नए खोज हो रहे हैं । लोगों में जहाँ विज्ञान के प्रति उत्साह बढ़ रह है वहीं आज अनेक अन्धविश्वास जनता के मन-मस्तिष्क से मिटता जा रहा है। यह तो सिर्फ देश के एक हस्से की छवि है। दूसरे हिस्से की छवि में आज भी अनेक लोग झाड़ङ्गूंक, तंत्रमंत्र, भूत-प्रेत, ओझा- तांत्रिक, अलौकिक घटना, काल्पिनक कहानियों आदि में विश्ध्वास करते हैं और इन सब का फायदा उठाते हुए झाडफूंक, तंत्रमंत्र, ओझा-तांत्रिकों, ज्योतिषियों का ठग धंधा फलफूल रहा है।

आज भी ओझा, तांत्रिक, बाबा-माताजी झाड़फूंक व तंत्रमंत्र की मदद से किसी भी बीमारी या मानवीय समस्या का समाधान करने का दावा करते रहे हैं। जबकि तंत्रमंत, झाडफूंक, चमत्कारी शक्ति से किसी भी बीमारी से छुटकारा दिलाने का दावा करना कानूनन जुर्म है लेकिन मौजूदा कानूनों को ठेंगा दिखाते हुए औलोकिक शक्ति, तंत्रमंत्र या झाड़फूंक से किसी भी बीमारी या समस्या का समाधान करने का पाखंडी धंधा चल रहा है।

चमत्कारी चिकित्सा शिविर :

तथाकथित अलौकिक शक्तिधारी एक बाबा तो सिर्फ झाडफूंक से अंधे को रौशनी, गूंगे को बोली और बहरे को श्रवण शक्ति प्रदान करने का दावा तक करता है। सिर्फ दावा ही नहीं बल्कि बाबा का चमत्कारी चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया जाता है।

ऐसी ही एक घटना पश्चिम बंगाल के पश्चिम मिदनापुर के दासपुर थानातंर्गत जानापाड़ा की है, जहाँ बाबा पंचानन माइती अपनी अलौकिक शक्ति द्वारा अंधे, गूंगे और बहरे सहित किसी भी तरह के शारीरिक तथा मानसिक बीमारी छूटकारा दिला रहे थे। इस धंधे में बाबा को दो चेले अरूण गोस्वामी और सुकुमार सामंत मदद करते थे। इस चिकित्सा शिविर में इलाज करवाने के लिए आने वाले हर एक मरीज को 10 रूपये में एक कॉपी दी जाती थी जबकि इस कॉपी का दाम केवल एक रूपये था। उस कापी में कलम से कई श्लोक लिखीं रहती थीं। खुले मैदान में आयोजित चमत्कारी शिविर में इलाज के लिए आये अंधे, गूंगे, बहरे या अपंग जैसे विकलांगों और मरीजों को उस कापी में लिखी ईश्वर भक्ति का पाठ करवाया जाता था।

बाबा पंचानन किसी अंधे की आँखों पर हाथ फेरते हुए मंत्र पढ़कर उस पर फूंक मारते थे। इसे साथ ही बाबा उस मरीज से कहतें यदि अंधे ने ना में जवाब दिया तो उस पर बाबा फिर पहले जैसा कारनामा दोहराते हैं। इसके साथ ही बाबा यह तसल्ली देते हैं, 'मेरे पास और दो-चार बार आओ, तुमे हर चीज साफ दिखाई देगी। तू देख सकेगा।"

अब एक गूंगे की बारी। किसी गूंगे से बुलबाने के लिए बाबा उस गूंगे को जीभ हाथ से जबरन खींचकर बाहर की ओर निकलते है। उस जीभ को बाबा अपनी जीभ से स्पर्श कर गूंगे के मुंह से कुछ बुदबुदाते हैं। और फिर बाबा चीख कर गूंगे से कहता है, 'बोलो माँ, बोलो बाबा।' बाबा के इस कारनामे के बाद भी गूंगा पहले जैसा बेजबान बना इधर-उधर देखता रहता है।

बहरे के इलाज में बाबा पंचानन किसी बहरे के कानों में मंत्र पढ़कर उसमें फूंक मरता है। बाबा के शिविर में आये अन्य मरीजों का भी पंचानन इसी तरह से चमत्कारी इलाज करते थे। चमत्कारी इलाज के बाद मरीजों से कहा जाता है, 'बाबा के शिविर में आये लोग और मरीज दानपेटी में 5 से 100 रूपये का अवश्य दान करें।' कुल मिलाकर चमत्कारी इलाज और दानपूण्य के नाम पर गरीब, लाचार लोगों और मरीजों से मनमर्जी रुपये की वसूली की जाती है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की धज्जियाँ उड़ाते हुए सिर्फ तंत्रमंत्र, झाडफूंक और चमत्कार द्वारा अंधे को रौशनी, गूंगे को बोली और बहरे को सुनने की शक्ति प्रदान करने के नाम पर विकलांग लोगों के साथ गंदा मजाक किया जा रहा है। रोग से छूटकारा दिलाने के नाम पर पंचानन बाबा का पाखंडी चिकित्सा शिविर चल रहा था, वहीं आश्चर्य की बात थी कि इस पाखंडी शिविर को बंद करने में आरंभ में पुलिस व प्रशासन ने चुप्पी साध रखी थी।

अंततः 'भारतीय विज्ञान व युक्तिवादी समिति साइंस एंड रेशनालिस्ट्स एसोसिएशन आफ इंडिया की ओर से पंचानन बाबा के इस चमत्कारी चिकित्सा शिविर के खिलाफ दासपुर थाने में लिखित शिकायत कर्ज करायी गयी। जिसके आधार पर पुलिस ने गुमखपोता के निवासी बाबा पंचानन माइती और उनके 2 चेले रामदेव के निवासी अरूण गोस्वामी एवं राजनगर के निवासी सुकुमार सामंत को पहले अपने हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की। पूछताछ में ठीक-ठाक जवाब नहीं मिलने पर पुलिस ने इन तीनों को गिरफ्तार कर लिया। बाबा पंचानन सहित तीनों अभियुक्तों को पुलिस ने घाटाल अदालत में पेश किया, जहाँ से उन्हें हिरासत में भेज दिया गया। पुलिस सूत्रों के अनुसार पंचानन बाबा समेत उनके दोनों चेलों पर औषधि एवं चमत्कारी उपचार आक्षेपाई विज्ञापन अधिनियम, 1954 एवं धारा 417 के तहत मामला शुरू किया गया। अब प्रश्न है, क्या शिकायत मिलने के बाद ही पुलिस व प्रशासन पाखंडी धंधे को कानूनन बंद करने के लिए कदम उठाएगी ?

यह घटना सिर्फ एक उदाहरण मात्र है लेकिन आज भी पाखंडी बाबा, ओझा, तांत्रिक, ज्योतिषी के चंगुल में फंसकर अनेक अंधविश्वासी लोग रुपये आदि गवाने में लगे हुए हैं।

चमत्कार से इलाज करना कानूनन अपराध :

भारतीय कानून में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ताबिज, कबच, ग्रहरत्न, तंत्रमंत्र, झाड़फूंक, चमत्कार, दैवी औषधि आदि द्वारा किसी भी समस्या या बीमारी से छुटकारा दिलवाने का दावा तक करना जुर्म है। तंत्रमंत्र, चमत्कार के नाम पर आम जनता को लुटने वाले ज्योतिषी, ओझा, तांत्रिक जैसे पाखंडियों को कानून की मदद से जेल की हवा तक खिलाई जा सकती है। विडंबना यह है कि आज भी अनेक लोगों को कानून के बारे में सटीक जानकारी नहीं है लेकिन एक आम आदमी भी कानून की मदद से धोखेबाज ओझा, तांत्रिक, बाबाजी, ज्योतिषी को जेल की हवा खिला सकता है। यहाँ कुछ जरूरी कानूनों की जानकारियाँ पेश कर रहा हूँ।

औषध एवं प्रसाधन अधिनियम, 1940 :

औषधी एवं प्रसाधन अधिनियम, 1940 (ड्रग एंड क स्मेटिक एक्ट, 1940) औषधियों तथा प्रसाधनों के निर्माण, बिक्री तथा समवितरण को विनियमित करता है। इसके अनुसार कोई भी व्यक्ति या फर्म राज्य सरकार द्वारा जारी उपयुक्त लाइसेंस के बिना औषधियों का स्टाक, बिक्री या वितरण नहीं कर सकता। इस कानून के तहत किसी भी रोग से मुक्ति दिलवाने के दान पर दिये जाने वाले ताबिज, कवच, मंत्र युक्त जल आदि को औषध के रूप में स्वीकार्य होगा। बिना लाइसेंस के औषध के निर्माण, बिक्री तथा समविरतण को जुर्म माना जाएगा।

इसके अलावा, ताबिज, कबच इत्यादि द्वारा रोग मुक्ति नहीं होने पर या मरीज की मृत्यु होने पर भारतीय दंड संहिता की धारा एस-320 के तहत दोषी को सजा होगी।

ध्यान दें- वर्ष 2008 में इस कानून का संशोधन किया गया। अब से इस कानून का उल्लंघन करने वाले को 10 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास हो सकती है। साथ ही 10 लाख रुपये तक का जुर्माना होगा।

कहां दर्ज करेंगे शिकायत :

केंद्र या राज्य सरकार के औषध नियंत्रण कार्यालय में औषध से संबंधित शिकायत दर्ज की जा सकती है। यदि किसी ज्योतिषी, तांत्रिक ने किसी समस्या से छुटकारा दिलवाने के नाम पर ताबिज, कबच, ग्रहरत्न आदि दिया हो तो उसे लेकर आप औषध नियंत्रण कार्यालय में उस ज्योतिष या तांत्रिक के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी जा सकती है।

औषधी एवं चमत्कारी (आक्षेपाई विज्ञापन) अधिनियम, 1954 :

औषधि और चमत्कारिक उपचार (आक्षेपणीय विज्ञापन) अधिनियम, 1954 (ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज आबजेक्शनबर एडवर्टाइजमेंट (एक्ट, 1954)।:

आज भी जहां-तहां नीम-हकीमों, तांत्रिकों, रहस्यमयी तरीकों से इलाज करने तथा जिन रोगों का कोई इलाज न भी हो उन्हें चमत्कारिक तरीके से ठीक कर देने वाले लोगों व इन पर विश्ध्वास करने वालों की भारी तादाद है। अधिनियम के तहत तंत्र-मंत्र, गंडे, ताबीज आदि तरीकों के उपयोग चमत्कारिक रूप से रोगों के उपचार या निदान आदि का दावा करने वाले विज्ञापन निषेधित हैं। इसके अनुसार ऐसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भ्रमित करने वाले विज्ञापन दण्डनीय अपराध हैं जिनके प्रकाशन के लिये विज्ञापन प्रकाशित व प्रसारित करने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त समाचार पत्र या पत्रिका आदि का प्रकाशक व मुद्रक भी दोषी माना जाता है।

इस अधिनियम के अनुसार पहली बार ऐसा अपराध किये जाने पर 6 माह के कारावास अथवा जुर्माने या दोनों प्रकार से दंडित किये जाने का प्रावधान है जबकि इसकी पुनरावृत्ति करने पर 1 वर्ष के कारावास अथवा जुर्माने या दोनों से दंडित किये जाने की व्यवस्था है। यहाँ यह तथ्य ध्यान देने योग्य है।

ध्यान दें, वर्ष 1963 में इस कानून में संशोधन कर धारा -9ए जोड़ी गयी। अब से इस कानून का उल्लंघन करना गैर-जमानती माना चाएगा।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 :

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत कोई व्यक्ति जो अपने उपयोग के लिये कोई भी सामान अथवा सेवाएँ खरीदता है वह उपभोक्ता यानी क्रेता है। जब आप किसी ज्योतिषी, तांत्रिक या बाबा से कोई ताबिज, कबज, ग्रहरत्न खरीदते हैं तो और इससे यदि आपको कोई लाभ नहीं मिलता है तो आप एक उपभोक्ता के रूप में विक्रेता ज्योतिषी, तांत्रिक या बाबा के खिलाफ उपभोक्ता अदालत में मामला दायर कर सकते हैं।

इसके अलावा यदि किसी कानून का उल्लंघन करते हुये जीवन तथा सुरक्षा के लिये जोखिम पैदा करने वाला सामान जनता को बेचा जा रहा है तो आप शिकायत दर्ज करवा सकते हैं।

भारतीय दंड संहिता की धारा 420 :

भारतीय दंड संहिता की धारा 420 के तहत किसी को व्यक्ति को कपट पूर्वक या बेईमानी से उत्प्रेरित कर आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, संपत्ति या ख्याति संबंधी क्षति पहुंचाना शामिल है। यह एक दंडनीय अपराध है। इसके तहत 7 साल तक के कारावास की सजा का प्रावधान है। धर्म, आस्था, ईश्ध्वर के नाम पर ज्योतिषी, तांत्रिक जैसे पाखंडों का सिर्फ और सिर्फ एक ही काम है, अंधविश्वास के दलदल में डूबे लोगों को तन, मन और धन से लुटना। बाबा, ओझा, तांत्रिक सिर्फ और सिर्फ जालसाज हैं। ऐसे जालसाज से ठगी का शिकार बने लोग धारा 420 के तहत शिकायत दर्ज करा सकता है।

चमत्कार को 25 लाख रुपये की चुनौती :

युक्तिवादी समिति के अध्यक्ष प्रबीर घोष ने कहा," अंधविश्ध्वास के जाल में अनपढ़ ही नहीं बल्कि पढ़े-लिखे लोग भी फंसे हुए हैं। अंधविश्वास देश के विकाश में बरा रूकावट है। इसके चक्कर में लोग आर्थिक एवं सामाजिक शोषण का शिकार हो रहे हैं।

हम 21 वीं सदी में जी रहे हैं। यह युग विज्ञान का है, लेकिन विभिन्न टीवी चौनलों पर कवच, सिद्ध माला, सिद्ध अंगूठी, धन प्राप्ति यंत्रों का व्यापक अन्धविश्वास के नाम पर पाखंडी ओझा, तांत्रिक, बाबाओं, ज्योतिषियों का धंधा चल रहा है। जिसका खतरनाक प्रभाव देश के भविष्य करोड़ों बच्चों पर पड़ रहा है।

टोटका, तंत्रमंत्र आदि कमजोर दिमाग की उपज है। इंसान जब विभिन्न रोग से बीमार होते है, तब उनके परिवार के लोगों की मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहती है क्योंकि वे अपने परिजनों को स्वस्थ करने के लिए एक जगह से दूसरी जगह ले ले जाकर परेशान हो जाता हैं। वे चाहते हैं कि किसी भी कीमत पर उनका परिजन स्वस्थ्य हो जाए। इसलिए वे इसी तरह के धोखेबाज बाबाओं के चंगुल

में फंस जाते हैं।"

घोष ने कहा, ''मैंने और मेरी समिति ने कई सौ बाबाओं, ओझाओं, ज्योतिषियों की पोल खोली है, जबकि कईयों बाबाओं को जेल की हवा तक खिलाई गयी है'।

चमत्कार शक्ति का दवा करने वालों को 25 लाख रुपये की चुनौती देते हुए प्रबीर घोष ने कहा कि यदि कोई भी ओझा, तांत्रिक, बाबा, ज्योतिषी यदि उनके सामने चमत्कारी शक्ति का प्रमाण पेश करने में सक्षम होता है तो वे उन्हें 25 लाख रुपये देंगे और समिति का कामकाज बंद कर दिया जाएगा।'

उन्होंने कहा, 'मेरा आम लोगों को यह संदेश देना है कि वे चमत्कार में विश्वास नहीं करें। चमत्कार के नाम पर किसी भी समस्या से मुक्ति दिलवाने का दावा करने वाले बाबा, ओझा, तांत्रिक सिर्फ और सिर्फ जालसाज हैं। ऐसे जालसाजों से दूर रहें। यदि आप को कहीं पर चमत्कार के नाम पर किसी बाबा का धंधा चलता हुआ दिख जाए तो उसके खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराएं। इस काम में युक्तिवादी समिति आपके साथ है।' ✶

राजस्थान में डायन के संदेह में 95 मामले

– डॉ. दिनेश मिश्र

(सूचना के अधिकार के अधिनियम के अन्तर्गत मिली जानकारी)

राजस्थान में डायन के संदेह में पिछले 6 वर्षो में प्रताड़ना के 95 मामले सामने आये हैं। डायन प्रताडना के मामले को फास्ट ट्रेक कोर्ट में चलाये जाने की मांग की तथा प्रताड़ित महिलाओं को मुआवजा व पुनर्वास के लिए योजना बनाये जाने की मांग की है।

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने बताया बताया उन्होंने सूचना के अधिकार के अधिनियम के अंतर्गत राजस्थान शासन से जानकारी मांगी थी जिसमें उन्हें गृह विभाग, राजस्थान से जानकारी प्राप्त हुई है कि सन् 2011 से सन् 2016 तक राजस्थान में 95 महिलाओं की डायन के संदेह में प्रताडना हुई है, जो कि 40 जिलों के हैं। इनमें से सर्वाधिक मामले भीलवाड़ा, अजमेर, डूंगरपुर, बूँदी, उदयपुर, चित्तौडगढ़ के हैं। कुछ मामलों में तो अब तक न ही चालान पेश हो पाया है और न ही एफआईआर तक दर्ज हुई है, जिसके कारण न ही उन महिलाओं को मुआवजा मिल पाया है न ही पुनर्वास हो पाया है तथा न ही कोई अन्य मदद मिल पायी है, जिससे वे गाँवों में बहिष्कृत जीवन जीने को मजबूर हैं।

डायन प्रताड़ना के कारण ग्रामीण अँचल में गरीब, निराश्रित, विधवा महिलाओं को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। प्रताड़ित महिलाओं के हित व जीवन-यापन के लिए राजस्थान सरकार को पत्र लिखकर मांग की है कि उन सभी मामलों में :-

1. डायन प्रताडना के प्रकरणों में राज्य के विशेष कानून के अनुसार कार्रवाई हो।

2. पीड़ित महिलाओं के पुनर्वास हेतु आर्थिक मदद दी जाए।

3. राज्य शासन द्वारा आसानी से पीड़ित महिलाओं तथा लम्बित प्रकरणों की सूची तैयार कराई जा सकती है, जिसके अनुसार प्रताड़ित महिलाओं को कम से कम 25 हजार रूपए उनके जीवन-यापन पुनर्वास हेतु दिया जा सकता है।

4. आरोपियों को सजा दिलाने के लिए डायन प्रत निवारण हो।

5. डायन प्रताड़ित महिला के संरक्षण हेतु स्थानीय पुलिस थाने चौकी को निर्दिष्ट किया जा सकता है, कि वे प्रताडना की पुनरावृत्ति रोकने एवं महिला एवं उसके परिवार के पुनर्वास में मदद करें तथा जनजागरण अभियान चलाया जावे ताकि इस सामाजिक कुरीति का समाज से निर्मूलन किया जावे। इस अभियान हेतु अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति सहयोग करने तैयार है।

-98274-00859

✶

भिक्षावृत्ति : एक सामाजिक बुराई

–आर.पी. गांधी, 93154-46140

दुनिया के सभी धर्म भिक्षा देने को एक श्रेष्ठ कार्य मानते हैं। हिन्दू धर्म में भिक्षा को महान/दान माना जाता है। यहां तक कि सूर्य-ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के विशेष अवसरों पर भीख मांगने और देने को शुभ समझा जाता है। भीख देकर लोग समझते हैं कि ग्रहण से होने वाले प्रकोप से उनका बचाव हो गया है। बेटी की शादी के अवसर पर कन्यादान नाम से मां-बाप की ओर से एक रस्म की जाती है, जिसे पुण्य का नाम दिया जाता है। जिन मां-बाप के यहां बेटी नहीं होती, वे कन्यादान से वंचित रहने की वजह से अपने-आप को अभागे समझते हैं! हिन्दी की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस रूढ़िवादी सोच को चुनौती दी। उन्होंने कहा था 'मैं अपनी बेटी को दान नहीं करूंगी। यह कोई निर्जीव वस्तु नहीं है और न ही पशु-पक्षी। अतः कन्यादान जैसी कोई रस्म नहीं करूंगी। मैं वर और वधु को एक-दूसरे का पूरक मानती हूं। अतः इसमें दान कहां से आ गया।' इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिंग भेद को समाप्त कर समाज को लिंग समानता का पाठ पढ़ाया। स्त्री-समाज को उनपकी यह महान देन है।

इस्लाम धर्म में ज़कात (दान) को शरीअत का हिस्सा माना जाता है। हर मुसलमान को अपनी सम्पत्ति एवं आमदनी का एक निश्चित् हिस्सा ज़कात की शक्ल में देना होता है। इस्लाम धर्म में इस पर दृढ़ता से पालन करने की बात कही गई है। सिख धर्म में दसौंध के नाम से अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा दान के लिए निकालना पड़ता है। सिख धर्म में इसको बहुत बड़ा पुण्य माना गया है। गुरुद्वारों में फ्री में खाना खिलाने का भी प्रबंध होता है, जिसे लंगर का नाम दिया जाता है और यह सिख धर्म का प्रमुख अंग है। इसे भी पुण्य कर्म समझा जाता है। लंगर खिलाना और लंगर छकना दोनों को धार्मिक कृत्य माना गया है। इसको प्रसाद छकना भी कहा जाता है।

ईसाई और यहूदी मत में भी दान का बहुत महत्व है। इन धर्मों के लोग गरीबों को दान देकर अपने को धन्य मानते हैं। इन्हीं धार्मिक कारणों के कारण धर्मास्थलों पर भिखारियों की भीड़ दिखाई देती है। लोग इनको भीख देकर अपने को पुण्य समझने लगते हैं, लेकिन ऐसा करके समाज में एक बुराई पनपती है। कुछ समर्थ लोग जो काम कर सकते हैं, वे भी निकम्मे बन जाते हैं और भीख मांगने को ही अपना पेशा बना लेते हैं। अच्छी भीख मिलने पर कई बार ये नशे करने लगते हैं और नशों के आदी हो जाते हैं। कुछ धार्मिक स्थानों जैसे कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि में बहुत संख्या में भिखारियों को देखा जा सकता है। समर्थ लोगों द्वारा भी भीख मांगना एक सामाजिक बुराई को जन्म देना है। धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में भी काफी संख्या में भिखारियों को देखा जा सकता हैं, जो देश के भिन्न-भिन्न मार्गो से यहां आकर भीख मांगते हैं। देखने में यह बड़ा विचित्र लगता है।

कुछ लोग भिक्षावृत्ति को अपना पैतृक पेशा बना लेते हैं। वे इसके लिए कई बार अजीबोगरीब कार्य करते हैं। बनावटी तौर पर टांग का निचला भाग ऊपर बांध कर लंगड़ा होने का नाटक किया जाता है। कई बार आंखों से अन्धा होने का नाटक किया जाता है। यह सब इसलिए किया जाता है ताकि लोगों की हमदर्दी प्राप्त की जा सकते और तरस खा कर उनको अधिक से अधिक दान दें। इस प्रकार लोगों की भावनाओ का दोहन किया जाता है। इसी प्रकार कुछ लोग छोटे बच्चों का अपहरण कर उनको फटे हाल में भीख मांगने के धंधे में धकेल देते हैं। शाम को उनसे प्राप्त पैसे छीन लेते हें और उनको जिन्दा रहने के लिए कुछ भोजन दे देते हैं।

इस प्रकार इस धंधे में छोटे बच्चों का भी शोषण किया जाता है। भीख मांगने के लिए कई बार ये लोग अपने-आप को बनावटी कोढ़ी बना लेते हैं और शरीर पर पट्टियां बांध कर अपने को कोढ़ी दिखाते हैं, ताकि देखने वाले तरस खाकर भिक्षा दें। ऐसे ही एक व्यक्ति को लेखक ने दिन के समय कोढ़ी के रूप में देखा और रात को ठीक-ठाक चल रहा था। इससे उसकी असलियत सामने आ गई।

समाज का एक और वर्ग जिन्हें हिजड़े कहा जात है, इस धंधे से जुड़े हैं। ये इसे अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं और ब्याह-शादी, बच्चा पैदा होने पर मोटी रकम दान के रूप में मांगते हैं, जिसे ये बधाई का नाम देते हैं। न देने पर बदसलूकी पर उतर आते हैं और कई बार झगड़े पर भी उतारू हो जते हैं।

भिक्षावृत्ति किसी भी समाज अथवा देश के लिए एक बुराई है। यह उस देश की हीनता का प्रतीक है। इस बुराई को हर अवस्था में रोका जाना चाहिए। इसके लिए सरकार और देश के नागरिकों को सामूहिक रूप में प्रयास करने चाहिएं। हर समर्थ व्यक्ति को रोजगार उपलब्ध कराए, ताकि वह सम्मान के साथ अपना पेट भर सके और एक सम्मानजनक जीवन जी सके, ताकि उसको भीख मांगने की जरूरत ही न पड़े। इसके अतिरिक्त जो लोग अशक्त हैं, बेबस हैं, लाचार हैं, रोगी हैं, उनके लिए सरकार आश्रय स्थल बनाए। उनके भोजन और उपचार का उचित प्रबंध करे, ताकि वे भी एक अच्छा जीवन जी सकें।

सामान्य नागरिकों का भी कर्त्तव्य बनता है कि वे इस बुराई को हतोत्साहित करें। समर्थ व्यक्ति को भीख न दें और अशक्त को सरकार द्वारा बनाए गए आश्रय स्थल तक पहुंचाएं। भिक्षावृत्ति को सरकार गैर कानूनी घोषित करे और अशक्तों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को ईमानदारी से निभाए। भिखारी रहित समाज एक अच्छा स्वस्थ समाज होगा। इससे देश का स्वाभिमान बढ़ेगा और देश विकास के मार्ग पर अग्रसर होगा।

✶

शेष पृष्ठ 7 का शेष..(निरीश्वरवाद..)

के अनुसार 'मानववाद मानव जाति के अपने ही प्रयत्नों से विकास के समक्ष धर्म का अस्वीकार है।' ओर चेम्बर्स डिक्शनरी 1995 के अनुसार 'मानववाद, वह सिद्धांत है, जो मनुष्य के हितों और मनुष्य के मस्तिष्क को सर्वोपरि मानता है और ईश्वर आदि के अति प्राकृतिक विश्वास को नकारता है।

विश्व के मानववादियों के परिसंघ, अंतर्राष्ट्रीय मानववादी एवं नैतिक संघ के अनुसार 'मानवाद एक जनतांत्रिक और नैतिक जीवन अवस्थिति है, जो यह मानती है कि मानव जाति का यह अधिकार भी है और दायित्व भी कि वह अपने जीवन को वांछित आकार और अर्थ दे। यह मानवीय और प्राकृतिक मूल्यो पर आधारित नीति द्वारा विवेक और मुक्त जांच के माध्यम से एक वास्तव में मानवीय समाज की रचना करना चाहता है। यह ईश्वरवादी नहीं है और किसी अति प्राकृतिक दृष्टि को स्वीकार नहीं करता।

इस विचार-विमर्श से स्पष्ट है कि अपने समकालीन अर्थ में मानववाद विवेकवादी ही नहीं, धर्मनिरपेक्ष और निरीश्वरवादी भी है। अर्थात् उसमें नवजागरण से उद्धत विवेकवाद, धर्मनिरपेक्ष, इहलोकवाद और मानववाद की तीनों धाराएं एकमेक हो गई हैं। वह अधिकतम संभव जनतंत्र, मानवाधिकारों की रक्षा और मनुष्य मात्र की स्वतंत्रता, समता और भाईचारे के लिए संघर्ष करता है। वह सभी अंधविश्वासों और सभी धर्मो की रूढ़ियों का विरोधी है। वह ईशनिन्दा-विरोधी सभी देशों के कालातीत और मूर्खतापूर्ण कानूनों को समाप्त करने के लिए संघर्ष करता है, जो व्यक्ति की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित करते हैं।

2094, शोभा डहलिया, बेलन्दूर, बैंगलौर
मोः 90193-03518

✶

स्वामी सत्य नन्दन मानवतावादी का निधन

फेडरेशन ऑफ इंडियन रैशनलिस्ट एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य एवं मानवतावादी विश्व संस्थान के संस्थापक, तर्कशील चिन्तक सत्य नन्दन मानवतावादी अब इस दुनिया में नहीं रहे। दिनांक 26-6-2018 को शाम 3:45 बजे उन्होंने आखरी सांसें ली और दुनिया को अलविदा कह दिया। मधुमेह और गंभीर संक्रमण के चलते उन्हें स्थानीय लोक नायक जय प्रकाश सिविल हस्पताल कुरुक्षेत्र में दाखिल करवाया गया था, जहां से उन्हें पी.जी.आई. चंडीगढ़ के लिए रेफर कर दिया गया। बीच रास्ते मे ही तकलीफ बढ़ जाने के कारण वे जिंदगी की जंग हार गए और हमेशा के लिए अपने प्रसंशकों, प्रियजनों को बिलखते हुये छोड़ कर चले गए। दिनांक 27-6-2018 को संस्था के प्रांगण में उन्हें समाधि दी गई और उनके चाहने वालों ने उन्हें नम आंखों से भाव-भीनी अंतिम विदाई दी। अपने आदर्शो व निष्कर्षो को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने शिक्षा और सुधार के माध्यम से समाज में अलग तरह के प्रयोग किए। पूरे भारतवर्ष में कश्मीर से कन्याकुमारी तक दो बार पद यात्रा की। पिछले 45 वर्षो से वे राजघाट कुरुक्षेत्र में मानवतावादी विश्व संस्थान में समस्या रहित मानव जीवन और उदात्त विश्व व्यवस्था के ठोस उपायों पर निरंतर काम कर रहे थे।

तर्कशील सोसायटी उनके निधन पर शोक व्यक्त करती है और मानवतावादी परिवार को सांत्वना भेजती है।✶

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

रागणी

अपणे हाथ कलम पकड़ो

-रामेश्वर दास 'गुप्त'

चालाक आदमी फैदा ठा रे, इब माणस की कमजोरी का।
घर की खाण्ड किरकली लागै, कहैं गुड़ मीठा चोरी का।

भगत और भगवान के बीच, दलाल बैठगे आ कै,
एक-दूसरे की थाली पै, ये राखैं नजर जमा कै,
सीधी-सच्ची बात करैं ना, ये करते बात घुमा कै,
झोटे जैसे पले पड़े ये, सब माल मुफ्त का खा कै,
म्हारी जेब पै बोझ डालते, अपणी जीब चटोरी का।

हम बैठे भगवान भरोसे, ये कह रे हम दुख-दर्द हरैं,
ये मंदिर की ईंट चुरा कै, अपणे घर की नींव धरैं,
सारा बेच चढ़ावा खाज्यां, टीका ला कै ढौंग करैं,
आप स्याणे हम पागल बणाए, पाप करण तै नहीं डरैं,
म्हारी राह म्हं कांटे बोए, ये फैदा ठा रे घैरी का।

राम के खातिर खीलां फीकी, ये काजू-पिस्ता खावैं,
भगवान के ऊपर पंखा कोनी, ये ए.सी. म्हं रास रचावैं,
मुर्गे काट चढ़ा पतीली, ये निश दिन छौंक लगावैं,
रिश्वत ले कै राम जी की, यां भक्तों तै भेंट करावैं,
बड़े-बड़े गपौड़ रचैं, ये करते काम टपौरी का।

ये व्रत करा रे धक्के तै, धर्म का डर बिठा कै,
खुद पड़े-पड़े हुक्म चलावैं, म्हारी राखें रेल बणा कै,
टीके ला कै पोथी बांचें, कई रखैं झूठे ढौंग रचा कै,
'रामेश्वर' सब अंधेरा मेटो, थम तर्क के दीप जला कै,
अपने हाथ कलम पकड़ो, लिखो अंत 'स्टोरी' का।

आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ

तर्कशील साथी सुभाष तितरम, गांव तितरम (कैथल) निवासी की ओर से उनकी विभागीय पदोन्नति 'ए.एस.आई. ' बन जाने पर पर तर्कशील सोसायटी हरियाणा को 1000/- (एक हजार रूपये) का सहयोग प्राप्त हुआ है। सोसायटी उनका हार्दिक धन्यवाद करती है।

सच कभी ना डरे, ना हारे राह हो चाहे मुसीबत भरा।
सत्ता सदा दबाना चाहे, सच का सूरज कभी न हारा।।

धमकियां और चुनोतियाँ : बुलन्द आवाज पत्रकार रवीश



रवीश कुमार

देश भर में प्रेस मुख्यत इलैक्ट्रानिक मीडिया ने सत्ता के पक्ष में झुक कर गोदी मीडिया बन जाने के दौर में एनडीटीवी के निरपेक्ष, निडर, लोक, हितैषी, खोजी पत्रकार रवीश कुमार द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले कार्यक्रम प्राइम टाईम में राज सत्ता के साम्प्रादयिक तत्वों की मानसिकता को जग जाहिर करने और शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा लोक मुद्दों को उभारने के कारण जान से मारने की धमकियां लगातार मिलने पर भी प्रगतिशील, लोक हितैषी बनना एक चुनौती है। स्पष्ट, निडर पत्रकारी का चिन्ह बने रवीश कुमार ने शोशल मीडिया पर मिली धमकियों को जग जाहिर करके उनके कुत्सित प्रयासें को नंगा किया है और फासीवादियों को फटकारा है।

भारत की बेटी राणा आयुब के हौंसले को सलाम



राणा आयुब

गुजरात दंगों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की भूमिका को अपनी जान जोखिम में डाल कर गुजरात फाईल नाम की किताब देश दुनियां के समाने लाने वाली पत्रकार राणा आयुब साम्प्रदायिक और फासीवादियों के निशाने पर बनी हुई है, पिछले दिनों उन्हें मिली धमकियों के साथ ही सोशल मीडिया पर आडिट की गई वीडियोज डाल कर उनको बदनाम करने की कोशिश की गई, परन्तु भारत की इस बहादुर बेटी ने अपने सच्चाई के मार्ग को नहीं त्यागा। इस निडर महिला पत्रकार के साथ इस तरह का व्यवहार बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ का प्रचार करने वालों के लिए शर्मनाक है।

साम्प्रदायिक शक्तियों द्वारा सत्ता की ताकत में बुद्धिजीवियों और पत्रकारों पर किए जा रहे हमलों का माहौल बेहद खतरनाक बनता जा रहा है। तर्कशील सोसायटी निडर पत्रकारों, बुद्धिजीवियों को सलाम करती है और उनके साथ खडे होने की वचनबद्धता दोहराती है।

डा. नरेन्द्र दाभोलकर की याद: वैज्ञानिक चेतना को समर्पित

11 से 18 अगस्त तक सप्ताह भर तर्कशील इकाईयां तर्कशील मैगजीन के नए पाठक बनाने और चंदे लगाने की मुहिम चलाएगी।

19 अगस्त 2018 को डा. नरेन्द्र दाभोलकर की स्मृति में तर्कशील भवन, बरनाला में राज्य स्तरीय समारोह होगा। सेमिनार में विचारों की आजादी और चुनोतियों विषय पर होने वाली चर्चा में डा. परमिंदर, प्रभारी लोकतांत्रित अधिकार सभा मुख्य वक्ता होंगे।

इस समारोह में चेतना परख परीक्षा 2018 के राज्य भर के प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा।

तर्कशील लहर के देश विदेश में बढ़ते कदमों की आहट



नार्थ अमेरकिन तर्कशील सोसायटी आफ ओंटारियो, कनेडा द्वारा लोक कला मंच मुलांपुर (पंजाब) के सहयोग से दिखाई फिलम चम्म के समय उपस्थति दर्शक



अंधश्रद्धा निरमूलन समिती, महाराष्ट्र की मराठी पत्रिका अनिस वारता पत्र के संपादक राहुल थोरात के पंजाब आगमन पर विरसा विहार, अमृतसर में उनके स्वागत का दृश्य



तर्कशील सभा में निरमल सिंह संघा, यूके का सम्मान करते हुए राज्य प्रभारी



तर्कशील सोसायटी पंजाब की राज्य स्तरीय सभा में इकाईयों के प्रतिनिधि एवं दर्शक

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।